ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - ११ | महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र | जून (प्रथम) २०१३

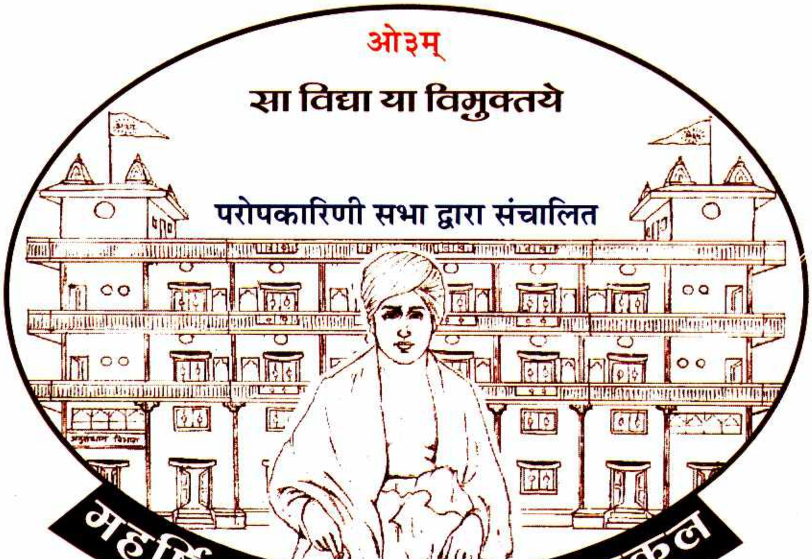

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक यन्त्रालय व ऋषि उद्यान का प्रतीक चिह्न

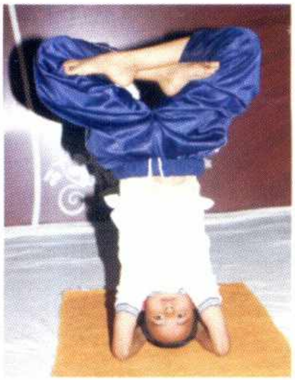

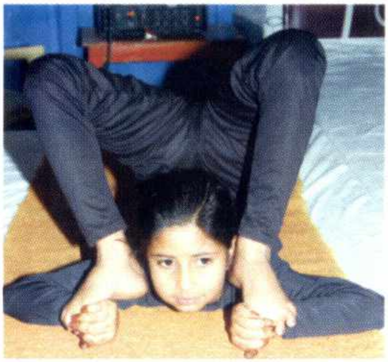

परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में आर्यवीर दल, अजमेर द्वारा आयोजित राज्य-स्तरीय **आसन प्रतियोगिता**, दिनांक : २०, २१ अप्रैल, २०१३ (ऋषि उद्यान, अजमेर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ अंक : ११

दयानन्दाब्द: १८९

विक्रम संवत्: ज्येष्ठ कृष्ण, २०७०

कलि संवत्: ५११४

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक

प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जून प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. करौंथे काण्ड का अपराधी रामपाल...	सम्पादकीय	०४
२. साधना-पथ	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
४. श्री दिनकर जी प्रकाश में भटके	स्वा. विवेकानन्द	१३
५. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का........	डॉ. सुजाता	१७
६. आर्यसमाज में अन्धविश्वास पनपने.....	पं. बिहारीलाल	१८
७ नैष्ठिक अग्निव्रत को महर्षि दयानन्द.....	सत्यजित्	२२
८. क्षणभंगुर-जीवन	सुभाष लखोटिया	२७
९. आत्म-निरीक्षण	रमेश मुनि	२९
१०. मेरी उन्नति का पहला कदम	नारायण प्रसाद	३०
११. पुस्तक-परिचय		३१
१२. पाठकों की प्रतिक्रिया		३४
१३. संस्था-समाचार		३६
१४. आर्यजगत् के समाचार		३८

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

करौंथे काण्ड का अपराधी रामपाल दास

एक व्यक्ति सरकारी सेवा से भ्रष्टाचार के कारण निकाले जाने का निर्णय हो जाने पर त्यागपत्र देकर बच जाता है। थोड़े दिन में वह सन्त बनकर चेले बना लेता है। चेलों के माध्यम से उसके पास सम्पत्ति का ढेर लग जाता है। भक्तों अनुयायियों की संख्या में वृद्धि होती है। क्या उसके पीछे उसका सन्तपना कारण है। सन्त के पीछे भक्तों की भीड़ तो उसके सन्तपने पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाती है। भीड़ में प्रशासन के अधिकारी, बड़े-बड़े धनी, नेता लोग जब भीड़ की पहचान बनते हैं तब सन्त का सम्बन्ध धर्म से न होकर अर्थ से होता है। ऐसे सन्तों की सत्ता में पहुँच और आर्थिक सम्पन्नता उन्हें, सन्त, महात्मा, भगवान् बना देती है। जो व्यक्ति अर्थ में रुचि रखता है उसके पास अर्थोपार्जन के अनुचित साधन एकत्र हो जाते हैं, परोपकार में अपने लिए धन की आवश्यकता नहीं होती, परोपकार के कार्य से धन दूसरों के काम में आता है। जब धन की अपने लिए आवश्यकता होती है तब केवल विलासिता के लिए होती है। ऐसे व्यक्ति के पास जो लोग आते हैं वे भी इसी प्रवृत्ति के होते हैं। ऐसे ही लोग सत्ता का संरक्षण प्रदान करते हैं। जो ऐसे सन्तों के प्रयोजन सिद्ध करने में सहायक होते हैं। यही कहानी सन्त कहाने वाले कबीरपंथी रामपाल दास की है। वह व्यक्ति अपनी पैसे की शक्ति से जुटा है। दोनों बार का करौंथा काण्ड उसी का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

आर्यसमाज के सभी व्यक्ति रामपाल दास से बहुत दुःखी थे क्योंकि वह समाचार पत्रों में और पुस्तकें प्रकाशित कर तथा समाचार चैनल पर अपने कार्यक्रमों में ऋषि के और आर्यसमाज के सिद्धान्तों का बलपूर्वक विरोध करता है, केवल विरोध ही नहीं करता अपितु उसका सारा कार्यक्रम आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द को अपमानित करने की भावना से गाली देने के लिए होता है। यदि कोई व्यक्ति किसी संस्था, व्यक्ति की बातों से सहमत नहीं तो वह अपना पक्ष रखने का अधिकार रखता है। असहमति रखना, समीक्षा करना, सिद्धान्तों को अस्वीकार करना किसी भी व्यक्ति का निजी अधिकार है, उसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती, परन्तु किसी के चरित्रहनन व निन्दा की भावना, असभ्य शब्दों का प्रयोग, अपनी आलोचना में करता है तो वह सामने वाले को बातचीत के लिए नहीं, संघर्ष के लिए चुनौती देता है। रामपाल दास ने यह चुनौती देने का कार्य वर्षों से प्रारम्भ कर रखा है। आर्यसमाज ने, विशेष रूप से 'हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा' ने रामपाल दास की समस्त आपत्तियों का उत्तर देते हुए पत्रिकाओं में लेख और पुस्तक प्रकाशित कर रामपालदास को भेजी तथा जनता में वितरित भी की, परन्तु सत्यासत्य का निर्णय करना रामपाल दास का उद्देश्य नहीं था। अतः उसने अपने दुष्प्रचार को कभी बन्द नहीं किया। जब कभी उसे शास्त्रार्थ या सम्मुख बात करने के लिए कहा गया, तो उसने कहा मैं बात करने के स्थान पर लिखना ठीक समझता हूँ। यह भी एक उपाय है और बोलने से अच्छा है, परन्तु यहाँ पर समस्या विचार की नहीं वित्त की है। रामपाल दास समाचार पत्रों में एक-एक पृष्ठ के विज्ञापन, जिनका एक पृष्ठ का मूल्य पाँच से दस लाख से भी अधिक होता है, एक-एक दिन में दस-दस समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाता है और इस प्रक्रिया को वह वर्षों तक चलाता रहता है। यह जनता के चन्दे से काम करने वाली संस्थाओं के लिए असम्भव है। इसी प्रकार समाचार चैनल पर जो कार्यक्रम रामपाल दास देता है उसका भी आधार एक-एक कार्यक्रम के हजारों रुपये देना है। जो राशि वर्ष में लाखों से करोड़ों तक पहुँचती है।

यहाँ लोग सोचते हैं, क्या बात है एक व्यक्ति अपना इतना धन और समय इस कार्य में लगा रहा है। यदि केवल सत्यासत्य का निर्णय मात्र उद्देश्य है तो इतना परिश्रम करने और धन का व्यय करने की आवश्यकता नहीं है। यह कार्य शत्रुता की भावना के बिना कोई व्यक्ति नहीं कर सकता। प्रश्न उठता है किसी व्यक्ति की आर्यसमाज से शत्रुता का क्या कारण है अथवा व्यक्ति को आर्यसमाज से क्या कष्ट है कि वह अपनी 'सम्पत्ति और शक्ति' आर्यसमाज को गाली देने में लगा रहा है। जब तक किसी के स्वार्थ या हितों की हानि नहीं होती वह इस प्रकार बौखलाया नहीं होता। रामपाल दास के बौखलाने का भी कारण है।

रामपाल दास अपने बचाव में केवल समाचार पत्रों का ही उपयोग नहीं करता उसके पास सरकार व प्रशासन में भी अच्छी पकड़ है। वह न्यायालय का लाभ उठाने में भी मंहगे वकीलों की बड़ी सेना खड़ी करने में पीछे नहीं रहता वह सरकार से लड़ना पड़े तो न्यायालय का पूरा लाभ उठाता है। जैसे दोनों बार के संघर्ष में जनता ने देखा। अभी के आन्दोलन में सरकार ने आन्दोलनकारियों को समझाया कि वह इस आश्रम को बन्द करवाने का उपाय करेगी इस वक्तव्य का आधार लेकर रामपाल दास के लोगों ने उस धारा के उपयोग के विरुद्ध निषेधाज्ञा प्राप्त कर ली। इस प्रकार गाँव व समाज के जो लोग रामपाल दास के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं, उनके संघर्ष को देखने से प्रतीत होता है ये लोग सरकार व प्रशासन को अपनी बात समझाने, समाचार पत्र एंव संचार माध्यमों के द्वारा अपना पक्ष रखने तथा न्यायालय का सहारा लेन में रामपाल दास की

अपेक्षा कमजोर सिद्ध हो रहे हैं। कोई न्यायालय अपराधी को संरक्षण कैसे दे सकता है? इसका यही परिणाम निकलता है। आन्दोलनकारी न्यायालय गये नहीं या अपना पक्ष रखने में समर्थ नहीं हुए। न्यायालय से सुरक्षा पीड़ित को मिलती है परन्तु पुलिस बल उसकी सुरक्षा कर रहा है जो जनता को पीड़ित कर रहा है। बड़ी संख्या में आन्दोलनकारी घायल हुए हैं एक व्यक्ति पहले भी ऐसे आन्दोलन में शहीद हुआ था, इस आन्दोलन में तीन व्यक्ति शहीद हो गये। इसका अभिप्राय दुष्ट व्यक्ति का बल बढ़ रहा है। आन्दोलनकारियों के पास आमने-सामने का मार्ग बचता है। गाँव के लोग उसी से अपना दुःख प्रकट करते हैं और दुःख को दूर करने की माँग करते हैं। आन्दोलन को बिगाड़ने के लिए विरोधी लोग अथवा असामाजिक तत्त्व लोगों को भड़काते हैं। नियम-कानून विरोध कार्य करवाते हैं। इसके लिए नेतृत्त्व का सजग और समर्थ होना आवश्यक है। प्रायः जन आन्दोलनों में इसका अभाव देखा जाता है। फिर भी सरकार और प्रशासन ने जो धैर्य प्रदर्शित किया है उसने संघर्ष को अधिक खूनी होने से बचाने में सहायता की है।

रामपाल दास का आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द और गाँव वालों के विरुद्ध होना अकारण नहीं है। रामपाल दास के लोगों ने गाँव वालों को तंग करना, अपमानित करना, उनकी सम्पत्ति हड़पना तथा अन्य संदिग्ध गतिविधियां चलाना आदि कार्य किये जिसका परिणाम वर्तमान संघर्ष बना है। इस संघर्ष के प्रत्यक्षदर्शी एवं जन आन्दोलन का नेतृत्त्व कर रहे आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने अपने लेख में इस आन्दोलन के मूल का प्रामाणिक विवरण दिया है, जो इस काण्ड को समझने में सहायक होगा। जो इस प्रकार है-

अब मैं आज के विषय में, विशेषकर भास्कर के ८ अप्रैल तथा पूर्व एवं बाद के विषय पर आना चाहता हूँ। ८ अप्रैल के रोहतक भास्कर में '**यह है मामला**' कहकर जो पत्रकार ने आर्यसमाज व रामपाल दास में झगड़े का मामला दिखाया है वह सर्वथा मिथ्या है। सत्य क्या है वह मैं आपके समक्ष रख रहा हूँ जिसे पत्रकारों को दर्शाना चाहिये। रामपाल दास के एक शिष्य कृष्णदास ने इसके चरित्रहीनता व कुकृत्यों को देखकर इसके विरुद्ध एक पुस्तक '**भगवान बना शैतान**' नाम से लिखी और यह पुस्तक लिखकर वह किसी शक्तिशाली आश्रय के लिए छुड़ानी गाँव के कबीरपंथी आश्रम में चला गया। उस पुस्तक को पढ़कर रामपाल दास आगबबूला हो गया तथा कृष्णदास की हत्या के लिये अपने अनुयायियों सहित छुड़ानी गाँव के आश्रम में पहुँचा वहाँ पर इनको कृष्णदास नहीं मिला तब इन्होंने उस कृष्णदास को आश्रय देने वाले आश्रम के महन्त ब्रह्मस्वरूप तथा आश्रम के सेवकों को लोहे की राडों से बुरी तरह पीटा, तब उनके शरीर पर लोहे की राडों की चोटों के अनेक निशान देखे जा सकते थे। वे रोते-पीटते (दुल्हेड़ा) ग्राम की **बारह खाप** के पास पहुँचे। दुल्हेड़ा के बारह खापों की पंचायत इसके कुकृत्यों के कारण इकट्ठी हुई और निर्णय हुआ कि कल बहादुरगढ़ में मुख्यमन्त्री के आगमन पर इसके कुकृत्यों की शिकायत की जाये तथा अगले दिन बहादुरगढ़ में १२ ग्रामों की खाप पंचायत ने मुख्यमन्त्री के समक्ष इसकी शिकायत की जिसके कारण पुलिस प्रशासन ने इसके ४-५ अनुयायियों को गिरफ्तार कर लिया। इस दुस्साहसी भगवान बना शैतान ने गिरफ्तार हुए अपने अनुयायियों को छुड़ाने के लिये डीघल की पुलिस चौकी पर हमला किया और इन्होंने पुलिस कर्मचारियों को बुरी तरह पीटना शुरू किया। पुलिस की हाहाकार को सुनकर ग्रामवासी उनकी रक्षा के लिये दौड़े। उन्हें देखकर रामपाल दास तथा अनुयायी भागकर अपने आश्रम में घुस गये और डीघल तथा आस-पास के गाँव को अपना शत्रु मानकर डीघल एवं करौंथा ग्राम को चैलेंज (चेतावनी) देते हुए कहा, जो कहा वह शब्द, वाक्य आपके दिये समाचार-पत्रों के हैं। ध्यान से सुनो! मेरे पास ऐसे भयंकर हथियार हैं जिनसे मैं डीघल गाँव को ५ मिनट में तथा करौंथा को २ मिनट में समाप्त कर सकता हूँ।

आपके द्वारा दिये गये उस समय के समाचारों के आधार पर उस समय इसके आश्रम में वे हथियार थे भी जिनसे इसने सैकड़ों पंचायत के लोगों को गोलियों से छलनी करके एक युवक की हत्या कर दी थी। क्या आप भूल गये, आप लोगों ने समाचार-पत्रों में लिखा था अनेक वैध, अवैध हथियारों के साथ एके-४७ तथा अनेक तेजाब के भरे ड्रम पाये गये जिन्हें आपने अगले दिन सरकार के दबाव में आकर नकार दिया, क्योंकि सरकार के बड़े-बड़े अधिकारी व राजनेता इसके आश्रम में आकर अय्याशी करते थे। उस समय का डीसी जो आप लोगों ने समाचार पत्रों में इसकी धूप-छाया की रक्षा हेतु छतरी ताने खड़ा दिखाया था और एस.पी. का ड्राइवर तो स्वयं इसका सहोदर था। बड़े-बड़े राजनेता तथा उनकी पत्नियाँ इसके आश्रम में मौज-मस्तियाँ लिया करती थीं जिनका नाम देना मेरी हिम्मत से बाहर है। यदि उस समय सी.बी.आई. की जाँच होती तो यह सब सलाखों के अन्दर होते।

इसके उपरान्त इस व्यक्ति ने अपने अनुयायियों द्वारा डीघल तथा करौंथा गाँवों की बहन-बेटियाँ, जो अपने खेतों में कृषि कार्य हेतु जाती थी, उनका अश्लील हरकतों से अपमान करना शुरू कर दिया। इस इलाके के बहादुरजन प्राण देकर भी अपनी बहन-बेटी के सम्मान की रक्षा करते आये हैं। भला वे बहन-बेटियों के अपमान तथा एक अपने गाँव की बेटी की जबरदस्ती छीनी जाने वाली भूमि के अपमान को कैसे सहन कर कर सकते थे? रामपाल दास को यहाँ तक भी सन्तुष्टि नहीं हुई। इसने अपने अपराधी अनुयायियों को हवालात से छुड़वाने हेतु लगभग ५ दिन का रोहतक-झज्जर रोड़ पर जाम लगा दिया

तब यहाँ के लोगों ने दु:खी होकर अहलावत, काद्यान व सतगामा खाप की पंचायत डीघल गाँव के राजकीय विद्यालय में बुलवाई। पंचायत को यज्ञ से आरम्भ करवाने के लिए आचार्य बलदेव जी को भी आमन्त्रित किया आचार्य जी के साथ मैं भी हवन हेतु पंचायत में सम्मिलित हुए था। इससे पूर्व रामपाल दास के झगड़े से आर्यसमाज का कोई सरोकार नहीं था।

पंचायत में निर्णय लेकर मुखिया पंचों ने कहा, हमें तीन दिन का और समय दिया जाये ताकि हम मुख्यमन्त्री जी को पुन: सचेत कर सकें। परन्तु नौजवानों का खून उबल गया और वे पंचायत का विरोध करते हुए आश्रम की ओर चल पड़े। फिर पंचायत ने विचार किया कि कभी इन जवानों को जान-माल का खतरा न हो जाए। चलकर हम रामपाल दास को समझाकर शान्तिपूर्वक जाम को खुलवाकर अमन, चैन से वापिस आ जायेंगे। परन्तु जब पंचायत के लोग उस आश्रम के निकट पहुँचे तभी रामपाल दास तथा उसके अनुयायियों ने छत पर चढ़कर दनादन गोलियाँ बरसानी शुरु कर दी जिसमें सैकड़ों पंचायती घायल हुए तथा एक युवक सोनू का बलिदान हुआ। **यह है रामपाल दास के साथ झगड़े का मामला?** इसमें पहला झगड़े का कारण उनके अनुयायी, दूसरे छुड़ानी गाँव के महन्त ब्रह्मस्वरूप तथा उसके सेवक, तीसरे आसपास के इलाके की जनता। इन सबको छोड़कर मीडिया तथा पत्रकारों ने केवल मात्र आर्यसमाज को इस संघर्ष की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया। जिस प्रकार से स्वतन्त्रता से पूर्व कांग्रेस ने हैदराबाद नवाब के अत्याचारों के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया था। परन्तु नवाब से त्रस्त होकर कांग्रेस को अपना आन्दोलन वापिस लेना पड़ा। उसके पश्चात् स्वामी स्वतन्त्रानन्द जैसे निर्भीक संन्यासी के नेतृत्व में आर्यसमाज ने आन्दोलन की कमान सम्भाली।

इस प्रकार यह आन्दोलन रामपाल दास व आर्यसमाज के मध्य नहीं। यह आन्दोलन तो गाँवों की पीड़ित जनता और क्षेत्र में आतंक उत्पन्न करने वाले सन्त के मध्य है। आर्यसमाज ने, तो जनता की आवाज शासन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। जो उसका स्वाभाविक कर्त्तव्य है।

परोपकारिणी सभा की ओर से भी रामपाल दास को अनुचित वक्तव्यों के विरोध में पत्र लिखे गये। जिसके उत्तर में उसका कहना था-'मैंने लिखा है, आप लोग भी समाचार-पत्रों में लिखो।' जैसा ऊपर बताया जा चुका है रामपाल दास में समाचार-पत्रों को धन देकर अपने समाचार छपवाने की प्रवृत्ति है। इसके विरुद्ध कार्यवाही करने हेतु सप्रमाण भारतीय प्रेस परिषद् में शिकायत की गई। जिसकी सुनवाई २६ फरवरी २००७ को उदयपुर के सूचना केन्द्र में हुई, उस समाचार-पत्र को दोषी पाया गया और सरकार ने इसके विरुद्ध कार्यवाही करने का निर्णय पारित किया।

इस बार के संघर्ष में भी पीड़ित पक्ष, न्यायालय को उचित परिस्थिति से अवगत कराने में असमर्थ रहा, इस न्यायालय के निर्णय गाँव वालों के आक्रोश को निरन्तर बढ़ाते रहे। इस संघर्ष में एक वृद्ध सहित दो कर्मठ युवकों का बलिदान हो गया। इन दोनों बार के संघर्ष में चार व्यक्ति शहीद हुए। दो गाँव के व्यक्ति, एक बालक सोनू तथा एक वृद्धा, वहीं आर्यसमाज के दो युवा कार्यकर्त्ता दूसरे संघर्ष में बलिदान हो गये। यदि हम बुराई के विरुद्ध विचार पूर्वक संघर्ष नहीं करेंगे, तो स्वाभाविक रूप से समाज और संगठन की अधिक हानि होगी। आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में श्री योगेन्द्र, सर्वमित्र, कर्मवीर आदि ब्रह्मचारियों ने क्षेत्र के लोगों के हित के लिए गाँव वालों के साथ मिलकर जो पुरुषार्थ किया उसी के परिणाम स्वरूप जनता में जागृति आई।

इस संघर्ष में आन्दोलन का संचालन करने में सर्वाधिक कठिनाई थी 'कानून की समझ'। कानून की समझ रखने वालों का विचार था संघर्ष को धैर्य-समझ से कानून के दायरे में चलाया जाना चाहिए परन्तु गाँव वालों की स्वयं ही निर्णय तक पहुँचने की उत्तेजना और आक्रोश। ऐसे समय में संचालक किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है और असामाजिक तत्त्वों की बन आती है। अतएव कहा गया है।

नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यतां याति लोक,
जनपदहितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः।
इति महति विरोधे वतमाने समान,
नृपतिजनपदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता।।

-धर्मवीर।

सूचना

परोपकारी पत्रिका अपने लेख, कविताओं, प्रतिक्रियाओं, पाठकों के विचार, विज्ञप्ति के लिए आप लेखक-महानुभावों से अनुग्रहित होती रही है। आप सभी लेखक-महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख, प्रतिक्रिया, विचार, सुझाव, सूचना इत्यादि कुछ भी सामग्री, जो प्रकाशनार्थ भेजी जा रही है उसे मुद्रित कराकर, उसका प्रूफ-संशोधन कर ही भेजने की कृपा करें। जो महानुभाव अपनी प्रतिक्रिया पोस्टकार्ड में भेजना चाहते हैं, वे स्पष्ट, सुपाठ्य लिपि में लिखकर अथवा लिखवाकर ही भेजें।

-सम्पादक

साधना-पथ

-स्वामी विष्वङ्

संसार में अरबों मनुष्य हैं। उनमें किन्हीं इने-गिने मनुष्यों में साधना करने की पवित्र भावना जगती है और साधना के पथ पर चल पड़ते हैं। साधना के पथ पर वे चल पाते हैं, जिनके पूर्व जन्म के साधना विषयक संस्कार होते हैं अथवा वर्तमान के परिवेश (=माहौल) का गहरा प्रभाव रहता है, जिस कारण वे साधना के पथ पर अग्रसर होते हैं। अरबों संख्या वाले मनुष्य समुदाय में साधना करने वालों की संख्या अत्यल्प है। अत्यल्प संख्या वाले साधक महानुभाव भी साधना के क्षेत्र में साधना करते-करते साधना को या तो सर्वथा छोड़ बैठते हैं, या साधना के क्षेत्र में रहते हुए ही जैसे-तैसे समय व्यतीत कर रहे होते हैं। कोई विरले ही साधना के महत्त्व को, उपयोगिता को, लाभों को और न करने से हानियों को भली-प्रकार जानकर-समझकर साधना को यथोचित स्तर पर करते हुए साधना की गहराइयों को आत्मसात करते हुए साधना की उच्च स्थिति को प्राप्त होते हैं।

जो साधक साधना को छोड़ बैठते हैं या साधना के पथ पर चलते हुए भी जैसे-तैसे समय व्यतीत करते हैं। उनका इस प्रकार साधना को छोड़ देना या साधना पथ पर व्यर्थ समय व्यतीत करना, किन कारणों से होता है? इस पर दृष्टि डालने से एक महत्त्वपूर्ण कारण सामने आता है और वह कारण है- ज्ञान=(जानकारी)। ज्ञान एक ऐसा महत्त्वपूर्ण कारण है, जिस पर सम्पूर्ण मानव जीवन आश्रित है। मनुष्य का प्रत्येक कार्य ज्ञान पर आश्रित है। साधना रूपी कार्य, महत्त्वपूर्ण कार्य है। महत्त्पूर्ण कार्य बिना ज्ञान के कैसे सम्भव हो पायेगा? मानव का स्वभाव है कि सुख को प्राप्त करना और दुःख को दूर करना। सुख भी सामान्य नहीं, अनेकों विशेषणों से युक्त सुख चाहिए और सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाना ही मानव का ध्येय है। सुख पाना हो, या दुःख दूर करना हो, बिना कार्य के नहीं हो सकता और कैसे-कैसे कर्म करने से कैसे-कैसे सुख प्राप्त होते हैं और कैसे-कैसे दुःख दूर होते हैं, ये सब ज्ञान पर आश्रित हैं। ऐसे महत्त्वपूर्ण ज्ञान को अपनाये बिना साधना का पथ प्रशस्त नहीं हो पायेगा।

जो भी साधक साधना को छोड़ बैठते हैं या साधना के पथ पर चलते हुए समय व्यर्थ करते हैं। उनके जीवन में ज्ञान का अल्प होना एक महत्त्वपूर्ण कारण है। साधक साधना में रुचि रखते हैं, श्रद्धा रखते हैं, उसके लिए तप करते हैं और नाना प्रकार के उपायों को भी अपनाते हैं। परन्तु उनकी दृष्टि ज्ञान पर प्रायः कम रहती है या न के बराबर रहती है। अनेकों साधकों को यह देखा जाता है कि शास्त्र पढ़ना, उनके मत में व्यर्थ समय बिताना है। शास्त्र पढ़ना व शास्त्र-चर्चा करना उनके लिए कोसों दूर है। वे ऐसा मानते हैं कि साधना के लिए शास्त्र पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए वे शास्त्र न पढ़ते हुए केवल साधना करना चाहते हैं और शास्त्र पढ़ने वालों से अलग एकान्त में रहते हैं। साधक ज्ञान से दूर रहते हुए साधना से ही कोसों दूर होते जा रहे हैं। जितना अधिक ज्ञान बढ़ता है उतनी अधिक साधना उत्तम बनती जाती है। यह बात ज्ञान की गहराई को जानने पर ही ज्ञात हो सकता है।

साधक गण इस बात को अच्छी प्रकार जान लें कि साधना का आधार अष्टांग-योग है। अर्थात् जितना अधिक योग को अपनाया जाये, उतनी अधिक साधना उत्कृष्ट बनती है। योग स्पष्ट रूप से विधान करता है कि 'स्वाध्याय' करना चाहिए। महर्षि वेदव्यास ने 'स्वाध्याय' की जो परिभाषा दी है। वह इस प्रकार है कि '**स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा**'। अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कराने वाले शास्त्रों का अध्ययन करना और प्रणव=ओ३म् का जप करना स्वाध्याय कहलाता है। महर्षि वेदव्यास के कथन से स्पष्ट होता है कि मोक्ष को प्राप्त करना है, तो मोक्ष को प्राप्त कराने वाले शास्त्र पढ़ने चाहिएँ। मोक्ष को प्राप्त कराने वाले शास्त्र पढ़ने से साधक को वह ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे साधना का पथ प्रशस्त होता है। क्योंकि साधना में विशेष गति तब हो सकती है, जब विशेष जानकारी होती है और विशेष जानकारी बिना शास्त्र पढ़े नहीं हो सकती। इसलिए शास्त्र पढ़ना साधक का परम कर्त्तव्य है क्योंकि 'स्वाध्याय' से साधना उत्कृष्ट और पुष्ट होती है।

स्वाध्याय करने का अभिप्राय क्या हो सकता है? अर्थात् मोक्ष शास्त्रों का अध्ययन करने का अभिप्राय क्या हो सकता है? कोई साधक यह अभिप्राय ले सकता है कि किसी गुरु के सान्निध्य में रहकर गुरु मुख से पढ़ना या किसी शास्त्रवेत्ता के मुख (प्रवचन के रूप में) से सुनना या शास्त्र पढ़े हुए साधकों के क्रिया-कलापों को देखकर सीखना या और किसी भी रूप में हो। परन्तु शास्त्रों में मोक्ष को प्राप्त करने के लिए जो जानकारी दी गई है, उसे जानना साधक के लिए अनिवार्य है। क्योंकि मोक्ष को प्राप्त करना रूपी कर्म=कार्य संसार में सब से उत्कृष्ट कर्म है। जितना उत्कृष्ट कर्म होगा, उसके लिए उतने ही उत्कृष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है। चाहे साधक स्वयं स्वाध्याय करे या गुरु के माध्यम से करे या जो स्वाध्याय करके साधना को उत्कृष्ट बना रहे हैं, उनको देखकर करे। कैसे भी करे, किन्तु स्वाध्याय तो करना ही होगा। बिना स्वाध्याय के साधना को साधना के रूप में साधक नहीं कर सकता। इसलिए साधक को चाहिए कि शास्त्रों से मुख न मोड़ें और ज्ञान से उदासीन न रहे। ऐसा न हो कि जिस साधना को करने के लिए साधक बने, वही साधना साधक को ज्ञान के अभाव में साधना से कोसों दूर ले चले। इसलिए साधक ज्ञान के साथ ही साधना को लेकर चले। बिना ज्ञान के नहीं। अस्तु। **-ऋषि उद्यान, अजमेर।**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

स्वामी दर्शनानन्द निर्वाण शताब्दी और उनकी ऊहा- परोपकारी के विद्वान् तथा सुदक्ष सम्पादक ने गत दस-बारह वर्षों में अपने कितने भक्त बनाये और चेले मूण्डे हैं, यह तो हमें जानकारी नहीं है। अपने भक्त बनाने और अपनी सृष्टि सजाने का महारोग आर्यसमाज में ऐसा फैल रहा है कि एक महात्मा ने अपने कमरे में एक बहुत बड़े विद्वान् को एक कार्यक्रम में ठहराने की अनुमति न दी। इस युग में श्री धर्मवीर जी का सम्पादकीय कौशल है कि परोपकारी का परिवार निरन्तर बढ़ता जा रहा है। प्रबुद्ध पाठक-अनुभवी वृद्ध ही नहीं, सुशिक्षित युवक परोपकारी तथा परोपकारिणी सभा से नई-नई माँग करते हैं। हम इसे समाज के जीवन का लक्षण मानते हैं।

युवा पाठकों की माँग पर स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के जीवन व ऊहा पर कुछ नई व ठोस सामग्री देने का क्रम चलता ही रहेगा। जब पिता ने दबाव देकर कृपाराम को काशी में अपने परिवार के ट्रस्ट का कार्य सौंपा, तो निर्धन संस्कृत विद्यार्थियों की सहायता तो कृपाराम करता ही था। वह वहाँ पौराणिक ब्राह्मणों के प्रत्येक वार का उत्तर प्रत्युत्तर देने में किञ्चित भी विलम्ब नहीं करता था। जन्माभिमानी ब्राह्मण कृपाराम की लग्न व फुर्ति से बड़े दुःखी थे। एक दिन पं. शिवकुमार (कमलापति त्रिपाठी उन्हीं के वंशज थे) ने कृपाराम को अपने पास बुलवाया।

पण्डित जी अपने बहुत बड़े मञ्च पर गद्दों गदेलों पर विराजमान थे। नीचे ढाई-तीन सौ विद्वान् ब्राह्मण बैठे थे। कृपाराम से पूछा, ''ठीक है कि शूद्र आर्यसमाज में आकर वैश्य बन सकता है। वैश्य भी क्षत्रिय बन जायेगा और क्षत्रिय उन्नति करके ब्राह्मण बन सकता है, परन्तु तू तो पहले ही ब्राह्मण है। तुझे आर्यसमाजी बनने से क्या लाभ? तेरी क्या उन्नति होगी?

तपाक से कृपाराम बोले, सो तो प्रत्यक्ष ही है। शिवकुमार जी चकित होकर देखने लगे कि प्रत्यक्ष क्या है? कृपाराम बोले, ये ढाई-तीन सौ पण्डित सब नीचे दरी पर बैठे हैं और मैं आपके साथ आपके आसन-सिंहासन पर बैठा हूँ। उन्हें वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज पर बहुत गौरव था। इस वाक्य से उनकी ऋषि-भक्ति छलक रही है।

जब मन्त्री ने उनका भाषण न करवाया-यह घटना केवल मेरे द्वारा लिखित स्वामी जी के जीवन चरित्र में मिलेगी। यहाँ संक्षेप से दी जाती है। ऋषि-मेला पर श्री अजय आर्य यह ग्रन्थ भेंट कर रहे हैं। आर्यसमाजी लेखकों ने यह तो दिया है कि जब स्वामी जी ने अमृतसर में ऋषि-दर्शन किये तब वह पौराणिक संन्यासी बनकर घूम रहे थे। ऋषि को सुनकर वैदिक धर्म प्रचार की धुन लगी। यह कहानी पूरी स्पष्ट नहीं। इतना निश्चित माना जाता है कि पं. लेखराम युग से पहले (महर्षि के बलिदान के पश्चात्) स्वामी जी कादियाँ पहुँचे। वहाँ आर्यसमाज के मन्त्री ला. मलावामल से कहा कि मेरा प्रचार कराओ। मन्त्री भी जवान था। उसने इनकी कच्ची आयु भरी जवानी देखकर इनकी एक न सुनी। प्रचार न करवाया। यह निराश होकर दीनानगर पहुँच गये। वहाँ भी आर्यसमाज बन चुका था। लगता है कि वहाँ भी समाज ने प्रचार की व्यवस्था न की।

स्वामी दर्शनानन्द जी बाजार में व्याख्यान दे रहे थे। विधर्मियों से टक्कर ले रहे थे कि चाचा जयराम जी खोजते-खोजते दीनानगर पहुँच गये। जैसे-तैसे इन्हें घर ले गये। यह है स्वामी जी के कार्यक्षेत्र में उतरने तथा प्रथम प्रचार की प्रामाणिक कहानी। पाठक पूछेंगे कि कादियाँ की घटना का स्रोत क्या है? मैं राजेन्द्र 'जिज्ञासु' कादियाँ में जब पढ़ता था। सभासदों के चन्दे, मैं ही लाया करता था। ला. मलावामल तब बहुत वृद्ध हो चुके थे। जब मैं उनके पुत्र मन्त्री दाताराम का चन्दा लेने जाता तो, मलावामल जी के पास कुछ मिनट अवश्य बैठा करता था। वह मुझे आर्यसमाज की पुरानी कहानियाँ सुनाया करते। बहुत बूढ़े थे, कुछ समझ जाता, कुछ ठीक सुन नहीं पाता था। यह घटना १९४९-१९५० की होगी। मुझे उनके मुख से सुने सब प्रसंग आज भी याद हैं। तब उन्होंने ही यह बताया था कि जब मैंने उनका प्रचार न करवाया, तो वह दीनानगर चले गये। पीछे-पीछे चाचा आकर उन्हें घर ले गये।

तब मुझे इतनी सूझ समझ नहीं थी। श्रद्धा थी रुचि थी। मैंने और अधिक कुछ न पूछा। बड़ा हुआ तो मैंने दीनानगर की घटना पढ़ी, सुनी तो ला. मलावामल की सुनाई घटना याद आ गई। मैंने सार्वजनिक जीवन का आरम्भ कादियाँ अमृतसर और दीनानगर से किया। यह संयोग ही तो है कि स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज की कर्मभूमि से ही मैंने सेवा कार्य आरम्भ किया मैंने ला. मलावामल से, तो यह नहीं पूछा परन्तु मैंने अनुमान से स्वामी जी की जीवनी में यह लिखा है कि लगता है कि ला. मलावामल जी ने ही उनके परिवार को स्वामी दर्शनानन्द जी के दीनानगर जाने की सूचना भेजी। उन्हें पता था कि वह दीनानगर गये हैं। उन्होंने ही मुझे यह बताया था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी का मौलिक तर्क-परोपकारी को भेजे गये कुछ लेख डाक में गुम होने के कारण स्वामी सत्यप्रकाश जी का एक अद्‌भुत तर्क दोबारा भेजा जा रहा है। संन्यास धारण करके श्री स्वामी जी पूरा एक मास पंजाब में प्रचारार्थ घूमे। मैं सब नगरों में उनके साथ-साथ रहा। ईश्वर की सत्ता पर प्रत्येक नगर में कॉलेजों के विज्ञान प्राध्यापक प्रश्न पूछते

रहे। गिदड़बाहा मण्डी में भी किसी ने पूछा, आप वैज्ञानिक होकर ईश्वर की सत्ता को क्यों मानते हैं?

स्वामी जी ने कहा, जगत में आप सर्वत्र गति देखते हैं। कण-कण में गति है। ग्रह उपग्रह, सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि सब गति कर रहे हैं। प्रकृति जड़ है। यह तो हिल नहीं सकती। आप लोग घर चले जायेंगे। दरियाँ, चौकी, माईक सब यहीं रह जायेंगे। आप ही इन्हें हिला व हटा सकते हैं। जड़ जगत् को गति देने वाली सत्ता को ईश्वर मानता हूँ। अपने कथन की पुष्टि में कई वेद मन्त्र भी सुनाये। वह व्याख्यान दार्शनिक विषय पर था परन्तु बड़ा जोशीला, रोचक, प्रेरक तथा प्रभावशाली था। मुझे ईश्वर की सत्ता पर दो और महापुरुषों के व्याख्यान नहीं भूल सकते। ऐसे दो अद्‌भुत वक्ता और विद्वान् थे पूज्य देहलवी जी तथा पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय।

प्रचार करो-प्रचार करो-देश विभाजन के १५-१८ वर्ष पश्चात् तक दिल्ली के दैनिक-पत्रों विशेष रूप से सबसे बड़े उर्दू दैनिक प्रताप में आज की व्यस्तताओं में रविवार के दिन आठ-दस आर्यसमाजों के सत्संगों की सूचना छपा करती थी। मॉडल टाउन, नया बांस, हनुमान रोड़, दीवान हॉल, करौल बाग, सीताराम बाज़ार समाज के वार्षिकोत्सव मैं देखता रहा। मैदान में उत्सव होते थे या स्कूलों के खुले आँगनों में। सन् १९९० के आसपास अनारकली मन्दिर मार्ग के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुआ। यहाँ एक अन्य अंग्रेजी स्कूल है। कई प्रिंसिपल, डायरेक्टर, डी.ए.वी. के अधिकारी उस समाज से नत्थी हैं। मैं देखकर दंग रह गया कि समाज के सेवक व पुरोहित के लिए समय पर यज्ञ आरम्भ करवाना एक समस्या बन गई। तीन-चार यजमान न मिल सके। मैं भी निराश होकर लौट आया। जहाँ-जहाँ स्कूल हैं-वहाँ मैडमें व बच्चे किराये-भाड़े पर लाकर सत्संग व उत्सव करके रीति निभानी पड़ती है।

परतवाड़ा (महाराष्ट्र) में नेताओं ने समाज मन्दिर ही बेच दिया एक अलबेला युवक आगे निकला। हमने उसे घुट्टी पिलाई-प्रचार करो, प्रचार करो। आज दिल्ली के बड़े से बड़े समाज से प्रचार व संगठन में वह समाज आगे है। वनवासी भाईयों में हमारा नियमित कार्यक्रम रहता है। परोपकारिणी सभा से विद्वान् जाते रहते हैं। प्रिय राहुल और श्री पं. देवदत्त जी, अकोला व अमरावती से पूरा मार्गदर्शन करते व सहयोग करते रहते हैं।

वैदिक धर्म पर वार होते हैं। स्कूलों संस्थाओं वाले उत्तर देने की न तो योग्यता रखते हैं और न इनमें साहस है। परोपकारी पं. लेखराम की पताका फहराता निरन्तर उत्तर देता रहता है। अभी अजमेर सूचना पहुँची है कि राजस्थान में बड़े-बड़े नगरों में ईसाई दुकान-दुकान पर जाकर अपना साहित्य पहुँचा रहे हैं। नागपुर के पास जमायते इस्लामी वाले जाम लगने पर गाड़ियों व बसों में अपने पर्चे बाँटकर हिन्दुओं को............। उन युवकों पर बलिहारी! जो यह सब जानकारी रखते तथा परोपकारिणी सभा को पहुँचाते हैं। स्कूल, कॉलेज, किराये-भाड़े की दुकानें कहाँ नहीं? वार खुशवन्तसिंह जी करें अथवा भोपाल मण्डली अथवा ईसाई, मुसलमान, क्या उत्तर परोपकारी ही देगा? उपरोक्त युवकों के साथ आर्यों डटकर खड़े हो जाओ। उत्तर दो। सभा कुशल लेखकों से साहित्य तैयार करवाकर इन युवकों को पहुँचायेगी। सब सभायें, संस्थायें सोई थीं, श्री जितेन्द्रकुमार जी गुप्त वकील बठिण्डा ने लोहारु के रक्तिम काण्ड-गौरव गाथा पर सैकड़ों पुस्तकें निःशुल्क वितरित कर गई हैं। अपना-अपना क्षेत्र ही सम्भालो।

भूलों का करता रहूँ सुधार-अल्पज्ञ जीव से भूल होने की सम्भावना बनी रहती है। भूल को स्वीकार करके उसका सुधार करना ही उन्नति का सोपान है। अपनी भूल को स्वीकार करने में मुझे कभी संकोच नहीं होता। मैंने तो अपनी एक पुस्तक ही जीवन की भूलों को समर्पित की है। महर्षि के जीवन चरित्र पर निरन्तर तीन वर्ष दिन-रात कार्य करके बहुत कुछ देने का सन्तोष प्राप्त किया है। फिर भी जो भूलें सामने आई हैं उनको स्वीकार करके सुधार करता हुआ सब स्वाध्याय प्रेमी आर्यों को जानकारी देना आवश्यक समझता हूँ।

सब पुराने जीवनी लेखकों ने मथुरा में ऋषि दयानन्द जी के लिए रात्रि दीपक के तेल की व्यवस्था करने वाले का नाम गोवर्द्धन सर्राफ लिखा है। डॉ. रामप्रकाश जी ने अपनी उत्तम कृति गुरु विरजानन्द के जीवन में खोज करके इस भूल का सुधार करवाया है। तेल का प्रबन्ध **श्री खेतामल के पुत्र नन्नूमल सर्राफ़** ने किया था। मैंने यह पुस्तक पढ़ी। यह मेरी अत्यन्त प्यारी पुस्तक है फिर भी मुझसे भूल हो गई, मैंने भी गोवर्धन सर्राफ़ नाम दोहरा दिया। इसका मुझे खेद है। गुरुजी की जीवनी से मैंने नई सामग्री तो बहुत दी परन्तु यह भूल हो गई।

पूना में देवेन्द्र बाबूजी के लिखे अनुसार यह लिख दिया कि ऋषि शोभा यात्रा में पैदल ही चले थे। वेदवाणी में मैं पढ़ चुका था कि महादेव गोविन्द रानाडे की पत्नी लिखती है कि स्वामी जी को हाथी पर बिठाया गया था। इस भूल पर भी मुझे खेद है। दूसरे भाग के सम्पादकीय में इनका उल्लेख कर दूँगा।

अभी एक आपत्ति जनक लेख का उत्तर तड़प-झड़प के लिये तीन बार लिखना पड़ा। डाक में गड़बड़ थी। छप गया है परन्तु उसमें भी सम्भव है भूलवश यह लिखा गया है कि महर्षि चाचा के निधन पर भी न रोये। चाचा की मृत्यु पर तो रो-रो कर वह निढाल हो गये। उनकी आँखें भी सूज गईं फिर जीवन भर सङ्कटों से घिरे रहे परन्तु कभी रोये नहीं। बहुत व्यस्त था। कामों में फंसा-धंसा था। मिलान भी न कर पाया। सम्भव है, भूल हो गई हो। छपने पर पता चलेगा। मैं पहले ही प्रेमी पाठकों से क्षमा माँग लेता हूँ।

मुक्ति से लौटना-कर्नाटक के एक विद्वान् श्री कृष्ण

शास्त्री के अतिरिक्त किसी अन्य धर्माचार्य ने महर्षि दयानन्द के इस वेदोक्त सिद्धान्त की पुष्टि की हो-इसका मुझे तो ज्ञान नहीं। श्री कृष्ण शास्त्री जी ने पूना में ऋषि के व्याख्यान प्रवचन सुने। आपने ऋषिवर की इस मान्यता की पुष्टि भी की है और प्रशंसा भी। ऋषि का सीधा सा तर्क है कि मुक्ति सत्कर्मों का फल है। ससीम कर्मों का फल असीम नहीं हो सकता अत: मुक्ति से जीव लौटता है। कुछ बन्धुओं ने प्रश्न किया, सो अपनी मति तथा जानकारी के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर दिया जाता है।

परकीय मतावलम्बी तथा पौराणिक विद्वान् मुक्ति से लौटने की बात करने पर कानों पर हाथ धरते हैं। पहले विधर्मियों का उत्तर दिया जाता है। अमृतसर के शास्त्रार्थ में पादरी अब्दुल हक बहुत धूम-धड़ाके से यह कहा था कि जब जीव मुक्ति में पहुँच गया, तो फिर ईश्वर से पृथक् होकर लौटना हास्यास्पद है। इसका क्या कारण है?

पूज्य देहलवी जी ने उत्तर के साथ प्रत्युत्तर दिया, सृष्टि के आरम्भ में हज़रत आदम तथा माई हौआ कहाँ थे? क्या वे स्वर्ग में नहीं थे? ईश्वर के पास थे या नहीं? फिर वहाँ से लौटाये गये कि नहीं? पादरी जी इसका क्या उत्तर देते?

मुसलमान बन्धुओं से मैं कहा करता हूँ कि यह तान आप ही की तो है-

'निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे लेकिन'

अर्थात् बहिश्त से पैगम्बर आदम का निकाला जाना हम सुनते चले आ रहे हैं। इससे पता चला कि मुक्ति से लौटने का सिद्धान्त कोई नया नहीं है।

सनातनी हिन्दू गीता के ४-७ के अनुसार परमेश्वर का तो संसार में बार-बार आना मानता है। ये अपने अवतारों को तो जगत् में उतारते रहते हैं। परन्तु इन्हें जीव का मुक्ति से लौटना अखरता है, क्योंकि यह भूल सुधार इस युग में ऋषि दयानन्द जी ने करवाई। रस्सी जल गई पर बल न गया। इनका हठ, दुराग्रह, सत्य को स्वीकार करने से रोकता है। भले ही इनका हृदय यह मानता है कि जिसका आदि है उसका अन्त होगा ही। ऋषि दयानन्द सब मत पन्थों को यह सीधी सी बात कहते हैं कि वैदिक धर्म न तो सदा का स्वर्ग मानता है और न ही सदा का नरक मानता है। मुक्ति का भी जब आदि है तो अन्त मानना ही पड़ेगा।

अब क्या किया जावे?-कादियाँ के ऐतिहासिक केस से छूटते ही श्री पण्डित शान्तिप्रकाश जी को मास्टर केदारनाथ जी शास्त्रार्थ करने के लिये दिल्ली लाये। शास्त्रार्थ प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुका था। मौलाना बार-बार पं. व्यासदेव जी द्वारा कहे गये एक कथन का प्रमाण माँगता था। दिखाओ! ऐसा कहाँ लिखा है? पं. व्यासदेव जी का कथन सत्य था, परन्तु उनको प्रमाण का अता-पता न था। इस उलझन को पं. शान्तिप्रकाश सुलझा सकते थे। पण्डित जी जेल से छूटते दिल्ली आ गये। प्रमाण उन्हें कण्ठाग्र था, परन्तु पुस्तक नहीं थी। आर्यों को कहा, कहीं से भी यह पुस्तक लाकर मुझे दो।

पुस्तक रात के समय एक दुकान खुलवाकर लाई गई। मौलाना से पूछ, ''कहिये! क्या प्रमाण माँग रहे थे?'' उसने बड़ी सरलता से कहा, **''आपसे नहीं उन्हीं से माँगना था।''** आर्यसमाज के विद्वानों की ऐसी धाक व साख थी। मेरे सामने दो-तीन लेख रखकर कई बातें पूछी गईं। क्या पं. नरेन्द्र जी को आर्यसमाज शताब्दी पर स्वामी सत्यप्रकाश जी ने संन्यास दिया था? मैं लेखक जी को कुछ नहीं कह सकता। कोई शास्त्री है, कोई आचार्य और कोई पीएच.डी. किसे सुनावें? कौन सुनता है। यह कथन भी वैसा ही हदीस है, जैसी यह कि महात्मा आनन्द स्वामी जी से सत्यप्रकाश जी ने संन्यास लिया था।

आर्यसमाज शताब्दी के समय मैं पं. नरेन्द्र जी के बहुत साथ-साथ रहा। आपने तब संन्यास लिया ही नहीं। ये लोग इतिहास बना नहीं सकते तो इतिहास गढ़ने की, तो इनको छूट दे देनी चाहिये।

यह पूछा गया कि पं. नरेन्द्र जी ने हैदराबाद सत्याग्रह के सञ्चालन में क्या भूमिका निभाई?

मेरा उत्तर ध्यान से पढ़िये। पण्डित नरेन्द्र जी सत्याग्रह के समय बाहर थे ही, नहीं तो भूमिका निभाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हाँ! वह हँसते-हँसते पिंजरे में बन्द जंगल में यातनायें झेल रहे थे। वह अपनी तपस्या से आर्य मात्र के दिलों को गर्मा रहे थे। यह बहुत बड़ा योगदान था। जो कुछ लेखक जी ने लिखा बताया गया है, वह बिना पंखों की कल्पना है। आधुनिक हदीस है। सम्पादकों को चाहिये कि आर्य हुतात्माओं पर लिखवाने के लिये ५-७ ऐसे नवोदित लेखकों को चुनें, जो कुछ अनुभवी हों और पढ़कर मिलान करके लिखा करें। नाम की भूख से लेख तो छपते जायेंगे परन्तु आर्यसमाजी पत्रिकाएँ झूठ की फैक्ट्रियाँ बनती जायेंगी।

यह सस्ती लीडरी है-धर्म प्रचार, समाज सेवा तथा विद्या की वृद्धि के लिये कष्ट सहन व तप करना पड़ता है। यह कार्य धीरज व त्याग माँगता है। सेवक ने कई बार लेखों व व्याख्यानों में लिखा व कहा है कि धर्मवीर पं. लेखराम जी का ग्रन्थ 'सबूते तनासुख' (पुनर्जन्म मीमांसा) का पुनर्मुद्रण होना चाहिये। कोई योग्य स्वाध्याशील युवक आगे आकर श्रम करे, इसे शुद्ध करे तो मैं सहयोग व मार्गदर्शन करूँगा। सस्ती लीडरी के लिये किसी भी निम्न स्तरीय ट्रैक्ट या पुस्तक को किसी पुराने पुस्तकालय से पता करके उसके छपवाने का शोर मचाना, तो सस्ती लीडरी है। पं. लेखराम जी के इस ग्रन्थ ने अनेक भ्रमित युवकों को सन्मार्ग दिखाया। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के प्राचार्य बख्शी रामरत्न को अकस्मात अपने मामा के घर में अम्बाला में यह ग्रन्थ मिल गया। आपने वहीं पढ़ डाला और पुनर्जन्म सिद्धान्त को मानने लग गये। इसी से वह आर्य धर्म की ओर

खिंच गये। पाकिस्तान में आज भी विचारशील गवेषक पं. लेखराम जी के साहित्य को खोज-खोज कर पढ़ते हैं। सर सैयद अहमद खाँ तथा डॉ. इकबाल ने पण्डित जी का नाम लिये बिना उनकी छाप को खुलकर स्वीकार किया है। स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. रामचन्द्र जी देहलवी, पं. पद्मसिंह, पं. लेखराम जी की ऊहा व खोज को नमन करते रहे। महात्मा विष्णुदास लताले वालों की कोटि का तपस्वी विद्वान् पं. लेखराम जी के साहित्य को पढ़कर धर्मच्युत होने से बचा। मेरे पास कार्य की अधिकता है। ऊर्जा तो अभी है परन्तु समय इतना कहाँ से लाऊँ। आर्यसमाज की जिन को चिन्ता है वे सज्जन सोनीपत के पं. रामचन्द्र जी आर्य पर दबाव बनाकर उनको इस ग्रन्थ के मुद्रण दोष दूर करने के लिये तैयार करें। पूज्य पं. लेखराम जी की उर्दू ही उनके लिये कठिन होगी-फ़ारसी भी बीच में बहुत है परन्तु सोनीपत में कई आर्य अभी उर्दू जानते हैं। वह राणा गन्नौरी जी जैसे ऊंचे साहित्यकार से सब कठिनाइयों पर पार पा सकते हैं। मेरा भी पूरा सहयोग होगा।

अनुवाद तो पहले पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. जगतकुमार जी आदि कर गये हैं। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द ग्रन्थमाला जैसा मुद्रण हो। कुछ स्थानों पर कुछ पादटिप्पणियाँ देकर उन स्थलों की महत्ता पाठकों को समझाने की आवश्यकता है। इसका जितना मुझे ज्ञान है, मैं सेवा कर दूँगा। चाहे पादटिप्पणियों के रूप में यह जानकारी जोड़ दी जावे, चाहे प्राक्कथन के रूप में। आर्य वीरों! पुनर्जन्म विषय पर यह इस युग का पहला सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। आर्यसमाज में सूचियाँ बनाने वाले लेखक महानुभाव इस ग्रन्थ का गौरव नहीं जानते। इस विषय पर और भी कुछ पुराने विद्वानों ने अच्छा लिखा था परन्तु पं. लेखराम जी के पश्चात् फिर स्वामी दर्शनानन्द जी तथा पं. चमूपति जी ने संक्षिप्त परन्तु ठोस मौलिक लेख, ट्रैक्ट व एक आध अध्याय लिखा।

इस सिद्धान्त पर फिर हृदय खोलकर फिर किसी ने मौलिक व हृदय स्पर्शी साहित्य दिया, तो पूज्य उपाध्याय जी ही दे पाये। श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने भी कुछ स्मरणीय तथा चिरस्थायी देन दी। उपाध्याय जी भी इस ग्रन्थ पर मुग्ध थे। मित्रों! यह भी बता देना आवश्यक होगा कि विश्व प्रसिद्ध लेखक श्री अनवर शेख ने भले ही ऐसा संकेत नहीं दिया परन्तु वह भी पं. लेखराम जी के गम्भीर पाठक थे। पाकिस्तान के बड़े-बड़े उलेमा के दिलों में पं. लेखराम जी का ज्ञान भरा पड़ा है। क्या आप कुछ करेंगे? **-वेद सदन, अबोहर।**

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की योजना

सभी धर्म प्रेमी सज्जनों, आर्यसमाजों व संस्थाओं से निवेदन है कि इस कार्य को सफल बनाने हेतु शीघ्रता से अपना आर्थिक सहयोग परोपकारिणी सभा को भिजवायें ताकि तदनुरूप कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। सहयोग भिजवाते समय **सत्यार्थप्रकाश का प्रचार-प्रसार** शीर्षक लिखना ना भूलें। धन्यवाद।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-आचार्य दिनेश शास्त्री, ऋषि उद्यान, अजमेर। **चल दूरभाष**-०७७३७९०४९५०, ०९६०२९२१३७३

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. २८ मई से ४ जून-**आर्यवीर दल शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१
२. ६ से १३ जून-**आर्य वीरांगना शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१
३. १६ से २३ जून-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४
४. विद्वद् गोष्ठी-**'आर्यसमाज की यज्ञपद्धति'** तृतीय, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए), २७ से ३० जून २०१३, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद, मध्यप्रदेश।
५. २० से २७ अक्टूबर-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

॥ ओ३म्॥

योग-साधना शिविर

(दि. १६ से २३ जून २०१३। १६ जून को शाम ४ बजे तक पहुँचना है।)

आपके मन के किसी कोने में साधना करने की इच्छा बीज रूप में अंकुरित हो रही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एवं ऋषियों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हों, विधेयात्मक एवं सृजनात्मक जीवन चाहते हों, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हों, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हों, वैदिक सिद्धांतों को समझना चाहते हों या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित करने की अभिलाषा रखते हों तो यह शिविर आपको आपके चिंतन के अनुरूप उचित दिशानिर्देश एवं उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

शिविरार्थियों को पूर्ण लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन में चलना नितांत आवश्यक होगा। शिविर के दिनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एवं मौन के निर्धारित समय में मौन रहना अनिवार्य होगा। शिविर के पूरे काल में साधक को पत्र दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य संपर्क निषेध है। ऋषि उद्यान के अंदर ही निवास करना होगा। समाचार-पत्र पढ़ने, आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार के मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा।

जो साधक इन नियमों तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करें वे मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५००-१००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था उपलब्धता व पूर्व सूचना के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बरतन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएं अन्यथा यहां भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुंचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएं साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अंतिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

Web Site :- www.paropkarinisabha.com (: मार्ग :) **E.mail address:- psabhaa@gmail.com**

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

श्री दिनकर जी प्रकाश में भटके

–स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

मनुष्य की जब अत्यन्त स्वार्थप्रवृत्ति जागृत हो जाती है तब वह इसके वशीभूत होकर अपनी समस्त उदात्त प्रवृत्तियों का परित्याग कर बैठता है अथवा उसकी उदात्त प्रवृत्तियाँ दब जाती हैं। यहाँ तक कि जिन उदात्त प्रवृत्तियों के कारण उस व्यक्ति विशेष की पहचान लोक में प्रतिष्ठित हुई थी, वे सब विलुप्त हो जाती हैं। इतना ही नहीं, उन प्रवृत्तियों के विलुप्त होने के कारण राष्ट्र एवं समाज का जो अनिष्ट होता है, उसकी कल्पना से भी मन काँप उठता है और उसकी सारी पूर्व की प्रवृत्तियाँ भी संशय की परिधि में आ जाती हैं, जिससे यह निश्चित करना कठिन हो जाता है कि अन्तत: इस व्यक्ति की मूल विचारधारा क्या है व उसको अभीष्ट क्या है? राष्ट्रवादी विचारधारा के पर्याय समझे जाने वाले आर्यभाषा के महाकवि रामधारी सिंह दिनकर के सम्बन्ध में भी कुछ ऐसी ही भ्रामक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उनके द्वारा लिखित **'संस्कृति के चार अध्याय'** पुस्तक का आर्यसमाज के सम्बन्ध में लिखा जाने वाला तृतीय अध्याय का सातवां प्रकरण तो अत्यन्त चौंकाने वाला है एवं विस्मित करने वाला भी। यह विश्वास ही नहीं होता कि एक सुपठित व्यक्ति ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में इतना भ्रान्त एवं अज्ञ है। प्रमाण स्वरूप में हम इस प्रकरण के उस सम्बन्ध को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं–

श्री राष्ट्रकवि जी लिखते हैं कि 'युग–युग से पूजित गीता को उन्होंने (स्वामी दयानन्द ने) कोई महत्त्व नहीं दिया और राम–कृष्ण आदि को परम पुरुष माना ही नहीं'। इसी प्रकरण में श्री दिनकर जी लिखते हैं कि आर्यावर्त की सीमा के निर्धारण में भी कुछ ऐसी ही त्रुटि स्वामी दयानन्द ने की है। उनके शब्द ये हैं–'स्वामी दयानन्द ने जो सीमा बांधी है वह विंध्याचल पर समाप्त हो जाती हैं'। अब मैं श्री दिनकर जी के इन अनर्गल आक्षेपों का समीक्षण करता हूँ कि क्या वास्तव में ऋषि दयानन्द ने ऐसा किया है? श्री दिनकर जी के इस प्रकरण को पढ़ने से यह तो निश्चित ही विदित होता है कि उन्होंने स्वामी दयानन्द की मान्यताओं को स्थापित करने वाले उनके मुख्य ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को अवश्य देखा ही नहीं, अपितु पढ़ा भी है। किन्तु मेरा कहना यह है कि उनका यह देखना या अध्ययन करना दोनों ही अपूर्ण एवं छलपूर्ण हैं। गीता के सम्बन्ध में उन्होंने स्वामी दयानन्द के बारे में जो विचार व्यक्त किये हैं, वे तो सर्वथा निराधार हैं; क्योंकि स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में दार्शनिक रूप में गीता का स्वरूप प्रस्तुत करते हुए गीता का अर्थसहित एक श्लोक उद्धृत किया है–

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।। गीता २/१६

अर्थात् कभी असत् का भाव/वर्तमान और सत् का अभाव/अवर्तमान नहीं होता। इन दोनों का निर्णय तत्त्वदर्शी लोगों ने किया है। अन्य पक्षपाती, आग्रही, मलीनात्मा व अविद्वान् लोग इस बात को सहज में कैसे जान सकते हैं?

–(**अष्टम समुल्लास**)

दूसरा श्लोक–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। गीता ४/७

अर्थात् श्रीकृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग–युग में जन्म लेके धर्म की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ तो कुछ दोष नहीं। क्योंकि **'परोपकाराय सतां विभूतयः'** परोपकार के लिए सत्पुरुषों का तन–मन–धन होता है। तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।–(**सप्तम समुल्लास**)

यहाँ पर ऋषि दयानन्द ने केवल श्रीकृष्ण के ईश्वरावतार का प्रत्याख्यान किया है। उनके श्रेष्ठत्व का नहीं। एक स्थान पर तो वे श्रीकृष्ण जी की महानता के बारे में स्पष्ट ही लिखते हैं कि–'देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा'।

–(**एकादश समुल्लास**)

क्या अब श्रीकृष्ण जी की महत्ता में कुछ और भी कहने को शेष रह गया? किन्तु शायद इस राष्ट्रकवि ने उनके इस वाक्य पर दृष्टिपात नहीं किया। श्री रामचन्द्र जी के सम्बन्ध में भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये हैं कि 'जब रघुगण राजा थे तब भी रावण यहाँ के अधीन था। जब रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया, तो उसको रामचन्द्र जी ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर दिया और उसके भाई विभीषण को राज्य दिया था'।–(**एकादश समुल्लास**)

इन उद्धरणों से ज्ञात होता है कि स्वामी दयानन्द ने इन दोनों महापुरुषों को श्रेष्ठ माना है।

अब रही आर्यावर्त की सीमा के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द पर श्री दिनकर जी के अज्ञ आक्षेप की बात। तो उसका भी स्पष्टीकरण 'सत्यार्थप्रकाश' के अष्टम समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने सशक्त शब्दों में किया है, जिसमें किसी ने प्रश्न किया है कि आर्यावर्त की अवधि कहाँ तक है? तो उत्तर में महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि–

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्य्यावर्तं विदुर्बुधाः।। मनु. २/२२
सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।

तं देवनिर्मितं देशमार्यावर्तं प्रचक्षते।। मनु. २/१७

अर्थात् हिमालय की मध्य रेखा दक्षिण एवं पहाड़ों के भीतर और रामेश्वरम् पर्यन्त विंध्याचल के भीतर जितने देश हैं, उन सबको आर्यावर्त इसलिए कहते हैं कि यह आर्यावर्त देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया है और आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त कहलाया है। 'यहां रामेश्वरम् पर्यन्त का स्पष्ट उल्लेख यह बताता है कि उत्तर से दक्षिण समुद्र तक आर्यावर्त की सीमा स्वामी दयानन्द ने मानी है'। मेरे विचार से पटना में श्री दिनकर जी के अपने निवास के निकट कोई रामेश्वरम् नामक स्थान नहीं है। फिर उनसे इतनी बड़ी भूल कैसे हुई? श्री दिनकर जी दक्षिण भारत की स्थिति को देखकर घड़ियाली आंसू बहाते हैं। उसमें कारण, तो विदेशी इतिहासकारों द्वारा लिखित वह असत्य इतिहास है, जिसको दिनकर जी ने बाल्यकाल में पढ़ा था और आज भी वही असत्य इतिहास पढ़ाया जाता है कि आर्य लोग बाहर से आये, जो गोरे, लम्बे, ऊँची नाक वाले आदि शारीरिक विशेषताओं से युक्त थे। जिससे उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत का कल्पित वैमनस्य बढ़ रहा है। दिनकर जी ने इस पर ध्यान नहीं दिया और स्वामी दयानन्द पर आक्षेप कर बैठे। धन्य हो स्वार्थपरता! धन्य हो पदलोलुपता! धन्य हो चाटुकारिता!

एक आक्षेप श्री दिनकर जी का यह भी है कि श्री स्वामी जी ने ११२७ शाखाओं सहित केवल वेदों को ही परम प्रमाण माना है। यह बात तो ऋषि दयानन्द पर ही नहीं, अपितु हमारे सभी आचार्यों पर भी घटती है। उन्होंने भी तो यह कहा है कि-

अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।। मनु. २/१३

अर्थात् धर्म की जिज्ञासा रखने वालों के लिए श्रुति (वेद) परम प्रमाण हैं। मनु के अतिपरवर्ती गोस्वामी तुलसीदास ने भी तो लिखा है कि '**धर्म सोई जो वेद बखाना**'। दिनकर जी लिखते हैं कि 'स्वामी दयानन्द ने उपनिषदों पर वही श्रद्धा नहीं दिखाई'। यहाँ 'वही' शब्द से दिनकर जी का क्या अभिप्राय है ये तो वे ही जाने। किन्तु सत्यार्थप्रकाश में एक नहीं शताधिक साक्ष्य स्वामी दयानन्द ने वेदवत् उपनिषदों के दिये हैं-**पुरुषो वा यज्ञः .....** (तैत्तिरीयोपनिषद्)। **भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः..........** (मुण्डक.)। **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म......** (तैत्तिरीय.)। **यदा पञ्चावतिष्ठन्ते......** (कठ.)। **अविद्यायां अन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः, वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः,** (मुण्डोपनिषद्)। इत्यादि श्लोक उपनिषदों के ही हैं। पुनः उपनिषदों को महत्त्व नहीं दिया, दिनकर जी का यह कथन सर्वथा सत्य के ऊपर आवरण डालने वाला है। वास्तविकता तो यह है कि हमारे सभी वैदिक आचार्यों ने वेद को हा परम प्रमाण माना है और उनके आधारभूत ग्रन्थों को प्रमाण की कोटि में स्थापित किया है। हाँ, यह स्वामी दयानन्द की विशेषता रही कि वेदविरुद्ध किसी भी आचार्य के मत को उन्होंने वेद की अवमानना या छल समझकर स्वीकार नहीं किया। जैसा कि दिनकर जी के मान्य अन्य आचार्य लोग कर लेते होंगे। गाँधी जी एवं नेहरू जी, जिनको श्री दिनकर जी ने श्रेष्ठ स्वीकार किया है। ये दोनों ही राम और कृष्ण को ऐतिहासिक पुरुष नहीं मानते। गाँधी जी ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'मैं राम और कृष्ण का नाम नहीं लेता, क्योंकि वे ऐतिहासिक पुरुष नहीं थे।'-हरिजन (२७ जुलाई १९३७)। 'महाभारत के कृष्ण कभी भूमण्डल पर नहीं हुए हैं'।-तेज (५ अक्टूबर १९२५)। गाँधी जी के इन वाक्यों पर दिनकर जी का क्यों ध्यान नहीं गया, यह तो वे ही जानें। रही बात वेदों की प्रामाणिकता और ज्ञान के सम्बन्ध की, तो यहाँ स्वामी दयानन्द ने महाराज मनु का समर्थन किया है-

भूतं भवद् भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति। मनु. १२/९७
यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना प्रकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु. २/७
अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।। (महाभारत)

ये कथन भी प्राचीन वैदिक आचार्यों के हैं। विमानशास्त्र के निर्माता महर्षि भारद्वाज के सम्बन्ध में विमानशास्त्र के टीकाकार बोधानन्द लिखते हैं कि महर्षि भारद्वाज ने यह विद्या वेद से ली है-

निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनिः।
नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम्।।

उन्हीं ऋषियों के स्वर में स्वर मिलाते हुए तो स्वामी दयानन्द ने कहा है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'। इसको न समझकर श्री दिनकर जी ने अपने बाबा गाँधी जी के स्वर में स्वर मिलाते हुए अर्थात् 'स्वामी दयानन्द ने सूक्ष्म मूर्तिपूजा चलायी है, क्योंकि वेद अक्षर के हैं और सब सत्य विद्याओं का होना वेद में बताया है'।-यंग इण्डिया (२८ मई १९२४) इत्यादि आरोप स्वामी दयानन्द पर लगाए।

योगी अरविन्द घोष ने वेद पढ़ा था और इसके महत्त्व को उन जैसा व्यक्ति ही जान सकता था। इसीलिए स्वामी दयानन्द के विचारों से सहमत थे। अतः उन्होंने दृढ़तापूर्वक लिखा कि 'वेदों में केवल धर्म ही नहीं, अपितु विज्ञान भी है। दयानन्द के इस विचार में चौंकने की कोई बात नहीं है। मेरा विचार तो यह है कि वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी हैं, जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को भी नहीं है। इस दृष्टि से देखने पर तो यह दिखता है कि दयानन्द ने वेदों में निहित ज्ञान के विषय में अत्युक्ति नहीं, अपितु अल्पोक्ति से काम लिया है'।

-श्री अरविन्द (Dayanand, the men and his work)

एक महान् योगी और दार्शनिक के वेदों के सम्बन्ध में ये विचार जानकर श्री दिनकर जी को प्रसन्नता नहीं, अपितु पीड़ा हुई। यह एक दुःखद वृत्त है और दुःखद वृत्त भी नहीं कर सकते, क्योंकि जिन पाश्चात्य विद्वानों को आधार बनाकर उन्होंने

'संस्कृति के चार अध्याय' का सङ्कलन किया है, वे वेद और भारत के सम्बन्ध में द्वेषपूर्ण विचार रखते थे। यथार्थता तो यह है कि दिनकर जी की यह पुस्तक नेहरू जी के 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' का भाष्य या टीकाग्रन्थ कहें, तो यह सत्य के अधिक निकट होगा। इसलिए अपने इस विचार को फलीभूत होते हुए देखकर ही नेहरू जी ने एक विस्तृत प्रस्तावना इस पर लिखी। जो स्वयं दिग्भ्रान्त था, वह भारत जैसे देश का प्रधानमन्त्री बनने पर भी क्या कुछ दे पाया? जिसका अन्धानुकरण श्री दिनकर जी ने किया। दिनकर जी स्वयं ही अपनी उस कविता को भूल गये, जिसको कभी उन्होंने बड़े गर्व से लिखा था-

अन्धा चकाचौंध का मारा क्या जाने इतिहास बेचारा।
साखी हैं जिसकी महिमा के, सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल।
कलम आज उनकी जय बोल........।
क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल है।
वह क्या है जो दन्तहीन, विषहीन, विनीत, सरल है।

ये पंक्तियाँ नेहरू जी को लक्षित करके ही लिखी गई थी, क्योंकि उस समय वे ही शासक थे। अपने बाबा गाँधी जी को लक्ष्य करके भी उन्होंने लिखा था कि-

रे! रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर फिरा हमें गाण्डवी गदा, लौटा दे अर्जुन भीम वीर।
जाकर शंकर से कह दे वे, करें नृत्य फिर एक बार,
सारे भारत में गूंज उठे, हर-हर, बम-बम का महोच्चार॥

क्या ये सब उदात्त श्रेष्ठतम विचार जो दिनकर जी की पहचान थे, किसी लोभ के कारण स्वयं ही उनके द्वारा अवहेलित नहीं हुए? प्रतीत तो यही होता है। क्योंकि दिनकर जी को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए नेहरू जी ने उन्हें विदेशों में भ्रमण की सुविधा एवं राज्यसभा का सदस्य भी बनाया और अन्तिम दिन से पूर्व, तो उन्हें पद्मभूषण से भी विभूषित किया गया है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' के विचारों को पुष्ट करने के लिए ही दिनकर जी को इस प्रकार की अनर्गल पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित किया गया है। अन्यथा जिस राजनीति की बात दिनकर जी इस पुस्तक में बार-बार करते हैं, ऐसे अवसरों में पौरुष के साक्षात् मूर्त रूप वीर विनायक सावरकर तथा नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की एक पंक्ति में भी कहीं चर्चा नहीं है। चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह आदि को, तो जैसे ये जानते ही नहीं हैं। अपने समकालीन सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', श्यामनारायण पाण्डेय जैसे ओजस्वी कवियों की इस पुस्तक में कहीं चर्चा तक नहीं, जबकि दिनकर जी के आराध्य देव श्री नेहरू जी निराला जी की प्रशंसा करते हुए मंच से उतरे और वह माला निराला जी के चरणों में अर्पित कर दी। ऐसा अवसर दिनकर जी के भाग्य में शायद कभी भी नहीं आया होगा। (यह घटना प्रसिद्ध हिन्दी मासिक 'नवनीत' में किसी प्रत्यक्षदर्शी ने लिखी थी।) गाँधी जी के मरते समय मुख से राम निकलने की सर्वथा असत्य कोरी कल्पना की पुष्टि में पूरी शक्ति लगा देते हैं।

गुरुकुल कांगड़ी जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालय, अनेक अनाथालयों एवं विधवा आश्रमों के संस्थापक, कन्या गुरुकुलों के सूत्रधार तथा अछूतों के देवदूत स्वामी श्रद्धानन्द जैसे विशाल व्यक्तित्व के धनी को जैसे ये जानते ही नहीं। पानी के जहाज से, शौचालय की खिड़की से समुद्र में छलांग लगाने वाले और अनेक प्रयासों के बाद भी अंग्रेजों के नियन्त्रण में न आने वाले वीर सावरकर की इस अदम्य घटना, जिससे सारा विश्व चकित ही नहीं, अपितु आन्दोलित हो गया, विश्व के समाचार-पत्रों के पृष्ठ के पृष्ठ जिससे भरे थे, उसकी न तो दिनकर जी की पुस्तक में कहीं चर्चा है और न ही 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' में। जबकि यह घटना जब दिनकर जी दो या ढाई वर्ष के थे तब घटी थी। (संस्कृति के चार अध्याय १९५५ में तथा डिस्कवरी ऑफ इण्डिया १९४४ में लिखी गई।) सन् १९३९ में जब दिनकर जी ३१ वर्ष के पूर्ण युवा थे, उस समय गाँधी जी, नेहरू जी, पन्त जी तथा डॉ. राजेन्द्रप्रसाद आदि गाँधी समर्थकों के भारी विरोध होने पर भी गाँधी जी के समर्थित प्रत्याशी को भारी मतों से पराजित कर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस विजयी हुए थे। जो भारत ही नहीं, अपितु विश्व की अद्‌भुत घटना है कि अंग्रेजों के लाख निरीक्षण के रहते हुए भी नेताजी यहाँ से प्रच्छन्न रूप में चले गये और जर्मनी में उनके भाषण से ही उनके घोर शत्रु अंग्रेजों एवं विश्व को पता चला कि वे जर्मनी में हैं। विश्व युद्ध के समय जर्मनी से भी ९० दिन की संकटापन्न पनडुब्बी की समुद्री यात्रा करके जब जापान पहुँचे, तब उनके भाषणों से ही लोगों को पता लगा कि नेताजी अब जापान में हैं। इन शौर्यपूर्ण घटनाओं की चर्चा न करना यह प्रकट करता है कि उत्तरार्द्ध काल में दिनकर जी सर्वथा सुविधा भोगी तथा नेहरू, गाँधी के अनुयायी हो चुके थे। वैसे ही जैसे भारत भारती के ओजस्वी लेखक मैथिलीशरण गुप्त। क्योंकि उनको भी राज्यसभा का सदस्य बनना अधिक अभीष्ट था। ऐसे अनेक सुविधा भोगी लोग अपने पथ से च्युत हो जाते हैं। मैंने तो जो बहुत अर्वाचीन विषय है, जो अत्यन्त स्पष्ट है उसकी केवल मात्र चर्चा की कि उसमें क्या-क्या विसंगतियाँ एवं असत्य भरा पड़ा है। इससे सहस्रों वर्ष पुरानी बातों के सम्बन्ध में इनकी पुस्तक की क्या प्रामाणिकता रह गयी। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार के महत्त्वाकांक्षी लोग अपने को सुख-सुविधा के लिए विक्रय कर देते हैं और जिस विषय में उनकी गति व मति नहीं है, उसमें भी चञ्चुपात कर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

श्री दिनकर जी की पहचान तो राष्ट्रवादी कवि के रूप में थी और है भी। किन्तु वह इस पुस्तक के लेखन से धूमिल ही हुई है तथा उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व भी। श्री दिनकर जी ने अपनी पुस्तक के बारे में यह भी लिखा है कि यह ऐतिहासिक

पुस्तक नहीं, अपितु साहित्य की पुस्तक है, जैसे कोई इतिहास और साहित्य की परिभाषा ही नहीं जानता हो। कुछ भी हो दिनकर जी की यह पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' की भाँति भ्रामक है एवं असत्य से परिपूर्ण, सत्य इतिहास को ढकने वाली।

-प्रभात आश्रम, मेरठ।

सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी सुझाव विषयक विज्ञप्ति

परोपकारिणी सभा द्वारा सन् १९९२ में संशोधित सत्यार्थप्रकाश के रूप में जब ३७वां संस्करण प्रकाशित हुआ तो उससे पूर्व 'परोपकारी' पत्रिका के सन् १९८७ के अक्टूबर-नवम्बर अंक में एक सूचना प्रकाशित करके उसके लिए सभी आर्यजनों से सुझाव मांगे गये थे, किन्तु तब किसी भी व्यक्ति का कोई सुझाव प्राप्त नहीं हुआ था। उसके उपरान्त ही परोपकारिणी सभा ने औचित्य के आधार पर उस संस्करण का प्रकाशन करने का निर्णय लिया था।

परोपकारिणी सभा आगामी संस्करण के प्रकाशन से पूर्व विद्वानों से व स्वाध्यायी आर्यजनों से सत्यार्थप्रकाश के सम्पादन के विषय में पुनः लिखित सुझाव आमन्त्रित करती है। **सुझाव तर्क, प्रमाण और तथ्यों पर आधारित तथा संक्षिप्त होने चाहिएं।** परोपकारिणी सभा आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ व्यक्तियों को संवाद हेतु भी सादर आमन्त्रित करेगी। उनकी दक्षिणा आदि का समस्त व्यय सभा वहन करेगी।

सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि वे अपने सुझाव परोपकारिणी सभा को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

डॉ. वेदपाल (संयोजक)

चलभाष-०९८३७३७७९३८

किशोर एवं किशोरियों के संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

२८ मई से ०४ जून २०१३ (छात्रों के लिए), ०६ से १३ जून २०१३ (छात्राओं के लिए)

स्थान-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर-दल, अजमेर सम्भाग द्वारा जूडो-कराटे, आसन-प्राणायाम, संस्कार निर्माण, लाठी, भाला, तलवार, छुरिका, दण्ड-बैठक, सूर्य-नमस्कार, यौगिक क्रियाएँ एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा नैतिक, चारित्रिक व बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर शुल्क-४०० रु. प्रति व्यक्ति। कृपया अपनी प्रविष्टियाँ २७ मई तक (छात्र) तथा ०५ जून तक (छात्राओं) की अतिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

नोट : छात्राओं को आत्मरक्षा का विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा।

अपील एवं निवेदन - इस विशाल शिविर के प्रबन्ध, भोजन, आवास, मानदेय, प्रचार आदि पर काफी खर्चा होता है, जिसकी पूर्ति आप और हम सबको मिलकर करनी है। अतः आप सभी दान प्रेमी सज्जनों, संस्थाओं व आर्यसमाज से निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद, चैक, ड्राफ्ट अथवा धनादेश आदि द्वारा मंत्री परोपकारिणी सभा, अजमेर के पते पर भेजें।

सम्पर्क :- ९४१४४३६०३१, ८७६४३८२९८०, ०१४५-२४३१३३१, ०१४५-२४६०१६४ (सभा)

यतीन्द्र शास्त्री, व्यायामाचार्य, अजमेर संभाग- संचालक, आर्यवीर-दल, राज.।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का वैदिक अनुशीलन

-डॉ. सुजाता वीरेश

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का जन्म ७ अगस्त १९०४ को उ.प्र. के मेरठ जिले की गाजियाबाद तहसील के खेड़ा नामक ग्राम के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गोपीनाथ जी था जो पेशे से ओवरसीयर थे।

वैसे वासुदेव जी के कार्य को एक विद्या या विषय में बाँधना दुष्कर है। वह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने हिन्दी साहित्य को चुन-चुनकर जो रत्न दिए वह एक साथ अभी तक किसी एक लेखक ने नहीं दिए होंगे।

उन्होंने अपना कार्य हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, संस्कृत, पालि, बंगला, अपभ्रंश बृज अवधी आदि भाषाओं में तो किया ही साथ ही विषय वैविध्य की दृष्टि से पुराण, उपनिषद्, महाभारत, व्याकरण, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, दर्शन, राजनीति, लोकसाहित्य, इतिहास, पुरातत्व आदि पर चिन्तन एवं लेखन किया है।

परन्तु जो विषय उनके साहित्य में आत्मा की तरह रचा-बसा है वह है उनका वैदिक अनुशीलन। वासुदेव जी का वेदों के प्रति आकर्षण तब से प्रारम्भ हुआ जब वे १६ वर्ष के थे और उनके पिता ने एक विद्वान् पण्डित को अपने घर बुलाकर वेद का मूल पाठ कराया था। उनके ये विचार कि वेद ही मेरा बल है और वेद ही मेरे चक्षु हैं-'वेदा मे परमं चक्षुः वेदा मे परम बलम्' उनके वेदों के प्रति लगाव को दर्शाते हैं।

उनका मानना था कि रवि रश्मि के रमैया जिस तरह से संसार की तमिश्रा को भूलोक से मिटाते हैं उसी प्रकार वेद अज्ञान की तमिश्रा को भूलोक से मिटाने वाले ग्रन्थ है। वैदिक रश्मियों की अनुपस्थिति में कुछ भी सत्य और स्पष्ट दिखाई नहीं देता इसलिए हमें अपनी श्रुतियों का पठन-पाठन जीवन में अवश्य ही करना चाहिए। अपने इसी संकल्प को पूरा करने के लिए वासुदेव जी ने हिन्दी साहित्य को वेदों की वह कुंजी प्रदान की है जिसने उन्हें सन्त और आचार्य की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है।

सम्पादक कृष्ण बल्लभ द्विवेदी जी की पुस्तक 'ज्ञानमूर्ति आचार्य वासुदेव शरण अग्रवाल' का दिनांक ०९.०९.६६ को लिखा पत्र पृष्ठ १६०-में उन्होंने लिखा है-"१९५९ में मैंने जब दीर्घतमस ऋषि के अस्यवामीय सूक्त की व्याख्या लिखी जब से मेरा विश्वास हो गया कि वेद विद्या ही सृष्टि विद्या है और उसके समक्ष अन्य कोई विद्या नहीं। प्राण विद्या या जीवनीशक्ति की विद्या ही वेद है। यही सनातनी योग विद्या या प्राण विद्या है"

वासुदेव जी ने स्फुट शोधात्मक निबन्ध तथा ग्रन्थ लिखकर स्वयं के वैदिक ज्ञान का अपार भण्डार पाठकों के समक्ष खोला। उन्होंने 'विजन इन लॉग डार्कनेस' हिम ऑफ क्रियशन छन्दस्वती वाक्, ऊरूः ज्योति, वेद विद्या, स्पाईस फॉम दो वैदिक फायर, वैदिक लैक्चर्स आदि वेद विषयक शोध ग्रन्थ एवं निबन्ध लिखे।

१. ऊरूः ज्योति-उनके अनुसार वेदों में हर शब्द को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है क्योंकि प्रतीक सर्वदेशीय एवं सर्वकालिक होते हैं। ऊरूः ज्योति में तेईस विषयों पर वासुदेव जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं और वे तेईस निबन्ध हैं-द द द, कः, सप्रश्न, अंगीरस अग्नि, नमः प्रयाण यस्य सर्वमिदं-वशे, दाक्षायण हिरण्य, रूपं-रूपं प्रति रूपो बभूव, एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति, ब्रह्मपुरी, वैदिक परिभाषा में शरीर की संज्ञाएं, ब्रह्मचर्य, वाजपेय विद्या, च्यवन और अश्विनी कुमार, दाक्षायण हिरण्य, वरुण की पश्नि गौ, चैरैवेति चरैवेति, शुनः शप, पशु और मनुष्य, पाप्मा वै वत्र, योऽसावसौ पुरुषः सौऽहमस्मि, अमृत आधार, इन्द्र, अरुन्धती, आश्रम विषयक योगक्षेम। इन सभी विषयों की इतनी तर्कपूर्ण और सटीक विवेचना प्रस्तुत की गई है कि पाठक पढ़कर स्तब्ध रह जाता है। विषयों में वैदिक ज्ञान की आध्यात्मिक गंगा बह रही है। प्रत्येक निबन्ध अर्थ पूर्ण है। विषय का चयन और विश्लेषण तक पहुँचने के लिए पाठक को पहले अपने ज्ञान के स्तर और उनकी विचार धारा के साथ तादात्म्य स्थापित करना पड़ेगा। वेद के एक मन्त्र की व्याख्या में किस तरह उन्होंने प्रतीकों को पिटारे में रखी हुई वस्तुओं की भाँति एक-एक करके खोला है-

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महो देवो मर्त्या अविवेश।।

अर्थात् चार सींगों वाला, सात हाथों वाला, तीनों ओर से बन्धा हुआ रुदन कर रहा है। वह महादेव है जो मर्त्यजीवों में प्रविष्ट हो गया है। यह वषभ आत्मा है जिसके मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूपी चार सींग है। भूत, भविष्य, वर्तमान या द्यावा, पृथ्वी, अन्तरिक्ष इसके तीन पैर हैं। ज्ञान और कर्म इसके दो सिर है। सात प्राण इसके सात हाथ हैं। यह वृषभ, सत्व, रज, तम तीन बन्धनों से जकड़ा है। यह बन्धन ही असुर है और इन बन्धनों को तोड़कर इससे मुक्त होना ही देवत्व की प्राप्ति है।

शेष भाग अगले अङ्क में..........

आर्यसमाज में भी अन्धविश्वास पनपने लगा

-श्री पं. बिहारीलाल जी शास्त्री

आर्यसमाज आस्तिक संस्था है, परन्तु बुद्धिवाद को आर्यसमाज ने सदा आगे रखा है। धर्म के नाम पर आर्यसमाज ने बुद्धि विरुद्ध विषयों का सदा तिरस्कार किया है। परन्तु अब कुछ दिनों से आर्यसमाज में भी ऐसे लोग प्रकट हो गये हैं कि जो आर्य भाइयों को अंध श्रद्धा की ओर धकेल रहे हैं।

अभी-अभी हमने एक आर्य विद्वान् का भेजा हुआ पत्र देखा जिसमें उन्होंने लिखा है कि इस समय देश बड़े संकट में है, चारों ओर भारत के शत्रु गरज रहे हैं। अत: एक ''राष्ट्रभक्त'' नाम का यज्ञ होना चाहिये। यज्ञ के प्रभाव से सब शत्रु समाप्त हो जायेंगे और देश सब प्रकार से निर्भय, समृद्ध और समुन्नत हो जाएगा।

पत्र को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। यज्ञ से और शत्रु भगाने से क्या सम्बन्ध है। शत्रु हवन के धुएं से भागेंगे या तोप के गोलों से?

यज्ञ, मंगलाचरण, ईश्वर प्रार्थना आदि तो सैनिकों में उत्साह भरने मात्र को हैं। यज्ञादि युद्ध के सीधे शस्त्र नहीं हैं। यह विश्वास वैसे ही है जैसे कि जब सोमनाथ पर महमूद चढ़ा था, तो जिन लोगों ने मुकाबले की तैयारी का सुझाव दिया उनको पुजारियों ने यह कहकर चुप कर दिया कि ''भगवान शंकर स्वयं' महमूद को नष्ट कर देंगे।'' आज इस बुद्धिवादी युग में हमारे आर्य पण्डित हैं जो यज्ञ से पाकिस्तान और चीन को भगा देने का दावा कर रहे हैं।

एक संन्यासी तो अपने व्याख्यान में कह रहे थे कि ''एटम बम'' का प्रतिकार भी यज्ञों से हो सकता है। एक पण्डित, तो यज्ञों से पुत्रोत्पन्न करा देने का भी दावा करते थे। वे अपने को शृङ्ग ऋषि के तुल्य समझते थे।

दावे बहुत बढ़िया हैं यदि ये दावे सफल होने लग जायें, तो संसार भर की सरकारें याज्ञिकों के चरणों में आ गिरेंगी। अब जरा इस विषय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की सम्मति सुनिये-सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास, जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा वर्तन करना चाहिये अर्थात् जैसे सर्वोत्तम मनुष्य की प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करे उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करें। अर्थात् पुरुषार्थ उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है, ऐसी प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और न परमेश्वर उसको स्वीकार करते हैं कि जैसे-

''हे परमेश्वर आप मेरे शत्रुओं का नाश करें मुझको सबसे बड़ा, मेरी ही प्रतिष्ठा और मेरे आधीन सब हो जायें इत्यादि क्योंकि जब दोनों शत्रु एक दूसरे के नाश के लिये प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों का नाश कर दे? जो कोई कहे कि जिसका प्रेम अधिक उसकी प्रार्थना सफल हो जये तब हम कह सकते हैं कि जिसका प्रेम न्यून हो उसके शत्रु का भी न्यून नाश होना चाहिये। ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते-करते कोई ऐसी भी प्रार्थना करेगा-हे परमेश्वर आप हमको रोटी बनाकर खिलाइये, मेरे मकान में झाडु लगाइये, वस्त्र भी दीजिये और खेती-बाड़ी भी कीजिये, इस प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते हैं वे महामूर्ख हैं। क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी नहीं पावेगा।'' स्पष्ट रूप से स्वामी जी यहाँ युद्ध की जय पराजय को पुरुषार्थशून्य और प्रमाद का फल मान रहे हैं। अब यहाँ उलटा है। चीनी, पाकिस्तानियों को भगाने का पुरुषार्थ करना है, भारत सरकार के हाथ में, और यज्ञ है हमारे हाथ में। शत्रु स्रुवा से तो भागेंगे नहीं इन्हें भगाने को तो तोप, बन्दूक चाहिये, घृताहूतियों के स्थान में तोप के गोलों की आवश्यकता है। 'जटाधर: सन् जुहुधीह पावकम्'' यह यज्ञ करते रहने का ताना द्रौपदी ने युधिष्ठिर की अचल शान्ति वा पुरुषार्थ हीनता पर युधिष्ठिर को दिया है कि 'यहाँ बैठे जटा रखा कर हवन करते रहो।' पुराणों में युद्ध विजय के लिए यज्ञ करने की कथाएँ प्राय: राक्षसों और दैत्यों की आती हैं, आर्यजनों की नहीं। संसार भर में अपना राज्य स्थापित करने के लिये बलि (दैत्य) ने यज्ञ किया, असफल रहा। श्री लक्ष्मण जी को जीतने के लिए मेघनाद (राक्षस) यज्ञ करते हुए ही मारा गया। आर्य लोगों ने युद्ध विजय के लिए सदा धनुषों से बाणों की आहुतियाँ डाली हैं। अपने शरीरों का समरों में बलिदान दिया है। यज्ञ एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है और प्राकृत रोग दूर करने के लिए आयुर्वेदिक एक सुन्दर उपाय है। प्रत्येक काम के लिए यज्ञ नहीं है। यज्ञ से श्री स्वामी जी का अभिप्राय क्या है। देखिए। कोई कह सकता है कि ऐसी प्रार्थनाएँ वेदों में आती हैं। यथा। 'योऽस्मभ्यम्' अरातीयात्' आदि (यजु.)

परन्तु ऐसी सभी प्रार्थनाएँ पुरुषार्थ में उत्साह बढ़ाने के लिए है। यही ऋषि दयानन्द कहते हैं कि काम के लिए उस काम के अनुरूप ही पुरुषार्थ होना चाहिये, यज्ञों के द्वारा शत्रु को भगाने का विचार धन का नाश, समय का नाश, पुरुषार्थ का नाश और आलस्य पैदा करेगा। हाँ, इन निठल्ले पण्डितों को कई दिन तक खूब माल चरने को मिल जायेंगे और करारी दक्षिणा भी मिल जायेगी। आर्यसमाजों में भी यज्ञों और योग के नाम पर आपा-धापी चलने लगी है। संस्कृत का फूटा अक्षर भी न

जानने वाले यज्ञों में ब्रह्मा बनकर बैठ रहे हैं, वीतराग संन्यासी अर्थ लोलुप बने संस्कार विधि बगल में दबाए संस्कार के लिए लालायित फिर रहे हैं। सिद्धान्तों का प्रचार रुका पड़ा है। विद्वान् पण्डित माथा ठोक रहे हैं। यज्ञों में अशुद्ध मन्त्रोचारण, विधिहीनता, लोभजन्य, ईर्ष्या, द्वेष हमने कई स्थानों पर देखे हैं। इसीलिए यज्ञों और संस्कारों में जाना बन्द कर दिया।

मैं आर्य जनों को सावधान करता हूँ कि भ्रान्तियों से बचें। योग और यज्ञों के नाम पर ठगे जाने से बचो और इन योग और यज्ञ जीवियों को भी हम सावधान करते हैं कि-

उधरे अन्त न होय निबाहू,
कालनेमि रावण जिमि राहु।

हम यज्ञों के विरुद्ध नहीं हैं। यज्ञ भी होते रहें पर साथ-साथ यज्ञों के धुवें के साथ बौद्धिक ज्योति भी फैलती रहे और यज्ञ के नाम पर गपोड़े न मारे जायें। यज्ञों की अपनी सीमा है, तप की मर्यादा है और पुरुषार्थ का अपना क्षेत्र पृथक् है। वेदों में शास्त्रास्त्र-कृत्या, बलग (बम) आदि का उपदेश है। कवच आदि की शिक्षा है, युद्ध करने का आदेश है। आर्यजनों ने शत्रु को भगाने के लिए यज्ञ किये हों ऐसी कथायें नहीं मिलतीं, हाँ शत्रु का विध्वंस करके पूर्ण विजय के बाद आर्यों ने अश्वमेधादि यज्ञ किये हैं। रावण का विनाश करके राम ने अश्वमेध किया। हूणों को देश से निकालकर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने यज्ञ किया। यूनानियों को भगाकर पुष्यमित्र ने अश्वमेध किया। चीनी और पाकिस्तानियों को भगाने के लिए प्रथम तो सरकार का इरादा बनाना होगा। विलासिता के दास शासकों के हाथ में जब तक शासन है ये लोग युद्ध से बचते रहेंगे। पंचशील और अहिंसा से चीनी, पाकिस्तानी भागने से रहे। अत: जन जागरण रूप यज्ञ आर्यसमाज को करना है। ऐय्याशी के गड्ढे में गिरने को जाती हुई जाति को वीरता के पर्वत की ओर फेरना है। भ्रष्टाचार में फंसी जाति को पहले सदाचारी बनाना होगा। दुराचारों से कमाया धन नाममात्र के लिए लोग यज्ञों में लगा तो सकते हैं पर इससे फल तो तुम्हें होना नहीं, हाँ, यज्ञ कराने वाले पण्डितों की बुद्धि उस कृतान्न से भ्रष्ट हो जाएगी। सबसे बड़ा यज्ञ है इस समय जनता में सहयोग, संगठन की भावना उत्पन्न करना और योग है सदाचारी रहकर पूरे घोर परिश्रम से देश का उत्पादन बढ़ाना। इसके लिए साहस के साथ आन्दोलन रूप यज्ञ करो। योगदर्शन में उपदिष्ट योग यदि कोई कर सकते हैं तो बहुत सौभाग्य की बात है-पर देखना यह होगा कि यह योगी, योग के आठ अंगों में पहले दो अंग यम और नियम का भी पालन कर सके हैं या नहीं? अपरिग्रह और सन्तोष की साधना इससे हुई है या नहीं? धनदास योगी कैसा? एक उपदेशक ने अष्टग्रही योग पर आर्यसमाज में भी यज्ञ कराया। जैसे पौराणिक अष्टग्रहों का कुप्रभाव टालने के लिए यज्ञादि कर रहे थे वैसा ही आर्यसमाजियों ने किया?

(सार्वदेशिक, संस्करण-अक्टूबर १९६४ से सभार)

'नारद'

-देवनारायण भारद्वाज

करते प्रचार से परिष्कार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥

प्रभु से उन्मुक्त वेदवाणी।
जगभर की होती कल्याणी।
मानस-वाचन परिपालन से,
प्राणी बनते हैं निर्माणी।

स्वीकार नहीं एकाधिकार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥ १॥

श्रुति वायु युवा गतिमानी है।
ज्यों निर्झरणी का पानी है।
यह गुप्त-लुप्त बन्धित होकर,
बनती भीषण भयदानी है।

अप्रचार वेद का असत्कार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥ २॥

लेकर सुमन शान्ति विज्ञानी।
निर्बाध विचरती प्रभुवाणी।
हृदयंगमकारी को बनती,
आनन्द विजय की वरदानी।

दो रोक पराभव-तिरस्कार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥ ३॥

स्रोत-नमस्ते अस्तु नारदानुष्ठु विदुषे वशा।
कतमासां भीमतमा यमदत्वा पराभवेत्॥
(अथर्व. १२.४.४५)

देवातिथि 'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़, उ.प्र.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता
(०१ से १५ मई २०१३ तक)

१. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, २. एम.एम. खथुरिया, नई दिल्ली, ३. घनश्याम शर्मा, जयपुर, ४. एम.एल. गोयल, अजमेर, ५. कमला आर्या, जोधपुर, ६. जी.एस. विश्नालिया, मन्दसौर, म.प्र., ७. माता सन्तोष, दिल्ली, ८. विनय कुमार, जयपुर, ९. डॉ. वेदप्रकाश आर्य, बयाना, १०. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, ११. देवमुनि, अजमेर, १२. प्रकाशचन्द, सहारनपुर, १३. रामचन्द्र कपूर, नई दिल्ली-१९, १४. अरविन्द पाण्डा, राउरकेला, ओडिशा, १५. सुभाषनी आर्या, राउरकेला, ओडिशा, १६. शिवा जी सदाशिव, बांदरा, महाराष्ट्र, १७. वर्षा आर्या, नई दिल्ली, १८. शशि खुल्लर, गुड़गाँव, हरियाणा, १९. ब्रजलाल शर्मा, श्रीगंगानगर, २०. धर्मपाल, दिल्ली, २१. मेहता जी, अजमेर, २२. राजपुताना म्युजिक हाउस, अजमेर, २३. जी.के. शर्मा, किशनगढ़, अजमेर, २४. अक्षय व अक्षिता गोयल, अजमेर, २५. अशोक पंसारी व अंजना देवी, अजमेर, २६. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर, २७. आदित्य गुप्ता, अजमेर, २८. बालेश्वर मुनि व शान्ता बत्रा, अजमेर, २९. शशि बत्रा, सोनीपत, ३०. करण सिंह, मुजफ्फरनगर, उ.प्र., ३१. विमला रानी, मेरठ, ३२. रजनीश कपूर, पीतमपुरा, दिल्ली, ३३. शम्भुदयाल व पन्ना देवी साहनी, मुम्बई।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को निःशुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(०१ से १५ मई २०१३ तक)

१. सुशीला आर्या, मेरठ, २. बिरदीचन्द गुप्त, जयपुर, ३. ओमवती पारीक, अजमेर, ४. दीपक, निखिल, शिवनारायण, अजमेर, ५. तुलसी बाई, अजमेर, ६. धनपत कँवर, अजमेर, ७. बसन्ती शर्मा व मुक्ता शर्मा, रायपुर, छत्तीसगढ़, ८. विजयलक्ष्मी, अजमेर, ९. शकुन्तला पंचारिया, पीसांगन, १०. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, ११. रतनलाल गुप्ता, कोलकाता, १२. रतनसिंह, नारनौल, हरियाणा, १३. हंसमुनि, नारनौल, हरियाणा, १४. भरतसिंह आर्य, लुधियाना, पंजाब, १५. राजेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद, १६. डॉ. अश्विनी कुमार गुप्ता, अजमेर, १७. राजपुताना म्युजिक हाउस, अजमेर, १८. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, १९. राजू जोशी, अजमेर, २०. अमरचन्द महेश्वरी, अजमेर, २१. बालेश्वर मुनि व शान्ता बत्रा, अजमेर, २२. राधेश्याम शर्मा, अजमेर, २३. कृष्णा आर्या, नोएड़ा, २४. राजेश त्यागी, अजमेर।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

नैष्ठिक अग्निव्रत की महर्षि दयानन्द से विरुद्ध मान्यताएं-२

-सत्यजित्

गताङ्क से आगे...........

(१०) वेद, वेदोत्पत्ति आदि अनेक विषयों में इनका दृष्टिकोण महर्षि दयानन्द से भिन्न हो गया है। जिन्हें आगे दिया जा रहा है। ये अपने भाष्य को, अपनी बातों को महर्षि दयानन्द के अनुकूल बताने का व सिद्ध करने का प्रयास करते ही रहते हैं, इसे विशेष रूप से प्रचारित-प्रसारित करते हैं। ऐसे में अन्यों द्वारा महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में इन की विवेचना स्वाभाविक है। इनकी बातों को पढ़कर अनेकत्र स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे महर्षि दयानन्द से भिन्न व विरुद्ध हैं। यथा-

१. नैष्ठिक (अभिप्राय)-वेद उन छन्दों का समूह है जो सृष्टि प्रक्रिया में कम्पन के रूप में समय-समय पर उत्पन्न होते हैं। अर्थात् वेद ईश्वरोक्त नहीं हैं, वे तो सृष्टि प्रक्रिया में **स्वत: उत्पन्न** होते रहते हैं, **समय-समय** पर उत्पन्न होते रहते हैं, वे **कम्पन स्वरूप** हैं।

महर्षि-''जो ईश्वरोक्त, सत्य विद्याओं से युक्त ऋक् संहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्यों को सत्यासत्य का ज्ञान होता है, उनको 'वेद' कहते हैं।-**आर्योद्देश्यरत्नमाला ९५।**

''जिनके पढ़ने से यथार्थ विद्या का विज्ञान होता है, जिनको पढ़के विद्वान् होते हैं, जिनसे सब सुखों का लाभ होता है और जिनसे ठीक-ठीक सत्यासत्य का विचार मनुष्यों को होता है, इससे ऋक्संहितादि का नाम 'वेद' है।'' **ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्ति विषय**।

''जब-जब परमेश्वर सृष्टि को रचता है, तब-तब प्रजा के हित के लिए सृष्टि के आदि में सब विद्याओं से युक्त वेदों का भी उपदेश करता है।'' ''जो वेदों का उपदेश ईश्वर न करता तो किसी मनुष्य को विद्या का संस्कार नहीं होता।'' **ऋ.भा.भू. वेदनित्यत्वविषय**।

महर्षि ने वेदों को कहीं भी स्वत: उत्पन्न होने वाला नहीं कहा, कम्पन रूप नहीं कहा, समय-समय पर उत्पन्न होने वाला भी नहीं कहा।

२. नैष्ठिक (अभिप्राय)-वेद=छन्द=प्राण, इन्हीं से अग्नि वायु, सूर्य आदि सभी तत्त्वों का निर्माण होता है। अर्थात् मानव सृष्टि से पूर्व ही वेद की उत्पत्ति हो गई थी। सृष्टि प्रक्रिया के प्राथमिक चरण से ही वेदों की उत्पत्ति होती रहती है। वेदों के विकृत होने से आगे की सृष्टि प्रक्रिया चलती है।

महर्षि (अभिप्राय)-अग्नि, वायु आदि तत्त्वों का निर्माण प्रकृति-परमाणु आदि से माना है, वेद से कहीं भी नहीं माना। मानव सृष्टि होने के बाद ईश्वर ने चार मनुष्यों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया। अर्थात् अग्नि आदि तत्त्वों व मानव सृष्टि के बाद वेद की उत्पत्ति हुई।

''प्रथम अर्थात् सृष्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु आदित्य तथा अङ्गिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।''**स.प्र.समु.७** ''जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये.........।'' **स.प्र.समु-७।**

३. नैष्ठिक (अभिप्राय)-''सृष्टि प्रक्रिया में उत्पन्न विभिन्न छन्द ङ्कद्बङ्खल्ड्डह्लद्बश्ठ्ठह्य के रूप में इस समय भी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। इन्हीं प्राणों को अग्नि आदि चार ऋषियों ने सृष्टि के आदि में सविचार सम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था में ईश्वरीय कृपा से ग्रहण किया था और फिर ईश्वरीय कृपा से ही उनके अर्थ का भी साक्षात् किया था।'' अर्थात् चार ऋषियों ने इन छन्द=कम्पन=प्राण=वेद को समाधि में स्वयं ग्रहण किया। ईश्वर द्वारा उपदेश देने की बात यहाँ नहीं है।

महर्षि-''अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा इन चारों मनुष्यों को, जैसे वादित्र को कोई बजावे वा काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मात्र किया था, क्योंकि उनके ज्ञान से वेदों की उत्पत्ति नहीं हुई।'' **ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्तिविषय**।

''अब जानना चाहिए कि उन्हीं चार पुरुषों का ऐसा पूर्व पुण्य था कि उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया गया।'' **ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्तिविषय।**

''उन चार मनुष्यों के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश करके........।'' **ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्तिविषय**।

''वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। अन्य उनके सदृश नहीं थे। इसलिए पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया।'' **स.प्र.समु.-७।**

अर्थात् ईश्वर ने इन्हें वेद ज्ञान दिया, इन्होंने स्वयं समाधि लगाकर कम्पन=प्राण को पकड़ा, ऐसा महर्षि ने नहीं कहा। इनके पुण्यात्मा-पवित्रात्मा होने से ईश्वर ने इन्हें ज्ञान दिया, इनमें ज्ञान स्थापित कर दिया, न कि समाधिस्थ होकर इन्होंने स्वयं ज्ञान ग्रहण किया। ईश्वर ने सीधे इन्हें ज्ञान दिया, न कि ईश्वर ने प्राण-छन्द-कम्पन बनाये व उन्हें इन चार ऋषियों ने पकड़ा।

४. नैष्ठिक (अभिप्राय)-ये छन्द=कम्पन=प्राण इन जड़ प्रकृति को वेद मानते हैं। चूंकि छन्द-कम्पन-प्राण ज्ञानरूप नहीं होते, अत: इनके मत में वेद भी ज्ञानरूप नहीं कहे जा सकते।

महर्षि-''सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके

संसार में प्रकाश करता है, और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं,........वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है, इससे इनको नित्य ही जानना।''-**ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्तिविषय**। अर्थात् वेद ज्ञानरूप हैं, न कि कम्पन रूप। ईश्वर कम्पन से रहित है, पर वेद-ज्ञान से सदा युक्त है। अत: वेद को महर्षि के मत से कम्पन=प्राण रूप नहीं माना जा सकता।

५. नैष्ठिक (अभिप्राय)-वेद की नित्यता को आकाश के गुण 'शब्द' की नित्यता से सिद्ध कर रहे हैं। शब्द=ध्वनि तरंग, जो कि जड़ है, आकाश का गुण है, आकाश में उत्पन्न तरंग है। ये ध्वनि तरंगें हैं तो इनके मत में निमित्त से उत्पन्न होती होंगी व क्षीण हो जाती होंगी। अनित्य ध्वनि तरंगों से वेद की नित्यता सिद्ध नहीं होती।

महर्षि-''वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं, इससे वे स्वत: नित्यस्वरूप ही हैं, क्योंकि ईश्वर का सब सामर्थ्य नित्य ही है।'' ''शब्द दो प्रकार का होता है-एक नित्य और दूसरा कार्य। इनमें से जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध परमेश्वर के ज्ञान में हैं वे सब नित्य ही होते हैं, ...वेद भी उसकी विद्यास्वरूप होने से नित्य ही हैं।'' ''क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है.......। इस कारण से वेदों को नित्यस्वरूप ही मानना चाहिए।'' 'परमेश्वर की (निज) अर्थात् स्वाभाविक जो विद्या शक्ति है, उससे प्रकट होने से वेदों का नित्यत्व..........सब मनुष्यों को स्वीकार करना चाहिए।'' ''सर्वेषु कालेष्वव्यभिचारित्वान्नित्यत्वं......।'' सभी वचन **ऋ.भा.भू. वेदनित्यत्वविषय** से।

महर्षि वेदों का नित्यत्व शब्द=ध्वनिरूप तरंग के कारण नहीं कह रहे हैं। जिस शब्द की नित्यता कही है वह भी परमेश्वर के ज्ञान में है, वह शब्द ध्वनितरंग रूप नहीं है। अत: ध्वनितरंग रूप शब्द को न तो नित्य माना जा सकता है, न ज्ञानरूप वेद माना जा सकता है।

६. नैष्ठिक (अभिप्राय)-''वेदोत्पत्ति विषय में वेद को गायत्री आदि छन्दरूप भी कहा है।'' अर्थात् वेद व गायत्री आदि छन्द एक ही हैं, पर्यायवाची हैं।

महर्षि-''वेदानां गायत्र्यादिच्छन्दोन्वितत्वात्''-''वेदों में सब मन्त्र गायत्र्यादि छन्दों से युक्त ही हैं।'' **ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्ति विषय**। यहाँ वेदों को गायत्री आदि छन्दों से युक्त कहा है, न कि छन्दरूप। अर्थात् वेद व गायत्री आदि छन्द भिन्न-भिन्न हैं, यहाँ पर्यायवाची नहीं हैं।

७. नैष्ठिक-''वेद के तीन स्वरूप महर्षि के अनुसार ही सिद्ध हुए १. ज्ञान, २. शब्द, ३. छन्द। तब इन तीनों में कोई भेद नहीं होना चाहिए।'' अर्थात् ज्ञान-शब्द-छन्द समान स्वरूप वाले हैं।

महर्षि (अभिप्राय)-ज्ञान गुण भिन्न है, शब्द=ध्वनि तरंग भिन्न है, छन्द भिन्न है। ज्ञान गुण चेतन का होता है, यह श्रोत्रेन्द्रियग्राह्य नहीं होता। शब्दगुण जड़ में ही होता है व श्रोत्रेन्द्रिय ग्राह्य है। शब्दों (अक्षरों) के समायोजन विशेष को यहाँ गायत्र्यादि छन्द कहा जाता है, शब्द भिन्न है, छन्द भिन्न। ज्ञान, गुण परमात्मा का है, पर ध्वनि तरंग रूप शब्द व शब्द संयोजन रूप गायत्र्यादि छन्द परमात्मा के गुण नहीं हैं। जो शब्द व छन्द परमात्मा के गुण हैं वे ज्ञानरूप ही हैं, वह तो ज्ञान ही है। इस प्रकार ज्ञान-शब्द-छन्द ये तीनों भिन्न-भिन्न हैं, समान स्वरूप व पर्यायवाची नहीं।

८. नैष्ठिक (अभिप्राय)-छन्द=प्राण=वेद से अग्नि सूर्य आदि समस्त तत्व बने। अर्थात् इनके मत में वेद को कार्यजगत् का उपादान-कारण माना जा रहा है।

महर्षि (अभिप्राय)-वेद को कहीं भी कार्यजगत् का उपादान कारण नहीं माना। चूंकि ईश्वर को कार्यजगत् का निमित्त-कारण माना है, अत: ईश्वर के गुण/सामर्थ्य वेद (ज्ञान) को भी निमित्त-कारण माना जा सकता है, किन्तु उपादान-कारण कभी नहीं।

९. नैष्ठिक (अभिप्राय)-आकाशस्थ शब्द नित्य हैं। आकाशस्थ वैदिक शब्द नित्य हैं।

महर्षि (अभिप्राय)-शब्द नित्य-अनित्य भेद से दो प्रकार के होते हैं। परमात्मा के ज्ञानस्थ शब्द (जो कि ज्ञानरूप ही हैं) नित्य हैं। शेष शब्द अनित्य हैं। वेद नित्यत्वविचार के आधार पर व अन्य सिद्धान्तों के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि चूंकि आकाश एक कार्यद्रव्य है अत: उसका गुण शब्द भी अनित्य ही होगा। आकाशस्थ शब्द गुण को ध्वनिरूप शब्द की अपेक्षा से दीर्घकाल स्थाई होने से गौण रूप से नित्य कह दिया जाता है। ध्वनि तरंग रूप शब्द तो सदा अनित्य ही हैं, चाहे वे वेद के ही शब्द क्यों न हों। आकाश में एक रस भरे शब्द के साथ महर्षि ने 'वैदिक' विशेषण नहीं लगाया है।

१०. नैष्ठिक-'छन्दों (=वेद=कम्पन) के उन ऋषियों के आत्मा में प्रकाश होने का अर्थ उन्होंने उन दिव्य ध्वनियों को सुना और सुनकर के परमात्मा के सहाय से उनके अर्थों को भी जाना।'

महर्षि (अभिप्राय)-ऋषियों द्वारा वेद की ध्वनियों को सुनकर वेद को ग्रहण करने का संकेत महर्षि द्वारा नहीं मिलता। वे तो सीधे आत्मा/हृदय में उपदेश/प्रकाश की बात लिखते हैं।

''उन चार मनुष्यों के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश करके.........।'' ''उन्हीं चार पुरुषों का ऐसा पूर्वपुण्य था कि उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया गया।''-**दोनों-ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्तिविषय।**

''परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या के उपदेश में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं है। ....जीवों को अन्तर्यामी रूप से उपदेश किया है। ....जब परमेश्वर निराकार है तो अपनी अखिल

वेद विद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से उच्चारण करके दूसरे को सुनाता है।''-**स.प्र.समु.**-७।

११. नैष्ठिक (अभिप्राय)-'वेद=छन्द सृष्टि प्रक्रिया में कम्पन के रूप में उत्पन्न होते हैं।' इनके मत में उत्पन्न ये तरंगें-शब्द-ध्वनि **अव्यक्तवाक्** ही हो सकते हैं, जैसे कि संयोग-विभाग आदि के समय आज भी उत्पन्न होते हैं।

क्रिया-गति-टकराना आदि के समय जो शब्द-ध्वनि उत्पन्न होती है, वह कोई भाषा नहीं होती, उसमें वेद ज्ञान नहीं रहता, उसे वेद कहना या ज्ञान देने वाला कहना सिद्ध नहीं है। वेद को **अव्यक्तवाक्** नहीं कहा जा सकता, अव्यक्तवाक् द्वारा इतना ज्ञान नहीं दिया जा सकता।

महर्षि-वेद का ज्ञान संस्कृत भाषा में दिया, जो कि **व्यक्तवाक्** है।'' ....संस्कृत में ही प्रकाश किया, जो किसी देश की भाषा नहीं। और वेदभाषा अन्य सब भाषाओं का कारण है। उसी में वेदों का प्रकाश किया।''-**स.प्र.समु.७।**

१२. नैष्ठिक-''वेद मन्त्रों के ऊपर उल्लिखित विभिन्न ऋषि जहाँ उपकार स्मरणार्थ उन मानव ऋषियों के नाम हैं, जिन्होंने अग्नि आदि ऋषियों के पश्चात् सर्वप्रथम उस-उस मन्त्र का अर्थ साक्षात् करके संसार में प्रचार-प्रसार किया था, वहीं वे ऋषि सृष्टि में सूक्ष्म प्राण के रूप में उस समय जन्मे थे, जब उस छन्द रूपी प्राण (मन्त्र) की उत्पत्ति सर्ग प्रक्रिया में हुई थी। आज भी वे ऋषि रूपी सूक्ष्म प्राण इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं, जबकि ऐतिहासिक मानव ऋषि अब नहीं रहे।'' यहाँ ये मानव ऋषियों के अतिरिक्त **सूक्ष्म प्राण रूप ऋषि** भी मान रहे हैं।

महर्षि (अभिप्राय)-वेद मन्त्रों के ऊपर उल्लिखित विभिन्न ऋषियों को केवल मानव ऋषि ही मानते हैं। सूक्ष्म प्राण रूप ऋषि को महर्षि ने कहीं नहीं माना है। ऐसे ऋषि की कल्पना महर्षि के मन्तव्य के विरुद्ध है। वेद मन्त्रों के ऊपर लिखे ऋषि नामों से महर्षि ने कहीं भी प्राण का ग्रहण नहीं किया है, उनसे मात्र मानव ऋषियों का ग्रहण किया है।

१३. नैष्ठिक-''इन प्राथमिक ऋषि प्राणों से इन दो मन्त्र रूपी प्राणों (छन्दों) की उत्पत्ति होती है।'' अर्थात् ये ऋषि से मन्त्र की उत्पत्ति मान रहे हैं।

महर्षि (अभिप्राय)-मन्त्रों को सदा ईश्वर से उत्पन्न माना है, कहीं भी ऋषि से मन्त्रों की उत्पत्ति नहीं मानी है। महर्षि ने सदा चेतन ईश्वर से ज्ञान रूप मन्त्र की उत्पत्ति कही है, जड़ प्राण रूप ऋषि से ज्ञानरूप मन्त्र की उत्पत्ति नहीं कही है। सृष्टि प्रक्रिया में उत्पन्न अव्यक्त-ध्वनि जड़-तरंगों से ज्ञानरूप मन्त्र की उत्पत्ति कभी हो ही नहीं सकती।

१४. नैष्ठिक-''ऋषि का मन्त्रार्थ में उपयोग नहीं परन्तु ऋषि का प्रयोजन उस मन्त्र की उत्पत्ति एवं उसके सृष्टि प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव में अवश्य है।''

महर्षि (अभिप्राय)-वेद मन्त्रों के ऊपर लिखे ऋषि नाम का प्रयोजन किसी भी मन्त्र की उत्पत्ति के लिए नहीं कहा। ये ऋषि तो मन्त्रों के ज्ञाता व प्रचारक थे, न कि उत्पत्तिकर्त्ता। ये ऋषि सृष्टि बनने के बाद उत्पन्न हुए थे। अत: इनका हो चुकी सृष्टि निर्माण प्रक्रिया पर प्रभाव मानना भी महर्षि व युक्ति के विरुद्ध है।

सत्यार्थप्रकाश समु-७ में महर्षि लिखते हैं-''जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहिले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और दूसरों को पढ़ाया भी, इसलिये अद्यावधि उस-उस मन्त्र के साथ ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिखा आता है। जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्त्ता बतलावें, उनको मिथ्यवादी समझें। वे तो मन्त्रों के अर्थ प्रकाशक हैं।''

वेद मन्त्र का सृष्टि प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ने की बात भी उन्होंने कहीं नहीं लिखी। महर्षि मन्त्रों का उपदेश सृष्टि निर्माण के बाद ईश्वर द्वारा चार ऋषियों को दिया गया मानते हैं। ऐसे में वेद के मन्त्रों का सृष्टि प्रक्रिया पर प्रभाव महर्षि के मन्तव्य के विरुद्ध पड़ेगा। यदि सृष्टि प्रक्रिया पर मन्त्रों का प्रभाव माना जाए, तो महर्षि का सृष्टि निर्माण के बाद सृष्टि के आदि में वेद मन्त्रों के उपदेश का कथन खण्डित मानना पड़ेगा।

महर्षि ने कहीं भी वेदमन्त्रों पर लिखे ऋषि के नाम (शब्द) से सृष्टि प्रक्रिया को जानने में सहायता की बात नहीं लिखी। वे तो इन ऋषि नामों को मात्र मन्त्रद्रष्टा-प्रचारक-प्रसारक ऋषि के नाम के रूप में ही समझाते हैं। अग्निव्रत जी एक तरफ स्वीकार कर रहे हैं कि ऋषि का मन्त्रार्थ में उपयोग नहीं, दूसरी तरफ ऋषि का सृष्टि प्रक्रिया पर प्रभाव मानकर परोक्ष रूप से पिछले दरवाजे से ऋषि नाम का मन्त्रार्थ में उपयोग कर रहे हैं।

१५. नैष्ठिक (अभिप्राय)-बिना छन्द=प्राण=कम्पन=ध्वनि तरंगों के कोई किसी को ज्ञान नहीं दे सकता। ज्ञान देने व लेने में बीच में जड़ वस्तु का योगदान मानना ही होगा। परमात्मा भी बिना चित्त के आत्मा में ज्ञान नहीं दे सकता।

महर्षि (अभिप्राय)-परमात्मा के लिए आत्मा को ज्ञान देने हेतु किसी जड़ साधन की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह आत्मा के अन्दर भी विद्यमान है। यदि बद्धावस्था में चित्त की आवश्यकता मानी भी जावे, किन्तु मुक्ति में तो जड़ चित्त भी नहीं रहता, पुनरपि आत्मा वहाँ परमात्मा के आधार से सब को जानता है। अत: जड़ के माध्यम से ज्ञान देने की बात सर्वत्र लागू नहीं होती।

यदि नैष्ठिक जी यह स्वीकार कर रहे हैं कि परमात्मा को लिपि व वाणी की आवश्यकता नहीं, तो उनकी वेद-ज्ञान की उत्पत्ति में की गई छन्द=कम्पन=प्राण=ध्वनि की परिकल्पना स्वत: खण्डित हो जाती है। पर अपनी बात को रखने के लिए जड़-चित्त को बीच में ले आये। छन्द-ध्वनि की अनिवार्यता

पर टिके क्यों नहीं रहे? जड़-चित्त की आवश्यकता को सिद्ध करते हुए वे परोक्ष रूप से स्वमत विरुद्ध यह मान बैठे कि छन्द-ध्वनि की वेद ज्ञान देने में आवश्यकता नहीं है। किन्तु प्रस्तुति ऐसी कि जड़ माध्यम आवश्यक है अतः छन्द-ध्वनि-कम्पन भी आवश्यक हैं। अन्यों के प्रभाव से सिद्धान्त विरुद्ध बातें स्वीकार कर लेने पर फिर उसके आक्षेप से बचने के प्रयास में ऐसे परस्पर विपरीत कथन हो ही जाते हैं।

इतनी भिन्नताओं को ये यह कहकर ठीक सिद्ध करते हैं कि महर्षि के पास समय नहीं था, अतः वे सब बातें नहीं लिख पाये। महर्षि के अर्थों तक सीमित रहना मूर्खता है, अर्थात् हम आगे विस्तार कर सकते हैं। ठीक है, महर्षि के पास समय कम था, कार्य अधूरा रहा, महर्षि से आगे का कार्य हमें करना है, किन्तु इससे यह छूट नहीं ली जा सकती है कि हम महर्षि के विपरीत=भिन्न=विरुद्ध बातें भी करने लगें। वैसे वेदोत्पत्ति, मन्त्रों के ऋषि आदि विषयों पर महर्षि ने स्पष्टता से लिख ही दिया है, वहाँ कम समय की बात करना व्यर्थ है। यदि उन्हें इन वाली परिकल्पनाएं अभिप्रेत होतीं तो वे इन्हें संक्षेप से संकेत रूप में दे ही देते। इन विषयों में हम अपनी कल्पना-परिकल्पना कर तो सकते हैं, पर यदि वह महर्षि के मन्तव्य से विपरीत है तो उसको परीक्षार्थ-विचारार्थ रखना चाहिए, न कि निश्चित सिद्धान्त के रूप में। ऋषि भक्तों का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि उनकी कोई बात सिद्धान्त विरुद्ध न हो जाये। बिना विवेक के अपनी बातें रखना हानिकर है, अस्वीकार्य है। ऐसे प्रसंगों में व्यक्तिगत बड़प्पन की लालसा को छोड़कर सत्य-सिद्धान्त का आश्रय ही श्रेयस्कर हो सकता है, वही यशस्कर हो सकता है। [इस लेख में सत्यार्थप्रकाश व ऋ.भा.भू. के उद्धरण दयानन्द-ग्रन्थमाला (शताब्दी संस्करण), वैदिक-यन्त्रालय, अजमेर से लिये गये हैं।]

क्रमशः..........

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रसायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें**। आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

नये संस्करण बिक्री हेतु उपलब्ध

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक का नाम	मूल्य
१. दयानन्द ग्रन्थमाला-३ भागों का १ सैट	५५०.००
२. ऋग्वेद भाष्य भाग-५	२५०.००
३. यजुर्वेद भाष्य भाग-२	३५०.००
४. यजुर्वेद भाष्य भाग-३	२५०.००

उपरोक्त पुस्तकें नई छपकर बिक्री हेतु आ गई हैं, जो पाठकगण पुस्तकें मंगाना चाहें, तो कृपया वैदिक पुस्तकालय, केसरगंज, अजमेर से सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाषः ०१४५-२४६०१२०

वैदिक-विद्वत्परिषद्-कार्यक्रम

११ से १४ जुलाई २०१३ आर्यसमाज सैक्टर ९, पंचकूला।

गुरुवासर:-(११.०७.२०१३)

०९.००-११.३०- प्रथम: सत्र:। तत्र सर्वेषामागतानां विदुषां वैदिकविद्वत्परिषदश्च परिचय:। व्याकरणादिवेदांगेषु चर्चा। तत्र चर्चनीया: विषया:-**१.** ६३ वर्णानां स्वरूपं परस्परभेद आधारश्च। **२.** किं धातुपाठेऽर्थनिर्देश: पाणिनीयमेव?

०२.००-०४.३०- द्वितीय: सत्र:। व्याकरणादिवेदांगेषु ब्राह्मणग्रन्थेषु च चर्चा शंकासमाधानञ्च। तत्र चर्चनीया: विषया:-**१.** किं श्रौते (ब्राह्मणग्रन्थेषु विहिते) कर्मणि मांसादिपदार्थानाम् आहुतेर्विधानमस्ति क्वचित्? अन्ये च विषया: शंकाश्चामन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- तृतीय: सत्र:। व्याकरणादिवेदांगेषु ब्राह्मणग्रन्थेषु च विषयप्रस्तुति:, शंकासमाधानञ्च। **१.** समर्थ: पदविधिरिति सूत्रे कतरत् सामर्थ्यं गृह्यते? व्यपेक्षा वा सामर्थ्यमेकार्थीभावो वा सामर्थ्यं। अन्ये च विषया आमन्त्रयन्ते।

शुक्रवासर:-(१२.०७.२०१३)

०९.००-११.३०- चतुर्थ: सत्र:। दर्शनेषु चर्चा। **१.** न्यायवैशेषिकयोर्दृष्ट्या आत्मा विभु: स्विद्भवति३ अणु: स्विद्भवति३। २. जीवन्मुक्तावस्था पूर्वा स्विद्भवति३ ईश्वरसाक्षात्कार: पूर्व: स्विद्भवति३।

०२.००-०४.३०- पंचम: सत्र:। दर्शनेषु चर्चा शंकासमाधानञ्च। विषया: शंकाश्चामन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- षष्ठ: सत्र:। दर्शनेषु विषयप्रस्तुति: शंकासमाधानञ्च। विषया आमन्त्रयन्ते।

शनिवासर:-(१३.०७.२०१३)

०९.००-११.३०- सप्तम: सत्र:। धर्मशास्त्रे चर्चा। तत्र विषया:-**१.** किं कर्मफलं कर्तु: पुत्राय नप्त्रे वा कदाचित् प्राप्तुं शक्यते? २. यत् सुखं दु:खञ्च जीवात्मना प्राप्यते तत्सर्वं किं कर्मफलमेव?

०२.००-०४.३०- अष्टम: सत्र:। धर्मशास्त्रे चर्चा शंका-समाधानञ्च। विषया: शंकाश्चामन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- नवम: सत्र:। धर्मशास्त्रे विषयप्रस्तुति:, शंकासमाधानञ्च। विषया आमन्त्रयन्ते।

रविवासर:-(१४.०७.२०१३)

१०.३०-१२.३०- दशम: सत्र:। अवशिष्टविषयेषु चर्चा। विषया आमन्त्रयन्ते।

०७.३०-०९.३०- एकादश: सत्र:। भावियोजना, स्वविचारा:, धन्यवादज्ञापनञ्च। समाप्तश्च द्वितीयो विद्वत्समावेश:।

अत्र केचन विषया ध्यातव्या:-**०१.** संवाद: संस्कृतभाषामाध्यमेनैव भवति। **०२.** आमन्त्रितविद्वद्भ्योऽन्येषां जिज्ञासूनां समावेशे पूर्वानुमत्या प्रवेशो भवितुमर्हति। **०३.** आवास-भोजनव्यवस्था आर्यसमाज-पंचकूला से-९ (चंडीगढ़)-द्वारा क्रियते। यात्राव्ययं तु समान्यरूपेण विद्वांस: स्वपक्षादेव करिष्यन्ति। कश्चिद्यात्राव्ययमपेक्षते चेत्परिषदा सा व्यवस्था कर्तुं शक्यते। **०४.** ये जना: बसयानेन आगच्छन्ति, ते अंबाला-चंडीगढ़-नगरयोर्मध्ये स्थितात् जिरकपुर-नगरात् पंचकूला-सेक्टर-९, १० कृते यानं गृहीत्वा से-९ आगच्छेयु:। मार्केट निकषा आर्यसमाज:। ये जना रेलयानेन आयान्ति, ते चंडीगढ़-रेलवे-स्टेशनत: आटोयानेन से-९ आर्यसमाजम् आगच्छेयुरिति। **०५.** आवास-भोजनव्यवस्था बुधवासर-सायंकाल-प्रभृति सोमवासर-प्रात:काल-पर्यन्तं भविष्यति। **०६.** प्रत्येकस्मिन् सत्रे तत्र निर्दिष्टेषु विषयेषु पूर्वविषयस्य विचारणस्य समाप्तावेवाग्रिमविषयस्य विचारणमारप्स्यते। **०७.** निर्णयाभावेऽपि गतिरोधादिकारणाननुभूय संयोजक: संचालको वा तद्विषयकविचारणं समाप्तुं शक्नोति। **०८.** आवश्यकानि पुस्तकानि सहैवानेष्यन्ति चेत्सौविध्यं भविष्यति। गमनागमनसूचनां यथाशीघ्रम् ईमेल द्वारा vaidikvidvatparishad@gmail.com संकेत वा SMS द्वारा वा दूरभाषामाध्यमेन वा (संपर्क संख्या ९४६८१५५२१९ आचार्य-रवीन्द्र:, ९४१६४८८२६२ आचार्य-वेदव्रत:) सूचयेत्। **१०.** 'चर्चा' शब्देन सिद्धान्तमतभेदेषु पक्षप्रतिपक्षाभ्यां वादो गृह्यते। 'विषयप्रस्तुति' शब्देन कस्यापि दुर्गमविषयस्य सरलीकृत्य प्रस्तुति:। तदर्थं प्राय: १५ कला: समयो दीयते। तत्पश्चात् प्राय: तावान् एव समय: शंका-समाधानार्थं दीयते। **११.** उपरोक्तरीत्या चर्चार्थं विषयप्रस्तुत्यर्थं च विषया आमन्त्रयन्ते। विषयप्रेषणार्थं अन्तिमा तिथि: ३०.०५.२०१३ भविष्यति। विषयान् ईमेल द्वारा वा पत्र द्वारा वा प्रेषयेयु:। पत्रसंकेत:-आचार्य-वेदव्रत: श्रुतिविज्ञान-आचार्यकुलम्, ग्राम-छपरा, पो-जन्धेडी, शाहबाद मारकंडा, जिला-कुरुक्षेत्र, हरियाणा-१३६१३५ **१२.** स्वीकृतविषयेषु चर्चार्थं सप्रमाणं स्वपक्ष: विषयप्रस्तुत्यर्थं च स्वविषयस्य सारसंक्षेप: प्रेषणीयो भविष्यति। तदर्थं अन्तिमा तिथि: २०.०६.२०१३ भविष्यति।

क्षणभंगुर जीवन

–सुभाष लखोटिया

बचपन से आप और हम सुनते आ ही रहे हैं कि जिन्दगी का सफर क्षणभंगुर है। इक पल हंसी–खुशी और अगले पल में ग़म, यही तो है जिन्दगी की सच्ची हकीकत की दास्ताँ। ऐसे क्षणभंगुर जिन्दगी को याद करते समय आपके और हमारे मन में समय–समय पर विचार आ जाता है कि इस क्षणभंगुर जिन्दगी में हम क्या करें, और क्या न करें?

पिछले छ: महीने में दो हादसे हुए, जिन्होंने मेरे मानस पट पर एक प्रश्न चिह्न लिख डाला, सबसे पहले जो हादसा हुआ वह यह कि हमारे लॉयन्स क्लब के एक पूर्व अध्यक्ष का अचानक बिमार हो जाना और अगले चार घण्टों में ही उनकी जीवन लीला समाप्त होना और आत्मा का प्रभु की तरफ प्रस्थान करना। ये हमारे मित्र, जिनकी उम्र ६० वर्ष से कम थी, वे नियमित व्यायाम करते थे। दैनिक दिनचर्या भी बड़ी ही व्यवस्थित थी। कार्य में भी तनाव नहीं करते थे। मैनेजमेंट की खूबियों को स्वयं की जिन्दगी में बखूबी पालन करते थे, पर अचानक एक दिन सवेरे ४ बजे थोड़ा सा दर्द हुआ, सोचा पेट में वायु हो रही है परन्तु दो–चार घण्टे बाद जब अस्पताल में ले गए, तो उनके परिजनों को मुर्झाई हुई नजरों से डॉक्टर साहब की बात सुनने को मिली कि उनका यह शरीर मुर्दा हो चुका है। सैकड़ों मिलने वाले परिजन और दोस्तों के बीच में प्रश्न यही आता रहा कि आखिर हुआ क्या और ऐसा क्यों हुआ जो व्यक्ति व्यवस्थित ढंग से जिन्दगी यापन करता था उसकी जिन्दगी में एक क्षण में मौत ने आखिर क्यों आ कर दस्तक दे दी। इसी प्रकार पिछले दिनों, रात में टेलीविजन की मेरी शूटिंग के दौरान मैंने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को फोन किया और मेरी अनुपस्थिति में कुछ फोन वगैरह आए हों, तो उसकी जानकारी ली और आने वाले कल के लिए ऑफिस के कार्यों की चर्चा की तब तक रात के ८.०० बज चुके थे और मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी के साथ मेरा वार्तालाप हुआ। अगले दिन सवेरे, जब मैं अपने कार्यालय में जरा जल्दी बैठ गया कुछ आवश्यक कार्यों की वजह से, तो अचानक फोन आया कि मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी की अचानक कल रात को ही मृत्यु हो गयी। ये खबर सुनने के पश्चात् मुझे मेरे टेलीविजन के कार्यक्रम की शूटिंग के लिए प्रस्थान करना था, परन्तु मन था बड़ा विचलित और मन बार–बार यही बोल रहा था कि वास्तव में जिन्दगी का सफर तो क्षणभंगुर है। ऐसे में विचार यही आने लगा मन में और मैं सोचता रह गया कि ऐसे में आखिर आपको और हमको बल्कि सारे विश्व को पता है कि वास्तव में जिन्दगी का सफ़र क्षणभंगुर है, अगले पल का हमें और आपको किसी को पता भी नहीं पर मन में द्वन्द्व और मन में प्रश्न यही था कि आखिर इस क्षणभंगुर जीवन के दौरान हम करें तो क्या करें?

क्षणभंगुर ज़िन्दगी के बारे में अगर हम ज्यादा सोचते रहें और हर पल ही इस बारे में चिन्ता करते रहें तो ये बात निश्चित है कि हम दु:खी हो जायेंगे। ज्यादातर समय हमारा मानसिक सन्तुलन बिगड़ता रहेगा, हम जिन्दगी से निर्मोही हो जायेंगे और हम डर के चक्रव्यूह में फंसे रहेंगे, अत: यह हकीकत जानते हुए भी जीवन क्षणभंगुर है अगर आप इस जिन्दगी का लुत्फ उठाना चाहते हैं, तो केवल यह ध्यान रखें कि प्रति पल इस जीवन यात्रा में, जिन्दगी का आनन्द लेते जाइये और मन को प्रतिक्षण मस्ती में रखते हुए इस जीवन यात्रा को सुगमता पूर्वक चलाते रहें। न तो आने वाले कल की करें चिन्ता और न बीते हुए समय का करें गम और चलते रहें वर्तमान समय में। साथ ही इसे प्रभु का ही प्रसाद मान कर कि जैसे चल रही है जिन्दगी, उसी धारा में हम चलते जायें, अनवरत, अविचलित, तो हमें लगेगा कि जिन्दगी वास्तव में प्रभु का हसीन तोहफा है। जिसके लिए प्रभु को धन्यवाद देते हुए और सुगमतापूर्वक, आनन्दमयी स्थिति में प्रतिक्षण रहते हुए, जीवन यात्रा में चलते रहें।

जब हकीकत का हमने कर लिया सामना और मन में बैठ गई हमारे यह बात कि वास्तव में जीवन क्षणभंगुर है तो ऐसी परिस्थिति में, उत्तर तो यह होगा कि हम आज और अभी से केवल पैसे की तरफ से लालसा को हटा दें, और मोड़ दें अपने जीवन को सृष्टि के उन कार्यों की तरफ जहाँ पर मिलता है, हमें सच्चा आनन्द और शुद्ध आनन्द। यह स्थिति तो उस समय ही आएगी जब आप और हम केवल नि:स्वार्थ भावना से समाज के लोगों की तरफ उपकार करने की वृत्ति अपनाने में संलग्न हो जायेंगे। अत: जीवन यात्रा को क्षणभंगुर मानते हुए प्रतिक्षण केवल शुद्ध आनन्द प्राप्त करने की लालसा रखें और थोड़ी सी, पैसे की तरफ लालसा कम करें। साथ ही साथ सोचें यह कि जब हकीकत यही है जिन्दगी की, कि अगले पल का आपको, न मुझे और न किसी को पता है, तो ऐसे में क्यों नहीं हम और आप अपनी बची हुई जिन्दगी को थोड़ा सा स्वयं की आत्मा के सुख के लिए ध्यान एवं चिन्तन में समय लगायें अपना। अगर यह सोच आपकी और हमारी रहेगी तो इस क्षणभंगुर जिन्दगी के बारे में हम सोचना कर देंगे बन्द और लग जायेंगे प्रतिक्षण केवल आनन्द की प्राप्ति करने की इच्छा को साकार रूप देने में।

अगर हम केवल प्रतिक्षण यही सोचते जायें कि जिन्दगी

वास्तव में क्षणभंगुर है, तो यह विचार हमें हमारी जिन्दगी में डिप्रेशन ला सकता है और प्रतिक्षण हमारे मन की विचारधारा को तनावपूर्ण वातावरण में रख सकता है। अत: केवल यह सोचते रहें कि इस क्षण का प्रभु को धन्यवाद दे दूँ कि क्षणभंगुर जिन्दगी के बावजूद भी मैं इस पृथ्वी पर विचरण कर रहा हूँ और प्रभु कि जब तक कृपा होगी तब तक मैं इसी पृथ्वी पर अपने कार्यों को क्रियाशील कर पाऊँगा और इस विचारधारा के साथ जीवन को आगे बढ़ाते जायें और लेते जायें आप अपनी जिन्दगी की मौज और मस्ती का आनन्द।

समय थोड़ा निकाल कर जरा चिन्तन करें और मनन करें कि असली मौज और मस्ती, जिन्दगी के किस-किस कार्यों को करने में आप को मिल सकती है। जरा जल्दी सोचेंगे तो शायद एक पृष्ठ पर दस, बीस या उससे भी ज्यादा बातें आप लिख पायेंगे जो आपको अपनी जिन्दगी की मौज, मस्ती और आनन्द प्रदान कर देगी, परन्तु इन सभी बातों पर थोड़ा मनन और चिन्तन करते रहेंगे आप समय-समय पर, तो अन्त में इस निष्कर्ष पर निश्चित रूप से पहुँच पायेंगे कि क्षणभंगुर जिन्दगी में असली आनन्द आपको तभी मिलेगा जब आप नि:स्वार्थ भाव से सेवा में लगे रहेंगे और सेवा भी ऐसी जो ऐसे व्यक्तियों के लिए की जाए जिनसे न हो हमारा कोई सम्बन्ध और न हमारा कोई लेना-देना। उसी से सच्चा आनन्द हमें मिलेगा। साथ ही साथ परिवार जनों के लिए भी कुछ ज्यादा करने की तमन्ना अगर आपके मन में रहेगी तो निश्चित रूप से आपको मिलेगा आनन्द और परमानन्द। आने वाले स्वर्णकाल की सोच भी मस्तिष्क में समय-समय पर लाते जायें और आने वाले कल की खुशी को मस्तिष्क में रखकर भी आप काफी प्रसन्नता अपनी जिन्दगी में महसूस कर सकते हैं।

अगर आपके विचार में आपके दिल में भी क्षणभंगुर इस जिन्दगी के बारे में कोई विचार बिन्दु आए, तो कृपया मुझे इस पते पर लिख डालें अपने मन की सीधी-सीधी भावना-**एस-२२८, ग्रेटर कैलाश-२, नई दिल्ली-११००४८, चलभाष-९८१०००१६६५**

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

मनुष्यों को योग्य है कि उत्तम-उत्तम विमान आदि यानों को रच, उनमें बैठ, उनको यथायोग्य चला, श्येन पक्षी के समान द्वीप वा देश-देशान्तर को जा, धनों को प्राप्त करके वहाँ से आ और दुष्ट प्राणियों से अलग रह कर सब काल में स्वयं सुखों का भोग करें और दूसरों को करावें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.३४।**

आत्म-निरीक्षण

-रमेश मुनि

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः, तपो न तप्तं वयमेव तप्तः। कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।। (भर्तृहरि वैराग्य शतक १२)

हम जिस घर में रहे हैं। उसके बारे में कभी विचार किया है कि यह किसका है? यह घर ईश्वर का दिया हुआ मानव शरीर है। यदि इस शरीर के बारे में गहराई से सोचें, तो पता चलेगा कि यह व्याधियों का घर है जो हमारे से भी अधिक शक्तिशाली है। **''शरीरं व्याधिमन्दिरम्''** शरीर व्याधि का घर है। **''जराशोक-समाविष्टम् रोगायतनं आतुरं रजस्वलं अनित्यं च भूतावासम्''** अर्थात् बुढ़ापा शोक मिले हुए हैं, रोग का घर है, दुःखी, खून से लथपथ, अनित्य और भूतों का घर यह शरीर है, इसे छोड़ देना चाहिए।

हम कहते हैं यह शरीर मेरा घर है, व्याधि कहती है यह मेरा घर है। इसलिए रोग की हमारे साथ टक्कर होती है। यदि हम किसी ऐसी गुफा में जाएँ जिसमें चमगादड़, सांप, बिच्छू रहते हैं जो अपना काम करेंगे तो हम विचार करेंगे कि हम गलत स्थान पर आ गए। यही स्थिति इस शरीर की भी है। यह व्याधियों का घर है इन्हें इसमें रहना ही है। ऐसी स्थिति में इसको हमें अपना नहीं मानना चाहिए। ऐसा विचारने पर लगेगा हम गलत स्थान पर आ गए हैं, तो वापिस जाने का विचार बनायेंगे। यदि शरीर को अपना मानेंगे तो व्याधि को भगाने की कोशिश करेंगे। रोगों की प्रतिकूलता शरीर में सदा रहेगी। शायद ही कोई दिन ऐसा होता होगा जिस दिन अनुभव हो आज बिलकुल ठीक है। अतः शरीर के बारे में कभी भी निश्चिन्त न हों, यह कभी भी धोखा दे सकता है। रहना भी इसी में है तो करें क्या? यदि घर छोड़कर आश्रम या जंगल में भी चले जाएँ, तो भी इसी शरीर में तो रहना ही है-इसके लिए दो उपाए हैं-**पहला**-शरीर पर अधिकार पूर्वक रहें, रोगों का आक्रमण तो होगा लेकिन हमे दबना नहीं है, दुःखी या हताश नहीं होना। इसमें दोनों को ही रहना है। हमें अपना काम (लक्ष्य प्राप्ति) इसी में रहकर ही करना है। यह मत सोचो कि पहले इसे दूर कर दें फिर अपना काम करेंगे। ऐसा विचारने पर हम पिछड़ जायेंगे। यह सोचें इसे भी रहना है। मुझे इसके रहते ही अपना काम करना है। हताश या निराश नहीं होना धैर्य रखें क्योंकि हमारा काम मुख्य है। आश्रम या वन में ही नहीं अपितु रोग तो धनी-सम्पन्न घरों, बंगलों में रहने वालों में होते ही हैं अपितु अधिक होते हैं। फिर भी वे अपनी गृहस्थी घर-परिवार या व्यापार आदि करते ही रहते हैं। इसलिए हमने योगाभ्यास या तपस्या आदि का जो लक्ष्य बना लिया है उसे छोड़ने का विचार मन में नहीं लाना चाहिए। इस प्रकार से हमारा शरीर पर अधिकार हो जाएगा और रोगों के साथ हमारा समझौता हो जाएगा साथ-साथ रहने का।

यदि विचार किया कि रोग को भगाकर लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न करूँगा, तो यदि आज रोग चला भी जाएगा तो फिर नया रोग आक्रमण कर सकता है। वास्तव में यह शरीर हमारे रहने का है ही नहीं ईश्वर ने कर्मफल अनुसार इसमें भेजा है तो किसी तरह निपटाना चाहिए, लक्ष्य प्राप्त करना है इसलिए अधिकार करके रहें।

दूसरा-दान की बछिया के दांत किसने गिने हैं? अर्थात् शरीर से जितना लाभ लिया जा सके ले लिया जाए वही पर्याप्त है। इसी में सन्तोष करें, यह शरीर कभी भी छूट सकता है, रहने तक जितना योगाभ्यास, दान, परोपकार के कार्य किए जा सकते हैं, कर लेने चाहिएँ। यह ईश्वर ने दान में दिया है, मेरे पास यह शरीर ईश्वर की धरोहर है, जितना उपकार किया जा सकता है कर लूँ। ऐसा सोचने पर दुःख नहीं होता। यह स्थिति-व्यवहार-काल और योगाभ्यास दोनों के लिए है।

शरीर को स्वस्थ और पुष्ट रखने का प्रयास अवश्य करें, रोग आदि आते हैं तो रोकने और दूर करने का प्रयास अवश्य करें। रोगों का आना स्वाभाविक है। ऋतु और प्रतिकूल भोजन का प्रभाव तो अवश्य होता ही है। जितना समय और साधन मिलते हैं उनका सम्यक् प्रयोग कर शरीर को सुरक्षित रखें उतना अच्छा है। ऐसा न हो कि पहले व्यायाम किया नहीं, करने लगे तो बहुत अधिक कर लिया इससे भी हानि होती है। व्यायाम-प्राणायाम अपने अभ्यास-स्वास्थ्य और ऋतु को देखकर करें। स्वास्थ्य के तीन स्तम्भ हैं-

आहार-निद्रा-ब्रह्मचर्य पालन।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

यज्ञ के अनुष्ठान के विना उत्साह, बुद्धि, सत्यवाणी, धर्माचरण की रीति, तप, धर्म का अनुष्ठान और विद्या की पुष्टि का सम्भव नहीं होता और इनके विना कोई भी मनुष्य परमेश्वर की आराधना करने को समर्थ नहीं हो सकता। इससे सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान करके सबके लिये सब प्रकार आनन्द प्राप्त करना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.७।**

मेरी उन्नति का पहला क़दम

-नारायण प्रसाद 'बेताब'

'क़ता'

आपकी यह रोशनी बरक़ी मुबारक आप को,
हम तो हैं ममनून अपन काग़ज़ी क़न्दील के।
ग़ैर की दौलत बड़ी भी है तो इस से फ़ायदा?
काम में चिड़िया के, आ सकते हैं क्या पर चील के?

घटना बहुत पुरानी है और घटना से अधिक मैं स्वयं पुराना हूँ। चाहे कालचक्र, कर्म-फल भोगने के बहाने से मुझे और भी पुराना कर दे, तो भी मेरे लिए वह घटना पुरानी नहीं होगी, बल्कि नित नई बनी रहेगी।

पराया धन दबा लेने से कुछ कल्पित संतोष हो जाता है परन्तु आत्मिक शान्ति कदापि नहीं होती। हो कहाँ से? वह निकृष्ट धन पास नहीं रहता, किसी न किसी रास्ते से निकल ही जाता है। इसका उदाहरण प्रकृति देवी सदैव हमारे सामने उपस्थित करती है, परन्तु खेद है कि हम देखते हुए भी नहीं देखते। देखिए-कृषिकार का थोड़ा सा अन्न पृथ्वी दबा लेती है, तो वो अन्न फूट-फूट कर निकलता है; धरा देवी एक-एक दाने के हज़ार-हज़ार दाने देकर पीछा छुड़ाती है। नित्य लेने के देने पड़ते हुए देखकर जो लोग पराया धन दबाने में नहीं चूकते वो अपने भविष्य को संकटमय बनाते हैं।

आज जो मैं श्री व्यास और शुकदेव मुनि बनकर यह उपदेश कर रहा हूँ, घटना वाले दिन मुझे यह सामर्थ्य, यह सलीका, यह साहस नहीं था कि यथा प्राप्त में सन्तुष्ट रहने की महिमा या पराया धन दबाने की निन्दा का वर्णन कर सकूँ; हाँ, पूर्व जन्म के किसी उत्तम संस्कार से यह जानता था कि जो धन हमारे हाथ में आता है, उसका ज्ञान धनी को भी है तो वो बुरा नहीं; इसके विरुद्ध जिस आते हुए धन का इल्म अस्ल मालिक को नहीं है वो बुरा है।

भयानक अँधेरे में जहाँ न सूरज की किरनें मौजूद हों, न गैस का हंडा, न बिजली का गोला हो, न मिट्टी के तेल की लालटेन, वहाँ एक माचिस का क्षणिक प्रकाश भी महाशीर्वाद रूप होता है। मेरे पास भी न विद्या का प्रकाश था, न सत्संग का उजाला, सद्ग्रन्थों की ज्योति थी, न सदुपदेशों की रोशनी। इस अन्धकार के समय जबकि मैं स्वर्ग और नरक के दुराहे पर खड़ा था, अपनी ज़रा सी सावधानी को दीप-शलाका मान लूँ तो क्या कोई पाप है? क्योंकि मैं इसी चमक से चमककर स्वर्गाभिमुख हो गया था।

क़ैसरे हिन्द प्रेस में कुछ दिन काम करने के बाद श्रीमान लाला देवी सहाय जी ने कह दिया कि तुमको ४ रुपये मासिक मिला करेंगे। महीना पुरा हुआ, तन्ख़्वाह बँटने का दिन आ गया; सबके साथ मैं भी पे-शीट पर हस्ताक्षर करके, जीवन-सामग्री को मुट्ठी में दबाए हुए अपने कार्य स्थान पर आ गया। मुट्ठी खोलकर जो देखता हूँ तो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधक चार रजतखण्डों के बदले पंचानन महादेव की दया का प्रमाण, नृपाननांकित पंच देव के दर्शन हो गए जो मेरे जैसे भूखे व्रती के लिए पंचामृत हो सकते थे। क्षुत्पिपासा के वेग में पंचामृत को चाट जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है; तुषितोष्ठ पुरुष ऐसे अवसर पर चुस्की भरने में आगा-पीछा नहीं देखा करते। मेरा पाँव भी डगमगा जाता तो नकर कुंड समीप ही था क्योंकि मैं चारवाक् का चेरा, पंचामृत का पात्र ही नहीं था; परन्तु धन्यवाद उस ईश्वर का जिसने मुझे उस समय सँभाल लिया। अन्तरात्मा ने समझाया कि तू चार रुपए का नौकर है, पाँचवाँ भूल से आ गया है; यह तेरा नहीं, पराया है, इसलिए एक लौटा दे और चार पर ही सन्तोष कर।

सँभाल अपना ही कम्बल, छ न ग़ैरों के दुशाले को।
यह कुंजी खोल देगी एक दिन क़िस्मत के ताले को।।

इस गुप्त आवाज़ को सुना, कि वहीं सँभल गया। यही मेरे उत्थान का पहला क्षण और उन्नति का प्रथम पग समझिए। पग उठा और बढ़ा, साथ ही मैं भी उठा और बढ़ा। फ़ौरन लालाजी की टेबल के पास पहुँचा और एक रुपया सामने रख दिया। लालाजी कहने लगे, "क्या रुपया खराब है? बदल दूँ?" मैंने कहा, "जी नहीं," फिर उन्होंने पूछा कि, "इसकी ख़रीज चाहिए?" मैं बोला, "जी नहीं, यह ज़ियादा आ गया है," यह सुनकर लालाजी ने जिस निगाह से सर से पाँव तक मुझे देखा, उसका अर्थ कह देना कवियों के लिए भी कठिन समस्या है।

फ़कत देखा, मगर मुँह से, न वो बोले न मैं बोला।
नज़र उनकी तराज़ू थी, निगाहों में मुझ तोला।।
प्रतिष्ठा बढ़ गई चुपके ही चुपके इस भिकारी की।
गढ़ी पाताल में कीली, मेरी ईमानदारी को।।

लालाजी ने आँखों से परखकर मुझे और मेरे भाव को दिल में रख कर कहा, "भूल में नहीं, हमने जानकर ही एक रुपया अधिक दिया है; ले जाओ।" १६ आने का लोभ त्यागने से १६ आने विश्वास का सिक्का उनके दिल पर बैठ गया, एक रुपए को अपना-पराया पहचानने से वह रुपया भी हाथ से न गया और सैकड़ों रुपए देने वाली टकसाल का दरवाज़ा खुल गया।

भिकारी था स्वयं उस वक्त, मैं दाता को क्या देता।
निजासन पर चला आया उन्हें दिल से दुआ देता।।

-बेताब चरित, मंजिल १०।

पुस्तक-परिचय

१. नाम-महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण जीवन-चरित्र, **पृ. संख्या**-५९५, **लेखक**-पं. लक्ष्मण जी आर्योपदेशक, **प्रकाशक**-राजेन्द्र 'जिज्ञासु', **मूल्य**-९००।

पं. लक्ष्मण जी आर्योपदेशक लिखित इस जीवन-चरित्र का इसलिए महत्त्व है क्योंकि इसे ऐसे लेखक ने लिखा है जिसने स्वयं ऋषि को देखा और सुना है। जीवन-चरित्र सम्बन्धी इतनी अधिक सामग्री इस पुस्तक में है कि कोई ऋषि जीवन पर लिखने वाला व्यक्ति इसके बिना अधूरा ही होगा। मूल ग्रन्थ उर्दू में लिखा गया था। अत: हिन्दी भाषी पाठक इससे इतने लम्बे समय तक वञ्चित ही रहे। हमारा सौभाग्य है कि जिज्ञासु जी जैसे योग्य और इतिहास मर्मज्ञ व्यक्ति ने न केवल इस गुरुतर उत्तरदायित्व को स्वीकार किया अपितु उसे पूर्णता तक पहुँचाया भी। ऋषि जीवन का प्रथम खण्ड प्रकाशित होकर पाठकों के हाथ में है। यह गौरवपूर्ण कार्य करने के लिए प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु बधाई के पात्र हैं।

जिज्ञासु जी का व्यक्तित्व ऐसा है कि इनसे कोई असहमत तो हो सकता है, परन्तु इनसे दूर होने की कल्पना नहीं कर सकता। उनकी निष्ठा, योग्यता और उत्साह ये सब बातें किसी एक व्यक्ति में मिलना कठिन है। वे अस्सी वर्ष की आयु में भी जिस उत्साह और लगन से काम करते हैं वह युवकों के लिए प्रेरणा देने वाला है। इस ग्रन्थ को उत्कृष्ट बनाने के लिए जो प्रयास उनके द्वारा किये गये उनको देखकर कोई भी उनके परिश्रम का मूल्यांकन कर सकता है। पुराने समय के लेखक उर्दू-फारसी के योग्य विद्वान् होते थे, उनके लेखों का अनुवाद करने के लिए कितनी बार शब्दकोषों का आश्रय लेना पड़ता है। सभी पुराने ऋषि जीवन के साहित्य का अवगाहन कर उनके गुण-दोषों पर दृष्टि डालकर अपनी कृति में संशोधन, परिवर्तन-परिवर्द्धन करना सूक्ष्म शोध दृष्टि के बिना संभव नहीं है। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं से तिथि और तथ्यों का प्रमाणीकरण भी एक श्रमसाध्य कार्य है। जिज्ञासु जी ने घटनाओं और विवरण के लिए मूल दस्तावेज, फोटो संकलित करके इस ग्रन्थ को प्रामाणिक बनाने में आधार का कार्य किया है।

ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ को क्यों पढ़ना चाहिए इस पर बड़ी सटीक टिप्पणी लिखी है, जिसे पढ़कर पाठकों की इस पुस्तक को पढ़ने की लालसा तीव्र हो उठेगी-

इसे पढ़िये-क्यों?-महर्षि दयानन्द जी का यह जीवन-चरित्र कई दृष्टियों से बेजोड़ है। इसके लेखक का, ऋषि के सम्पर्क में आये तथा उनको सुनने वाले अनेक व्यक्तियों से सम्बन्ध रहा। इस ग्रन्थ में पर्याप्त ऐसी सामग्री है, जो आपको किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं मिलेगी। पं. लेखराम जी के पश्चात् श्रद्धेय लक्ष्मण जी ने ही इस ग्रन्थ को लिखते हुए अनेक नये तत्कालीन पत्रों का उपयोग, प्रयोग किया। 'प्रकाश' साप्ताहिक उर्दू ने ही आर्यसमाज में विशेषाङ्कों की परम्परा चलाई थी। प्रकाश के ऋषि-अंकों में समय-समय पर ऋषि दर्शन करने वाले कई भारतीयों के लेख व संस्मरण छपते रहे जिनका लक्ष्मण जी ने भरपूर लाभ उठाया। लेखक ने २५ वर्ष का लम्बा समय ऋषि जीवन की खोज में खपाया।

ग्रन्थ के अनुवादक सम्पादक श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ने कई परिशिष्ट व पाद-टिप्पणियाँ देकर इस समय सर्वथा अप्राप्य पत्रिकाओं, पुस्तिकाओं, रिपोर्टों तथा अन्य दस्तावेजों के प्रमाण देकर ग्रन्थ की गरिमा को चार चाँद लगा दिये हैं। यत्र-तत्र ऋषि जीवन पर किये जाने वाले प्रश्नों, आपत्तियों व शंकाओं के सप्रमाण उत्तर देकर इतिहास शास्त्र की भारी सेवा की है। ऋषि का यह ऐसा प्रथम जीवन चरित्र है जिसमें कई दस्तावेजों के छाया चित्र भी दिये गये हैं। विरोधियों ने ऋषि की निन्दा के साथ-साथ उसका कितना गुणगान किया है-आप ऐसी सामग्री भी बहुत पायेंगे।

ऋषि के शास्त्रार्थों के कई दुर्लभ संस्करण खोजकर उन्हें यहाँ दिया गया है।

ऋषि जीवन की सब महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर गम्भीर चिन्तन करके सम्पादक ने उनका मूल्यांकन किया है। अनेक प्रेरणाप्रद घटनाएँ, जो अब पुराने पत्रों में दबी पड़ी थी, उन्हें ग्रन्थ में यथा स्थान जोड़ दिया गया है। **ऋषि के जीवन-काल में स्थापित आर्यसमाजों की प्रामाणिक सूची प्रथम बार ही इस ग्रन्थ में छपी है।** मुद्रण दोष अथवा ठीक जानकारी न मिलने से ऋषि जीवन में पाई जाने वाली अनेक अशुद्धियों व भूलों का सुधार करने का भागीरथ प्रयास किया गया है। इस ग्रन्थ में प्रकाशित कई दुर्लभ चित्रों का भी अपना ही महत्त्व है। ग्रन्थ की विस्तृत निर्देशिका तथा विस्तृत विषय सूची इसकी अन्य विशेषताएँ हैं।

महर्षि दयानन्द जी को सुनकर जिनके जीवन की दशा व दिशा बदल गई ऐसे कई आर्य पुरुषों के सम्बन्ध में ठोस जाकारी देकर उन्हें विस्मृति के गर्त से निकाला गया है। ऋषि निन्दक कई विरोधियों व विधर्मियों की अलभ्य पुस्तकों के यथा प्रसंग उत्तर इसी में मिलेंगे। महर्षि के पत्र-व्यवहार का इतना प्रचुर प्रयोग सम्भवत: किसी और जीवन-चरित्र में कम ही मिलेगा।

ऐसी भी कुछ घटनाएँ हैं जिन पर कुछ लेखकों ने अपने

अहं की तुष्टि के लिए प्रश्न चिह्न ही लगा दिये। दुर्लभ स्रोतों के प्रमाण देकर सम्पादक ने उनकी पुष्टि करके इतिहास की रक्षा करने का यश लूटा है। गुरु विरजानन्द जी महाराज के जीवन की कुछ नई घटनाएँ खोज कर दी गई हैं। **मोरबी नरेश वाघ जी के ऋषि के सम्बन्ध में उद्‌गार इसी ग्रन्थ में पाठकों को मिलेंगे। क्या यह कोई छोटी देन है?**

ग्रन्थ के प्रकाशक ओर लेखक दोनों का ही इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए समाज ऋणी रहेगा। **-धर्मवीर**

२. **नाम**-भक्ति लहरी, **लेखक**-स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार), **प्रकाशक**-स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला, मेरठ-२५०५०१, **दूरभाष**-९७५३७४७९२०, **पृष्ठ**-३०, **मूल्य**-५०/- रू. मात्र।

भारत के मध्य काल में भक्ति मार्ग चला। उन सन्तों ने अपने-अपने ढंग से भक्ति को परिभाषित किया। किसी ने नाम स्मरण मात्र को भक्ति कहा, कोई गीत गाकर अपने भगवान को रिझाने में भक्ति मानता रहा, किसी ने अपने भगवान के सामने नाचने को ही भक्ति मान लिया। आंशिक रूप से ऐसा करने पर मन कुछ शान्त होता है। किन्तु क्या यही भक्ति है। ऐसा करने से संसार में भक्ति विषय पर अनेक भ्रान्तियाँ फैली। भक्ति के यथार्थ स्वरुप को लोग न जान पाये। आज भी भक्ति के नाम पर अनेक प्रकार के अनर्थ हो रहे हैं। भक्त और भगवान के बीच में जो सम्बन्ध हैं, उस सम्बन्ध का जो कारण है वह भक्ति है। महर्षि दयानन्द की मान्यता अनुसार भक्ति परमेश्वर की आज्ञा पालन में तत्पर रहना है। इसी भक्ति अर्थात् परमेश्वर की आज्ञानुसार आचरण से मनुष्य का उत्कर्ष होता है।

स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) अपने समय के निराले विद्वान् थे विद्या, वाणी, लेखनी इन तीनों का ऐश्वर्य स्वामी जी महाराज के पास था। स्वामी करपात्री जैसे विद्यामद वालों का मुह बन्द स्वामी समर्पणानन्द जी ही ने अपनी विद्वत्ता से किया था। वाणी के विषय में तो उनके अन्दर अद्वितीय प्रतिभा थी। कब श्रोताओं को करुण रस में सराबोर करना है, कब हास्य रस व वीर रस देना है, यह सब तो कोई उनसे ही सीखे। उनकी लेखनी का जादू, उनके द्वारा लिखे ऋग्वेद मणि मण्डल व शतपथ भाष्य में देखें।

स्वामी जी द्वारा रचित भक्तिरस से भरे ३६ श्लोकों से युक्त 'भक्तिलहरी' पुस्तक है। प्रत्येक श्लोक से स्वामी जी के अन्दर का कवित्व झलकता है।

अहो! वृक्षस्याग्रे कुसुममतिरम्यं किमु भवान्
न मां दत्ते द्रष्टुं मुहुरिह शिर: सन्नमयति।
बहु क्रुद्धं बुद्धं नहि पुनरहो मूढमतिना,
कथं पादस्यान्ते लुठति मम चिन्तामणिरयम्॥

अहा! वृक्ष के शिखर पर क्या ही सुन्दर फूल खिला है, पर क्यों आप मुझे देखने नहीं देते हैं? बार-बार मेरे सिर को क्यों झुका देते हो, इससे मैं मूर्ख बहुत क्रुद्ध हो जाता हूँ और नहीं समझ पाता हूँ कि अरे! मेरे चरण के आगे यह कृपा रूपी चिन्तामणी कैसे लुढ़क रही है।

इस 'भक्ति लहरी' को 'पावमानी' त्रैमासिक शोध पत्रिका अष्टाविंश भाग: द्वितीय अङ्क में प्रकाशित किया है। श्लोकों की छात्रोपयोगी टीका आचार्य बृहस्पति ने की है। टीका में अन्वय शब्दार्थ, भाषार्थ दिया है, जिससे श्लोकों को समझने में सुगमता हो गई है। पाठक इस भक्ति लहरी को पढ़ अपने अन्दर भक्ति को बढ़ायें।

पावमानी पत्रिका में भक्ति लहरी के साथ-साथ 'विवेक चिकित्सा विमर्श' स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के नौ लेखों का संग्रह भी समाहित है, प्रत्येक लेख अपने में अद्‌भुत है। अध्यात्म का अर्थ, अध्यात्म एवं विज्ञान का समन्वय, आत्मोत्थान में साधक एवं बाधक, ध्यान क्यों, श्रद्धा, धर्मंचर (धर्म का आचरण करो), वैदिक अग्नि का यथार्थ स्वरूप, कवि और वृक्ष, युवा कौन, ये सब लेख हैं। मोहक आवरण से युक्त 'पावमानी' त्रैमासिक शोध पत्रिका अष्टाविंश भाग: द्वितीय अङ्क को प्राप्त कर भक्ति लहरी व विवेक चिकित्सा विमर्श का आनन्द लें।

-सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर।

३. **नाम**-बंगाल में शास्त्रार्थ, **लेखक**-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय, **प्रकाशक**-आर्यसमाज कोलकाता, १९ विधान सरणी, कोलकाता-७००००६, **पृष्ठ**-२४२, **मूल्य**-४० रु. मात्र।

सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए दो पक्षों में जो वाद किया जाता है, उसको शास्त्रार्थ कहते हैं। यह शास्त्रार्थ प्राचीन काल से चला आ रहा है। उपनिषदों में अनेकत्र इसकी झलक मिलती है। आर्यसमाज में महर्षि दयानन्द से लेकर आज तक सहस्रों शास्त्रार्थ हुए हैं। महर्षि का तो जीवन ही सत्य पक्ष के लिए शास्त्रार्थों में बीता। महर्षि के बाद स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम आर्य पथिक, पं. गुरुदत्त, पं. चमूपति, स्वामी दर्शनानन्द, नारायण स्वामी, पं. बुद्धदेव मीरपुरी, पं. रामचन्द्र देहलवी, पं. गणपति शर्मा, पं. शान्तिप्रकाश, पं. अयोध्याप्रसाद, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार आदि-आदि अनेक शास्त्रार्थ महारथी हुए।

महर्षि के जीवनकाल का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ काशी शास्त्रार्थ था। जिसमें महर्षि ने सैकड़ों पण्डितों को हराकर वेदमत की स्थापना की थी। आर्यसमाज के स्वर्णिम काल में शास्त्रार्थों की धूम मची रहती थी। आर्यसमाज का कोई भी उत्सव शास्त्रार्थ के बिना सम्पन्न नहीं होता था। महर्षि जहाँ-जहाँ भी गये वहाँ-वहाँ कोई न कोई शास्त्रार्थ अवश्य होता था। महर्षि दयानन्द बंगाल में लगभग चार मास रहे थे। उस समय महर्षि का पण्डित ताराचरण तर्करत्न से मूर्तिपूजा विषय पर हुगली में शास्त्रार्थ हुआ था, जिसमें पं. ताराचरण पराजित हुए थे। महर्षि का बंगाल में यह

एक ही शास्त्रार्थ हुआ, उसके बाद आर्यसमाज के अनेक विद्वानों से पौराणिक पण्डितों के शास्त्रार्थ होते रहे। इन सभी शास्त्रार्थों को खोज, इकट्ठा कर प्रो. उमाकान्त उपाध्याय ने 'बंगाल में शास्त्रार्थ' नाम से पुस्तकाकार दे दिया। यह प्रो. उमाकान्त जी ने बहुत श्लाघनीय कार्य किया। इससे आर्यसमाज का इतिहास व शास्त्रार्थ सुरक्षित हुए हैं।

पुस्तक में कुल १४ शास्त्रार्थ हैं। प्रथम दो बड़े उसके बाद दो उनसे छोटे और बाद के लघु-लघु शास्त्रार्थ हैं। **१.** मूर्ति पूजा विषय पर **२.** आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा कोलकाता और श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज। **३.** मूर्ति पूजा अवैदिक है विषय पर पं. माधवाचार्य सनातन धर्मी व पं. सुखदेव विद्यावाचस्पति (आर्य विद्वान्) के मध्य। **४.** मृतक श्राद्ध अवैदिक है विषय पर, सनातन धर्म से महामहोपाध्याय योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य वेदान्तवागीश, महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य, तर्क शिरोमणि श्री पं. श्रीनाथ पञ्चतीर्थ, श्री जीव न्यायतीर्थ एम.ए. तथा आर्यसमाज की ओर से श्री अयोध्या प्रसाद जी, बी.ए., श्री पं. रमाकान्त शास्त्री, श्री पं. यतीन्द्र चौधरी, श्री पं. मनोरञ्जन काव्य तीर्थ के मध्य शास्त्रार्थ। **५.** वर्ण व्यवस्था और अछूतोद्धार विषय पर, पं. अखिलानन्द कविरत्न सनातनी और स्वामी मुनीश्वरानन्द जी आर्यसमाजी के मध्य। **६.** मूर्ति पूजा विषय पर, पं. अखिलानन्द शर्मा सनातन धर्म से ओर पं. सुखदेव विद्यावाचस्पति, पं. प्रियदर्शन सिद्धान्त भूषण आर्यसमाज से। **७.** मूर्तिपूजा और मृतक श्राद्ध विषय पर, श्री चूड़ामणि धोरई सप्त तीर्थ सनातन धर्म से और पं. अयोध्या प्रसाद व पं. रमाकान्त शास्त्री आर्यसमाज से। **८.** शालीग्राम का शास्त्रार्थ-वर्ण व्यवस्था पर। **९.** भाटपाड़ा शास्त्रार्थ-जन्मना शूद्रों को यज्ञोपवीत और वेदाधिकार विषय पर। **१०.** रामपुर हाट का शास्त्रार्थ-वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म स्वाभाव से है विषय पर। **११.** संस्कृत कॉलेज कोलकाता की पण्डित सभा में, पूर्वी बंगाल से आये आर्य हिन्दुओं की शुद्धि पर विचार। **१२.** वर्ण व्यवस्था विषय पर श्री बिड़ला जी के घर पण्डित सभा। **१३.** वर्ण व्यवस्था पर श्री चपलाकान्त जी के घर पण्डित सभा। **१४.** हाउर का शास्त्रार्थ-वेद केवल ब्राह्मण के लिए विषय पर।

सभी शास्त्रार्थों से पूर्व श्री उमाकान्त जी ने थोड़ा-थोड़ा ब्योरा दिया है जिससे शास्त्रार्थ को समझने में सरलता होती है। शास्त्रार्थ बड़े ही सारगर्भित व रोचक हैं। पुस्तक सभी पुस्तकालयों में रखने योग्य है। पुस्तकस्थ शास्त्रार्थों को पढ़कर सुधी पाठक अपना ज्ञानवर्द्धन करेंगे, इसी आशा के साथ।

-सोमदेव

ऋषि उद्यान, अजमेर, चलभाष-९०२४६६९५५५

वैदिक विद्वान् आश्रय केन्द्र प्रारम्भ

आर्यसमाज, अलीगढ़ (उ.प्र.)-नवसम्वत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष में आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग) में आयोजित समारोह में दिनांक ११ अप्रैल को उपस्थित भारी जन समूह के मध्य संस्था मन्त्री राजेन्द्र पथिक द्वारा निराश्रित वेद-विद्वानों, प्रचारकों एवं भजनोपदेशकों, जो वयोवृद्ध हों, उनके आवास एवं भोजन की स्थायी व्यवस्था ''आर्यसमाज, अलीगढ'' द्वारा की गई है। सम्बन्धित वयोवृद्ध विद्वान् भारत के किसी भी क्षेत्र के निवासी हों, सभी आमन्त्रित हैं। **-राजेन्द्र पथिक, मन्त्री, आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, अलीगढ़, चलभाष-९४१२६७१५५४**

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहल से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. 'परोपकारी' पाक्षिक का अप्रैल (प्रथम) अंक पढ़ा। आदरणीय मोहन शर्मा का लेख 'गोमांस का बढ़ता निर्यात और दूध संकट'' ज्वलंत मुद्दा वाला लेख भी पढ़ा। कलेजा दहल गया, भारत भूमि पुण्य भूमि में गौमाता का अपमान, तिरस्कार और उनके गलों पर चलती छुरी को कोई रोक नहीं सकता, तो अन्य देशों में क्या पाबंदी ला सकते हैं? रोकना तो असम्भव ही है। मॉरिशस में आदि-अन्त से गाय पालते हैं। बकरी, मुर्गी और अन्य जानवर पालते हैं। सभी लोग पालते हैं। सभी सम्प्रदायों को एक अतिरिक्त आय मिलती है। आर्यसमाजी, पौराणिक सभी हिन्दू भी पालते हैं। पहले यहाँ भी दूध-दही की कमी नहीं होती थी। बड़ी कड़ाही में दूध भरा रहता था। मेहमानों का स्वागत कटोरे भर दूध से करते थे। एक समय ऐसा भी आता था कि गाय जब बूढ़ी हो जाती थी तो उसे कसाई के हाथ बेच देते थे। बछड़ी को रख लेते थे। उनसे बच्चे और दूध मिलते थे। बछड़े को बड़े होने पर बेच देते थे। कसाई ही सामने लेने आता था। उस पैसे से अपनी गृहस्थी में सुधार लाते थे। दूध-दही के पैसे से भी काफी अच्छा रकम मिल जाती थी। जिसके पास गाय खरीदने के पैसे नहीं होते थे। वे **अधिया** पर गाय लेते थे। कोई सम्पन्न व्यक्ति गाय खरीदकर दे देता था। पहला बच्चा पोसने वाले का होता था। दूसरे में आधा-आधा करके बछड़ा खरीद लेते थे। दो-तीन बच्चों को जन्म दे देने वाली गाय मालिक को वापिस कर सकते थे। दूध-दही के अलावा अंतिम पड़ाव गाय का कसाई होता था। बकरी भी लोग पालते थे। नया साल आता था तब खरीदने वाले गली-गली चिल्लाते मिलते थे। **'बकरी बा बेचे के'** और खरीदकर ले जाते थे। वे कसाई ही होते थे। मांसाहारी यहाँ के हिन्दू भी थे जो बकरा, मुर्गी आदि खाते थे। परिवार आ जाए तो मुर्गे के पीछे बच्चों को दौड़ाते थे। उसी की तरकारी पकती थी, अण्डे का व्यापारी साइकिल पर गली-गली चक्कर लगाया-**'मुर्गी अण्डा'** का नारा लगाते थे। कभी-कभी मुर्गी, अण्डा बेचकर बच्चों की पुस्तकें भी खरीदते थे। ऐसा भी समय था कि साल में एक बार ही मांस खाते थे। नया साल आता था तब दो रुपये पाउण्ड से बकरे का मांस खरीदते थे। बड़ा परिवार घर पर ही बकरा मारता था। हिन्दुओं में ओझाई कर भी प्रवचन होता था। नये साल पर आंगन को गोबर माटी से लीप-पोतकर पूजा करते थे। देवी-देवता के नाम बकरों की बली चढ़ाते थे। खाते थे, पीते थे। गोमांस नहीं पर मांसाहारी यहाँ भी थे, गोमाता और अनबोलता जानवरों की रक्षा यहाँ भी नहीं होती थी। उस जमाने में घर-घर गाय होती थी। घासफूस की सुविधा थी। आज तो गाँव में एक गाय मिल जाए तो कमाल की बात समझी जाती है। गाय के दूध का स्वाद आज के बच्चे नहीं जानते हैं। पाउडर दूध ही मिलता है। यज्ञ हवन के लिए शुद्ध घी भी मुश्किल से मिलता है। उस समय तो बोतलों में घी सजाकर रखा जाता था। बूचड़खाने यहाँ भी हैं। घर के पिछवाड़े में ही हत्यायें होती हैं। विदेशों में तरह-तरह के माँस मंगाते हैं। पता नहीं किस जानवर का है। पूजा-पाठ, मन्दिर, व्रत त्यौहार में तो बहुत उन्नति कर रहे हैं। मगर आमिष भोजन से बहुत कम लोग मुख मोड़ पाते हैं। इस कर्म का फल कैसा होगा या मिलेगा? भगवान् ही जाने।

-सोनालाल नेमधारी

कारोलिन, वेल-डार, मॉरिशस।

२. परोपकारी अप्रैल द्वितीय २०१३ **'पाठकों की प्रतिक्रिया'** में क्रमांक ५ पर **श्री नरेश कुमार** ८०६१ श्री वाचनालय सेवा भारती समिति संघ कार्यालय समिधा जवाहर सिंह नगर, भरतपुर राजस्थान की प्रतिक्रिया पढ़ने को मिली। श्री नरेश कुमार को **डॉ. धर्मवीर जी** के विचार आलोचनात्मक तथा समाज को तोड़ने वाले लगे। क्योंकि उन्होंने माँसाहार तथा अन्य के सम्बन्ध में **स्वामी विवेकानन्द** के खुले विचारों से पाठकों को अवगत कराया है।

नरेश जी ने प्रकारान्तर से डॉ. धर्मवीर को धोबी भी कहा है। परोपकारी अप्रैल (प्रथम) में पृष्ठ संख्या १३ पर श्री जिज्ञासु ने स्वामी विवेकानन्द के सम्बन्ध में अन्य सप्रमाण बातें लिखी हैं। वे किस-किस को क्या-क्या बनायेंगे।

स्वामी विवेकानन्द ने मास खाने का कभी विरोध नहीं किया, वे खुले आम खाते थे और उसे अच्छा बताते थे। नरेश जी क्यों नाराज हो उठे यह समझ में नहीं आता है? हाँ यदि यह बात गलत लिखी गई हो तब तो न्यायालय में भी जाया जा सकता है। नरेश जी 'धोबी' आपने अपमानित करने के उद्देश्य से लिखा, ऐसा प्रतीत होता है, परन्तु यदि इस समाज को धोबी विहीन कर दिया जाये तो सारे लोगों की क्या दशा होगी? सब चमक-दमक धरी रह जाएगी। **समाज गन्दगी का ढेर बना घूमेगा।** किसी को छोटा, बड़ा बोलने से काम नहीं चलता है, **बुद्धिमता** इसमें ही है कि **'सत्य को सत्य कहा और समझा जाए।'** धन्यवाद।

-जयदेव शर्मा,

५६१/५३४, सिन्धु नगर, लखनऊ-२२६०२३

३. स्वामी विवेकानन्द कैसे संन्यासी? जो माँसाहारी हों, जिसे गोमांस खाने में भी परहेज न हो, नित्य माँसाहार, यह कहाँ का सन्यास? जिह्वा लोलुप, यह बहुत बड़ी कमी है। स्वामी रामतीर्थ के घर पर भी माँसाहार का आग्रह, अत्यन्त निन्दनीय है। उन्हें इसके लिए किसी सम्बन्धी के माध्यम से व्यवस्था करनी पड़ी। क्या वह कभी माँसाहार के बिना रह ही नहीं सकते थे? इस पर गहराई से विचार करना चाहिए, इसकी निन्दा

करनी चाहिए। अमेरिका में भी यह करते रहे, किसी श्रद्धालु के आग्रह पर भी एक रसोईया वेतन सहित भेजने की माँग करना, यह सब ऐतिहासिक तथ्य है।

संभवतः इसीलिए छोटी आयु ३९ वर्ष में ही यह शरीर त्यागना पड़ा। एक अच्छा वक्ता होना और प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होने के कारण उनका प्रभाव रहा। जिह्वा लोलुप होना-त्यागी के लक्षण नहीं है। आम लोगों को अच्छी-सच्ची जानकारी देने के लिए परोपकारी के सम्पादक महोदय का यह कार्य बहुत सराहनीय है।

आज के मान्य नेता, अच्छे वक्ता रहे श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी इन्हीं की तरह भोगी रहे हैं। **-डॉ.एस.एल. वसन्त, बी-१३८४, नागपाल स्ट्रीट, फज़िल्का, पंजाब।**

४. श्रीमान् सम्पादक जी महोदय, सादर नमस्ते। पाक्षिक परोपकारी अप्रैल (द्वितीय) २०१३ प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्पादकीय सहित सभी लेख प्रेरणा स्त्रोत हैं। परन्तु पाठकों की प्रतिक्रिया अनुक्रम के अन्तर्गत श्री धर्मवीर जी के पत्रिका फरवरी (प्रथम) २०१३ के सम्पादकीय में ''स्वामी विवेकानन्द और उनका हिन्दुत्व'' लेख पर श्री नरेश कुमार ८०६१, श्री वाचनालय सेवा भारती समिति संघ कार्यालय समिधा जवाहर सिंह नागर, भरतपुर (राज.) ने अति क्रुद्ध एवं क्षुब्ध सहित प्रतिक्रिया की तथा भविष्य में पत्रिका की सदस्यता समाप्त करने और भविष्य में न भेजने तक के लिए कह दिया। मनुष्य को इतना भावनात्मक नहीं होना चाहिए। प्रिय नरेश कुमार जी श्री धर्मवीर जी ने स्वामी विवेकानन्द के विषय में सबकुछ प्रमाण सहित लिखा है। स्वागत योग्य तो यह होता कि आप सभी सन्दर्भों का संज्ञान लेकर अपनी प्रतिक्रिया देते। ऐसा आभास होता है कि आप स्वामी विवेकानन्द के अनन्य भक्त हैं।

वास्तव में सत्य बात को कहने वाला सैकड़ों में कोई एक होता है तथा सत्य बात को सुनने वाला हजारों में १-२ व्यक्ति होते हैं तथा सत्य पर मनन, चिन्तन और आचरण करने वाला लाखों में कोई-कोई होता है।

प्रिय नरेश कुमार जी क्या स्वामी विवेकानन्द में मांसाहार एवं धूम्रपान का दुर्व्यसन नहीं था? स्वामी विवेकानन्द जी के नाम पर व्यापारियों और पण्डितों का व्यवसाय चल रहा है।

मैंने स्वामी विवेकानन्द जी एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी दोनों के साहित्य का काफी अध्ययन किया है। परन्तु विवेकी व्यक्ति को समीक्षा अवश्य करनी चाहिए। अक्षर ज्ञान वाले तो करोड़ों है, परन्तु अगर वह ''कब क्यों और कैसे'' का समाधान नहीं कर पाता है तो वह विवेकी नहीं हो सकता। धर्म बिना ज्ञान के कुछ नहीं है। **-डॉ. लक्ष्मण सिंह टाँक, पूर्व प्राचार्य, ५१-देवपुरम, मुजफ्फरनगर, उ.प्र., चलभाष-९४१२८८८४७८**

५. मान्यवर सम्पादक जी, सादर नमस्ते। 'परोपकारी' अंक अप्रैल प्रथम २०१३ में श्री इन्द्रजित् देव द्वारा लिखित लेख महाघोटाला पढ़ा है। बहुत ही ऐतिहासिक और ज्ञानवर्द्धक है-ऐसे ही लेख आपकी पत्रिका देती रहती है जिससे पाठकों को अपने इतिहास, पुरानी, परम्पराओं और मान्यताओं पर प्रकाश मिलता है-यह परोपकारी का उपकार है।

लेखक जी ने ठीक ही लिखा है कि गंगा नहीं जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाती है, उसकी पवित्रता धूमिल होती जाती है और अन्त तक पहुँचने पर जो दुर्गन्ध हो जाती है-इस समय ऐसा ही हाल हमारे प्राचीन वैदिक ग्रन्थों और परम्पराओं का हो रहा है। महाभारत युद्ध काल के बाद तो वैदिक युग प्रायः समाप्त हो गया, वैदिक विद्वानों के ओझल होने पर तथाकथित गुरु और पण्डित विद्वान् पैदा हो गये, उन्होंने अपने-अपने सम्प्रदाय बनाकर अपने-अपने मिलावटी और दूषित ग्रन्थ बना लिये-वैदिक ग्रन्थों का अनर्थ कर दिया-लोगों को बहकाकर अपना अनुयाई बना लिया आज इस समय इसका विकराल रूप सामने है। वैदिक युग की जगह पुराणिक युग आ गया है-

सभी आर्य सदस्यों को चाहिये कि जहाँ कहीं भी वैदिक ग्रन्थों और परम्पराओं का खण्डन का विरोध कहीं पढें तो 'परोपकारी' को सूचित करें ताकि उसका सटीक उत्तर विद्वानों द्वारा दिया जा सके। **-आसकरण दास सरदाना, नंगल टाउनशिप, पंजाब, चलभाष-०९२१६९२०९८०**

६. माननीय सम्पादक जी, आपने परोपकारी मई (प्रथम अंक) में 'विशाल भारत' में छपे एक लेख 'आर्य नवयुवकों से' पृष्ठ २२-२६ पर प्रकाशित किया है।

इस लेख में आर्यसमाज की कार्य पद्धति पर टिप्पणी तथा त्रुटियों को अच्छी तरह दर्शाया है, तथा कुछ रचनात्मक प्रस्ताव भी दिये हैं। मुझे मालूम नहीं आप कहाँ तक लेखक की विचारधारा से सहमत हैं। परन्तु क्योंकि आपने इस लेख को प्रकाशित किया है तथा अपनी कोई टिप्पणी भी नहीं दी है, अतएव लगता है कि आप सहमत हैं।

परन्तु मैं लेख के अन्त में दिये दो प्रस्तावों-'साम्प्रदायिक कलह का अन्त' तथा सांस्कृतिक मेल' के अन्तर्गत दिये विचारों से सहमत नहीं हूँ। **-रवीन्द्र कुमार, ई-२३२, सरिता विहार, नई दिल्ली, चलभाष-०९३१३७२१२१८**

मनुष्यों को चाहिये कि विद्या से परस्पर पदार्थों का मेल और सेवन कर रोगरहित शरीर तथा आत्मा की रक्षा करके सुखी रहना चाहिये।-
महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१३।

संस्था-समाचार

-०१ से १५ मई २०१३

१. अन्ना हजारे जी व जन. वी.के. सिंह जी ऋषि उद्यान में-सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता अन्ना हजारे जी, अपनी जनतंत्र यात्रा के अन्तर्गत दिनाँक १० मई को अजमेर पधारे। यहाँ आजाद पार्क में आपकी जनसभा होनी थी, इस अवसर पर पूर्व थलसेना अध्यक्ष जन. वी.के. सिंह जी, श्री संतोष भारतीय जी आदि गणमान्य व्यक्ति भी आपके साथ समुपस्थित थे। अजमेर आगमन पर अन्ना जी की, इन गणमान्य नागरिकों व कार्यकर्त्ताओं सहित निवास व्यवस्था, परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में की गई। आपने यहाँ स्थित 'दयानन्द-भवन' से पत्रकारों को सम्बोधित भी किया। इससे पूर्व आपको आचार्य सोमदेव जी ने संग्रहालय स्थित महर्षि दयानन्द की दैनन्दिन में प्रयोग आने वाली वस्तुओं की प्रदर्शनी दिखाई एवं इससे सम्बन्धित जानकारी प्रदान की।

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार-कार्यक्रम-

(क) सम्पन्न कार्यक्रम-१. २-५ मई-चेतनगरोत गाँव (ग्वालियर, म.प्र.) में आर्यसमाज उत्सव में प्रवचन। **२.** ११-१२ मई-आर्यसमाज घरोड़ा करनाल में उत्सव में व्याख्यान। **३.** १३ मई-ब्यावर आर्यसमाज (अजमेर, राज.) में प्रवचन।

(ख) आगामी कार्यक्रम-१. ४-५ जून-राजकोट आर्यसमाज में प्रवचन कार्यक्रम। **२.** १६-२३ जून-योग शिविर, ऋषि उद्यान में प्रशिक्षक। **३.** २७-३० जून-आर्यसमाज की यज्ञ पद्धति विषयक तृतीय गोष्ठी में प्रतिभागी (आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम, होशंगाबाद, म.प्र.)

३. यज्ञ एवं प्रवचन-जैसा कि विदित है ऋषि उद्यान, आर्यजगत के उन स्थानों में से एक है जहाँ पूरे वर्ष दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम होता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। प्रात: प्रवचन के क्रम में सामान्य दिनों में डॉ. धर्मवीर जी जहाँ पुरुषसूक्त (यजुर्वेद का ३१ वाँ अध्याय) पर व्याख्यान करते हैं, वहीं स्वामी विष्वङ् जी अपने योगदर्शन के क्रम को आगे बढ़ाते हैं तथा सायं सत्संग में आचार्य सोमदेव जी ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका का स्वाध्याय कराते हैं।

पिछले दिनों प्रात: प्रवचन के क्रम में ०१ से ०४ मई तक के अपने प्रवचन क्रम में स्वामी विष्वङ् जी ने योगदर्शन तृतीय पाद के २२वें तथा २३वें सूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि कर्मों का फल देने सम्बन्धी तीव्रता के कारण, सोपक्रम तथा निरुपक्रम के रूप में विभाजन किया जाता है। 'सोपक्रम' वे कर्म होते हैं जो तीव्रता से/थोड़े समय में ही फल दे देते हैं। वहीं 'निरुपक्रम' वे कर्म होते हैं जो मन्दवेग से/ विलम्ब से फल देते हैं। योगी इन कर्मों में संयम (धारणा, ध्यान, समाधि) करके मृत्यु के भावी-आगमन को जान लेता है। मृत्यु के आगमन को अरिष्टों से भी जाना जा सकता है। ये अरिष्ट तीन प्रकार के होते हैं-**१.** आध्यात्मिक अरिष्ट **२.** आधिभौतिक अरिष्ट **३.** आधिदैविक अरिष्ट। एक स्वस्थ व्यक्ति जब अपने कानों को अंगुलियों से पूर्णत: बन्द करता है तो उसे अनाहत नाद सुनाई देता है, इसी प्रकार आँखो को अंगुलियों की सहायता से थोड़ा दबाकर बन्द करने पर प्रकाश दिखाई पड़ता है। लेकिन जब व्यक्ति की मृत्यु समीप होती है तो उसे यह नाद, प्रकाश सुनाई व दिखाई नहीं पड़ता, यही आध्यात्मिक अरिष्ट है। इसी प्रकार आपने आधिभौतिक व आधिदैविक अरिष्टों की व्याख्या भी प्रस्तुत की।

दिनाँक ५ मई को रविवासरीय प्रवचन क्रम में श्रोताओं को अमेरिका से पधारे हुए आचार्य वेदश्रमी के ओजस्वी उद्‌बोधन का लाभ प्राप्त हुआ। आपने पहले एक श्लोक के माध्यम से श्रोताओं के समक्ष प्रश्न उपस्थित किए कि विद्वान् कैसी वाणी बोलता है? कौन व्यक्ति रोगी होता है? कौन नास्तिक बनता है? और कौन सा चन्द्रमा दिखाई नहीं देता? अपने इन सभी प्रश्नों का समाधान आपने पाणिनीय अष्टाध्यायी के एक सूत्र के माध्यम से प्रस्तुत किया। सूत्र है-'अर्थवदधातुरप्रत्यय: प्रातिपदिकम्' 'अर्थवद्+अधातु:+अप्रत्यय-प्रातिपदिकम्'। अर्थात् विद्वान् अर्थवद्/अर्थवान्/प्रयोजन को सिद्ध करने वाली वाणी बोलता है। अधातु अर्थात् धातु से रहित (रस, रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, वीर्य आदि से रहित) व्यक्ति ही रोगी होता है। अप्रत्यय अर्थात् प्रत्यय/ज्ञान से रहित व्यक्ति ही नास्तिक होता है। कहा भी गया है-'नास्तिको वेद निन्दक:'। और प्रातिपदिक अर्थात् प्रथमा (शुक्ल पक्ष की प्रथमा तिथि) का चन्द्रमा दिखाई नहीं देता है।

०६ से ०९ मई के अपने प्रवचन क्रम में प्रथम दिन डॉ. धर्मवीर जी ने यात्रा सम्बन्धी संस्मरण सुनाए। आपने एक आर्य आश्रम में संन्यासी यज्ञ कर सकता है या नहीं? इस विषय में उठे विवाद का उद्धरण देते हुए बताया कि किस प्रकार कभी-कभी हम लोग व्यर्थ की बातों को सिद्धान्त मानकर विवाद में शक्ति नष्ट करते हैं। यथा शरीर की शुद्धि के उपरान्त संध्या करनी चाहिए, लेकिन जहाँ शरीर की शुद्धि सम्भव न हो तो ऐसे में संध्या न करना कोई बुद्धिमत्ता नहीं। क्योंकि यहाँ प्रधानता

संध्या की है न कि शारीरिक शुद्धि की। इसी प्रकार यदि कोई संन्यासी यज्ञ करता है, तो इसे सिद्धान्त की बहुत बड़ी हानि समझना ठीक नहीं, क्योंकि संन्यासी को अन्य कर्मों को करने के लिए पर्याप्त अवकाश रहे अत: उसे यज्ञ से छूट प्रदान की गई। यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के १३वें मन्त्र की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि जैसे ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से पृथिवी, सूर्य आदि यहाँ रचे हैं, वैसे ही अन्य आकाश गंगाओं में भी जानना चाहिए।

१० मई से १२ मई के अपने प्रवचन क्रम में स्वामी विष्वङ् जी ने 'मैत्र्यादिषु बलानि' सूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि जो पिछले पाद में जो सुखी, दु:खी, पुण्यात्माओं व पापात्माओं के प्रति क्रमश: मित्रता, करुणा, प्रसन्नता और उपेक्षा का व्यवहार करने का निर्देश योगाभ्यासी को दिया गया। जब योगी मित्रता, करुणा, प्रसन्नता पर संयम (धारणा, ध्यान, समाधि) करता है तो उसे मित्रता आदि का बल प्राप्त होता है।

१३ मई को आचार्य सत्येन्द्र जी ने अपना दार्शनिक उद्बोधन प्रदान किया।

१४ मई को डॉ. धर्मवीर जी ने करौंथा (रोहतक, हरियाणा) स्थित कबीरपन्थी रामपाल दास के आश्रम को हटाने के लिए दिनाँक १० मई को आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में किए गए विशाल आन्दोलन पर प्रकाश डाला। इस आन्दोलन में अब तक दो आर्य पुरुषों समेत एक ग्रामीण महिला की मौत हो चुकी है। सैकड़ों आर्यजन घायलावस्था में अस्पताल में भर्ती हैं। यहाँ ध्यातव्य है कि तथाकथित सन्त रामपाल दास का यहाँ काफी वर्चस्व है, उसके पास धनबल तथा भक्तों का संख्या बल भी पर्याप्त है। जिससे वह संचार माध्यमों यथा दूरदर्शन, समाचार पत्रों आदि में बड़े-बड़े विज्ञापन आदि के माध्यम से महर्षि दयानन्द पर निरन्तर आक्षेप करता रहता है। अत: आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में २००६ में भी यहाँ एक विशाल आन्दोलन चलाया जा चुका है, जिसके परिणामस्वरूप यह आश्रम बन्द कर दिया गया था। अप्रैल २०१३ में पुन: कानून का गलत सहयोग लेते हुए इसे खोला गया तो आचार्य बलदेव जी ने पुन: इसे बन्द करवाने का सङ्कल्प लिया। हमें सभी आर्यजनों को यथाशक्ति आचार्य बलदेव जी को इस कार्य में सहयोग करना चाहिए।

सायं प्रवचन के क्रम में उपाचार्य सत्येन्द्र जी ने व्यवहार भानू का स्वाध्याय कराते हुए बताया कि धर्म-अधर्म की सरल परिभाषा क्या है? जो सबके अविरुद्ध है वह धर्म और जो परस्पर विरुद्ध आचरण है वह अधर्म है। लेकिन व्यक्ति को सत्य-असत्य का निश्चय पाँच परीक्षा की युक्ति से करना योग्य है। आपने बताया कि व्यक्ति को सभा आदि में किस तरह का व्यवहार करना चाहिए।

उपाध्याय सोमदेव जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका उपासना के क्रम में उपनिषदों के प्रमाण से बताया कि जब तक मनुष्य दुष्ट कर्मों से अलग होकर अपने मन को शान्त और अपनी आत्मा को पुरुषार्थी नहीं करता तब तक उस सत्य संकल्प परमेश्वर को कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता।

सभा के ट्रस्टी श्री तपेन्द्र जी (वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, राजस्थान सरकार) ने प्राण-साधना का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए इसे आत्मदर्शन और प्रभुदर्शन की प्राप्ति का सशक्त साधन बताया। आपने अपने इस प्रतिपादन में उपनिषदों के अनेकों प्रमाण भी दिए। ओम् शम्। **-ब्र. रविशंकर व दीपक आर्य।**

शिविर-सूचना

१. शिविर नाम-अष्टांग योग प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविर **दिनांक**-२३-३० जून २०१३ पूर्ण आवासीय।
२. स्थल-संस्कार भारती पी.जी. कॉलेज, अजमेर रोड़, बगरू, जयपुर (राज.) पिन-३०३००७।
३. प्रशिक्षक-आचार्य सानन्द (ऋषि उद्यान, अजमेर), आचार्य कर्मवीर (ऋषि उद्यान, अजमेर), रवि आर्य, दिल्ली।
४. आयोजक-श्री अशोक आर्य, जयपुर।

सम्पर्क सूत्र-आचार्य सानन्द
०९९२८४८६५७५-दोपहर: १-२ बजे, ०८३०२२१२३५५ रात्रि: ९-१० बजे।

कोई परमेश्वर के विना सब जगत् के रचने वा धारण, पालन और जानने को समर्थ नहीं हो सकता और कोई सूर्य्य के विना भूमि आदि जगत् के प्रकाश और धारण करने को भी समर्थ नहीं हो सकता। इससे सब मनुष्यों को ईश्वर की उपासना और सूर्य्य का उपयोग करना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.३६।**

आर्यजगत् के समाचार

१. गुरुकुल आर्य विद्यापीठ खेरली, कठूमर, अलवर–आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल आर्य विद्यापीठ खेरली, तह. कठूमर, जिला–अलवर में ६५ छात्र अध्ययन कर रहे हैं। अब नया प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। अपने पुत्र को संस्कारवान् बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश करवायें। गुरुकुल में सभी आधुनिक विषयों के साथ धर्म शिक्षा तथा संस्कृत अष्टाध्यायी वेदपाठ आदि का विशेष अध्ययन कराया जाता है। छात्रों के शारीरिक विकास के लिए प्रात:, सायं व्यायाम, आसन, प्राणायाम, दण्ड–बैठक, जूड़ो–कराटे व तीरंदाजी आदि का अभ्यास कराया जाता है। प्रतिदिन प्रात:, सायं संध्या यज्ञ आदि किया जाता है। तथा छात्रों को खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु शैक्षणिक भ्रमण भी कराया जाता है।

नोट–गुरुकुल प्रांगण जयपुर–आगरा राष्ट्रीय रेल मार्ग पर स्थित है। आगरा जाने वाली सभी ट्रेनें खेरली स्टेशन पर रुकती है। प्राचार्य–सत्यम आर्य, मो. ९९२९७१८९९८,

अधिष्ठाता–हरिशचन्द्र शास्त्री, मो. ०९६९४८९२७३५

२. कन्या गुरुकुल आर्य विद्यापीठ, भुसावर (वैर) भरतपुर–आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि कन्या गुरुकुल आर्य विद्यापीठ, भुसावर तहसील–वैर, जिला–भरतपुर में अध्ययन–अध्यापन सुचारु रूप से चल रहा है। अब नया प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। आप अपनी पुत्रियों को संस्कारवान् बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश कराएँ। गुरुकुल में सभी आधुनिक विषयों के साथ धर्म शिक्षा तथा संस्कृत शिक्षा, अष्टाध्यायी वेदपाठ आदि का विशेष अध्ययन कराया जाता है। छात्राओं के शारीरिक विकास के लिए प्रात:, सायं व्यायाम, आसन, प्राणायाम, दण्ड–बैठक, जूड़ो–कराटे व तीरंदाजी आदि का अभ्यास कराया जाता है।

प्रतिदिन प्रात:, सायं संध्या यज्ञ आदि किया जाता है तथा छात्राओं को खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु शैक्षणिक भ्रमण भी कराया जाता है।

अधिष्ठाता–हरिशचन्द्र शास्त्री, मो. ०९६९४८९२७३५

३. महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ समिति झज्जर के तत्त्वावधान में समायोजित श्रीराम नवमी पर आठ कुण्डीय यज्ञ समारोह में एक ही मोहल्ले भट्टी गेट की लगभग ५१ बेटियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में हरियाणवी बोली में मार्मिक कविता ''आलैण दे री माँ आलैण दे, मैंने दुनिया में आलैण दे'' सुनाकर श्रोताओं को द्रवित कर दिया। महाशय रतीराम आर्य, रामपत, चमनलाल व महावीर वारन्ट अफसर की तरफ से ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा श्रीमती सोनिया आर्य थी।

४. आर्यसमाज खेड़ा अफ़गान जनपद सहारनपुर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह २९ अप्रैल से ५ मई तक बड़े हर्ष और उल्लास से मनाया गया। ९ परिवारों में यज्ञ कर आचार्य शंकर विद्यावाचस्पति ने गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने का बड़ा सुन्दर उपदेश दिया। कार्यक्रम का समापन ५ मई को आर्यसमाज मन्दिर में किया गया।

५. आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर रेवाड़ी, हरियाणा–दिनांक ०३ मई २०१३ को श्री धर्मवीर नम्बरदार, मन्त्री आर्यसमाज बीकानेर के सुपौत्र चि. संदीप आर्य सुपुत्र श्री संजीव कुमार के ९वें जन्मदिवस के उपलक्ष में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा मा. दयाराम आर्य, संयोजक पतञ्जलि योग समिति जिला रेवाड़ी तथा श्री महादेव आर्य ने पुरोहित के रूप में यज्ञ सम्पन्न करवाया।

६. आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर रेवाड़ी, हरियाणा–२८ अप्रैल २०१३ को एक नि:शुल्क जाँच शिविर का आयोजन डॉ. महेन्द्र कुमार के संरक्षण में हुआ। प्रात: १० बजे से दोपहर बाद २ बजे तक लगभग २५० मरीजों के स्वास्थ्य की नि:शुल्क जाँच की गई।

७. आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर नगर–०७ का ४४ वाँ वार्षिकोत्सव वैशाख शुक्ल प्रतिपता एवं द्वितीया वि.सं. २०७० तदनुसार दिनांक १०, ११ एवं १२ मई २०१३ दिन शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को सोल्लास मनाया जायेगा। इस शुभ अवसर पर एक शोभा यात्रा (नगर कीर्तन) का आयोजन दिनांक ०९ मई २०१३ दिन गुरुवार अपराह्न ०३.३० बजे से सायं ०६.३० बजे तक किया गया है।

८. आर्यसमाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में नव संवत्सर विक्रमी संवत् २०७० के शुभ अवसर पर विशेष यज्ञ हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान डॉ. पूरण चंद शास्त्री, ओम प्रकाश आर्य, डॉ. राजवीर सिंह वर्मा आदि रहे। यज्ञ आर्यसमाज के वरिष्ठ पुरोहित सोमदत्त जी के पुरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

९. आर्यसमाज मोहाली–रविवार, दिनांक २८.०४.२०१३ को वेद प्रचार समिति आर्यसमाज मोहाली के तत्त्वावधान में श्री विजय आर्य जी के निवास स्थान एच.एम. ४२ फेस दो मोहाली के सामने खुले प्रांगण में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। जिसमें चंडीगढ़, मोहाली एवं पंचकूला के प्रतिष्ठित सज्जनों ने भाग लिया।

१०. श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय

करतारपुर, जिला-जालन्धर में सत्र २०१३-१४ के प्रवेश के लिये २० जून २०१३ की तिथि निश्चित की गई है।

१. प्रवेश केवल छठी कक्षा में ही दिया जाएगा अन्य किसी भी कक्षा में नए छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। २. प्रवेश परीक्षा प्रातः १० बजे से १ बजे तक चलेगी। ३. परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक ब्रह्मचारी प्रातः ९ बजे तक अवश्य पहुँच जाएँ। ४. केवल परीक्षा में उत्तीर्ण हुए ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जाएगा।

परीक्षा में भाग लेने के लिए आने वाले छात्र अपनी चार पासपोर्ट साईज फोटो साथ लाएँ। पांचवी श्रेणी में उत्तीर्ण होने का प्रमाण पत्र तथा स्थानान्तरण पत्र आदि साथ लाएँ। परीक्षार्थी सफेद कुर्ता-पाजामा पहनकर ही परीक्षा में बैठ सकेंगे। शाकाहारी तथा संस्कारशील आर्य परिवारों के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाएगा। सम्पर्क: मो.-९८८८७६४३११, ९०४१२८९३९७ दूरभाष-०१८१-२७८२२५२, २७८२२४९

११. वेद मन्दिर आर्यसमाज सत्संग भवन बेरछा, शाजापुर, म.प्र. में **''चतुर्वेद शतकम् एवं गायत्री महायज्ञ''** का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। संयोजक-श्री पं. हीरालाल जी आर्य, भजनोपदेशक, प्रधान जी व सपरिवार ने दिनांक २२ से २४ अप्रैल २०१३ तक चतुर्वेद शतकम्, गायत्री महायज्ञ का भव्य ऐतिहासिक आयोजन किया।

१२. आर्यसमाज कटनी, म.प्र. का ४९ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक २२, २३ एवं २४ मार्च २०१३ को होशंगाबाद गुरुकुल से पधारे स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में एवं दिल्ली से पधारे भजनोपदेशक श्री श्यामवीर जी राघव एवं जबलपुर के विद्वान् आचार्य श्री धीरेन्द्र जी पाण्डेय के प्रवचनों से सौल्लास सम्पन्न हुआ।

१३. आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा, औरैया-नवीन छात्रों का प्रवेश १५ मई से प्रारम्भ हो चुका है। कक्षा पाँच उत्तीण विद्यार्थियों का परीक्षोपरान्त प्रवेश किया जाएगा, विद्यालय उ.प्र. संस्कृत माध्यमिक शिक्षा परिषद् लखनऊ से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में संस्कृत, व्याकरण, वेद, दर्शन, पौरोहित्य, कर्मकाण्ड आदि विषयों के अलावा आधुनिक विषयों एवं कम्प्यूटर की भी व्यवस्था है। इच्छुक अभिभावक शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें। सम्पर्क : आचाय राजदेव शास्त्री, चलभाष-९४११२३९७४४

१४. आर्यसमाज रामपुरा कोटा द्वारा संचालित **मातृ सेवा सदन उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय, कोटा** में आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम एवं उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री शिवनारायण जी उपाध्याय, हाड़ौती किसान मंच के महामंत्री श्री दशरथ कुमार एवं आर्य परिवार संस्था के मंत्री श्री इन्द्र कुमार सक्सेना उपस्थित थे। समारोह का शुभारम्भ देवयज्ञ से हुआ तत्पश्चात् आर्यसमाज के मंत्री एवं विद्यालय के व्यवस्थापक श्री डी.पी. मिश्रा ने बालक-बालिकाओं को सम्बोधित किया।

१५. आर्यसमाज टनकपुर चम्पावत, उत्तराखण्ड में दिनांक १३ व १४ अप्रैल वैसाखी पर्व/श्री अम्बेडकर जयन्ती पर प्रातः यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ आर्यसमाज गो-सेवा सदन की स्थापना की गई।

बहुत संख्या में नगर के गणमान्य लोगों व महिलाओं ने इस गो-सेवा सदन के यज्ञ में भाग लिया व आर्यसमाज के कार्यक्रम की सराहना की। प्रसाद का वितरण किया गया।

१६. वैदिक गुरुकुल भवानीपुर, कच्छ, गुजरात-सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल में बच्चों से लेकर वृद्धों तक के सभी लोगों में खेल-खेल के माध्यम से वैदिक ज्ञान-विज्ञान का प्रसार करने के लिए ''बाल प्रतिभा विकास शिविर'' का आयोजन दिनांक २१.०४.२०१३ को किया गया, जिसमें ३५० बालक-बालिकाओं सहित लगभग ८५० धर्म-प्रेमी सज्जनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर मनोरंजन पूर्ण खेलकूद, भाषण, कविता, भजन, नाटक आदि के माध्यम से भरपूर आनन्द उठाया तथा वैदिक सिद्धान्तों-विचारों का सरल-सरस ढंग से ज्ञान भी प्राप्त किया।

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित इस शिविर में स्वामी जी ने बालक-बालिकाओं को सरल ढंग से ईश्वर का ध्यान करने व दैनिक अग्निहोत्र करने का प्रशिक्षण भी दिया।

१७. आर्यसमाज का १३१वाँ स्थापना दिवस मनाया गया-महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार के उपकार के लिए सन् १८७५ में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना मुम्बई में की जिसका १३१ वाँ स्थापना दिवस **आर्यसमाज टंकारा** में उत्साहपूर्ण मनाया गया। विशेष यज्ञ में तीन यजमान दम्पत्ती विराजमान हुए। पुरोहित पं. सुवास शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक (रोजड़) आमन्त्रित थे।

१८. पांचवाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन-आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-२, नई दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आगामी १४ जुलाई २०१३ रविवार को प्रातः १० बजे आयोजित किया जा रहा है।

१९. राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास, भारत-नयी दिल्ली। हिन्दी को भारत की सर्वमान्य राष्ट्रभाषा का गौरवशाली सम्मान दिलाने के लक्ष्य के अन्तर्गत 'राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास भारत' एवं यू.एस.एम.पत्रिका' के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् तथा सुलभ इन्टरनेशनल सोशल सर्विस आर्गेनाइजेशन के विशेष सहयोग से एक दिवसीय '१६वें अखिल भारतीय राजभाषा विकास एवं सम्मान समारोह'

का आयोजन किया गया। 'राजभाषा के रूप में हिन्दी : कार्यान्वयन की वस्तुस्थिति' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि के अतिरिक्त डॉ. रामशरण गौड़, ज्ञानेन्द्र पाण्डेय आदि उपस्थित थे।

२०. आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, राजस्थान राज्य के **अलवर** जिले में साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है। यह गुरुकुल दिल्ली से १०० किलोमीटर एवं जयपुर से १५० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अत: आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क-आचार्या प्रेमलता,

दूरभाष-०१४९५-२७०५०३, चलभाष-०९४१६७४७३०८

२१. आर्य कन्या विद्यालय, समिति, अलवर-श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले के समस्त आर्यसमाज एवं जन सहयोग से पर्यावरण शुद्धि एवं विश्व शान्ति हेतु ५१ कुण्डीय महायज्ञ आज २१ अप्रैल २०१३, रविवार को वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित किया गया।

यज्ञ स्थल पर आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने यज्ञ के ब्रह्मा पंडित हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, नई दिल्ली एवं श्री अमरमुनि जी, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का तिलक लगाकर एवं माल्यार्पण कर स्वागत किया।

२२. परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा नागौर जिले में ग्रामीण वेद प्रचार रखा गया। कार्यक्रम ०६ से २५ अप्रैल २०१३ तक विभिन्न गाँवों में रहा। लोगों ने अच्छी रुचि ली काफी संख्या में महिला, पुरुष एकत्रित होते थे। इस अवसर पर भूपेन्द्र सिंह भजनोपदेशक, लेखराज शर्मा जुरहरा के सुमधुर भजन एवं प्रवचन होते थे। इस कार्यक्रम का संचालन चौ. किसनाराम आर्य बिल्लू निवासी ने की। प्रात: हवन का कार्यक्रम तथा रात्रि को भजन, उपदेश रखे गये। २४ अप्रैल को कुचामन सिटी में रात्रि के कार्यक्रम में आचार्य सोमदेव जी पधारे। आचार्य जी का प्रवचन लोगों को बहुत पसन्द आया, लोगों ने आचार्य जी की बड़ी प्रशंसा की।

२३. आर्यसमाज खलासी लाईन, सरदार पटेल मार्ग, सहारनपुर में रामनवमी पर्व का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ में दिनेश शर्मा सपत्नि मुख्य यजमान रहे। डॉ. पूर्णचद्र शास्त्री, संजय गुप्ता, श्री योगराज शर्मा भी यजमान रहे। यज्ञ आर्यसमाज खलासी लाईन के वरिष्ठ पुरोहित श्री बारूराम शर्मा जी के पुरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

२४. आर्यसमाज मन्दिर, बजाजा बाजार, अलवर-अलवर के तीनों आर्यसमाजों ने संयुक्त रूप से नव संवत्सर पर्व एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह दिनांक ११ अप्रैल २०१३ को अति हर्षोल्लास के साथ आर्यसमाज बजाजा बाजार, अलवर में मनाया। समारोह की अध्यक्षता जगदीश गुप्ता-प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति ने की एवं विशिष्ठ अतिथि प्रदीप आर्य चैयरमैन यू.आई.टी थे।

२५. प्राच्यविद्या में सन्निहित है वैश्विक उन्नति का मूलमन्त्र: प्रणब मुखर्जी-कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्यविद्या संस्थान द्वारा **वैश्विकसमस्यानां प्राच्यविद्या समाधानम्** (वैश्विक चुनौतियों के सन्दर्भ में प्राच्यविद्या के परामर्श) विषय पर आयोजित दो दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य उद्घाटन विश्वविद्यालय के श्रीमद्भगवद् गीता सदन (ऑडिटोरियम) में ९ अप्रैल २०१३ को अत्यन्त उल्लासपूर्ण वातावरण में हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन **भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने किया**। संस्कृत जगत् और स्वतन्त्र भारत के इतिहास में यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और अविस्मरणीय अवसर था।

माननीय राष्ट्रपति जी ने भव्य उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति का मूलमन्त्र **वसुधैव कुटुम्बकम्** दुनिया की सभी समस्याओं को हल करने का एक वैकल्पिक मॉडल हो सकता है। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण द्वारा भगवद्गीता के माध्यम से दिया गया 'निष्काम कर्म' का सन्देश हजारों वर्ष बीत जाने पर भी अत्यन्त प्रासंगिक है। यजुर्वेद की सूक्ति **यत्र विश्वं भत्येकनीडम्** को उद्धृत करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि सम्पूर्ण विश्व में सुख-शान्ति का सन्देश भारत के प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन से ही फैल सकता है। उन्होंने बताया कि जापान, जर्मनी सहित अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय में भी प्राच्यविद्या व संस्कृत का शोध जारी है। उन्होंने कहा कि अब दुनिया के बुद्धिजीवी लोग मानने लगे हैं कि सभी तरह की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक समस्याओं को दुनिया से समाप्त करके संसार में खुशहाल जीवन, शान्ति व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भाईचारा भारत के प्राचीन ग्रन्थों से शिक्षा लेकर ही स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्यविद्या संस्थान को बधाई दी और कहा कि यह संस्थान वास्तव में देश के अन्य शिक्षण संस्थानों के लिए प्रेरणास्रोत है।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए **हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया** ने समाज में नारी जाति के अपमान को गम्भीर चिन्ता का विषय बताया। उन्होंने कहा कि मानव जाति को शान्ति एवं समृद्धि से सम्पन्न बनाने के लिए हमारे विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं विद्यालयों के पाठ्यक्रम में नैतिक व सामाजिक शिक्षा को अवश्य सम्मिलित करना चाहिए। इसके लिए हमें पाचीन धर्मग्रन्थों की ओर लौटना होगा।

इस मौके पर **हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ. भूपेन्द्र सिंह**

हुड्डा ने कहा कि आज पूरी दुनिया की निगाहें भारत की ओर हैं। विश्व आज सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक बदलाव से गुजर रहा है। उन्होंने कहा कि आज के विश्व के समक्ष असंख्य चुनौतियाँ खड़ी हैं और उनका समाधान आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों से सम्पन्न भारत की युवा पीढ़ी के पास ही है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के लिए उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति एवं प्राच्यविद्या संस्थान को बधाई दी।

उद्‌घाटन समारोह में कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति लेफ्टिनेण्ट जनरल (डॉ.) डी.डी.एस. सन्धू ने सभी सम्मानित अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि भविष्य में विश्वविद्यालय और प्राच्यविद्या संस्थान और अधिक उत्साह से इस प्रकार के आयोजन करते रहेंगे।

संगोष्ठी के शैक्षिक सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता परोपकारिणी सभा, अजमेर के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर ने कहा कि आज का सुविधा भोगी मानव ही विश्व में नाना प्रकार की समस्याओं को जन्म दे रहा है।

डॉ. धर्मवीर के वक्तव्य ने प्रबुद्ध प्रतिभागियों एवं अन्य जनों को चिन्तन की एक नूतन दृष्टि दी। मनुस्मृति के सुप्रसिद्ध व्याख्याता एवं समालोचक डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उपनिवेशवाद के रूप में जातिद्रोह इस युग की एक ज्वलन्त समस्या है।

वेद-विद्या के प्रखर विद्वान् डॉ. बलवीर आचार्य ने शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों के निवारण के लिए वैदिक प्रयोगों को स्पष्ट किया। वैदिक मनीषी डॉ. वेदपाल आचार्य ने वैदिक वाङ्‌मय, श्रौत ग्रन्थों एवं उपनिषदों के आधार पर चिन्तनपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के विविध सत्रों में प्रो. इन्द्रमोहन सिंह, प्रो. भीम सिंह, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ. रामचन्द्र, डॉ. रविप्रकाश आर्य, डॉ. श्रीकृष्ण शर्मा, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार, डॉ. कन्हैयालाल पराशर, डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. सरस्वती, डॉ. सुमन राजन्, डॉ. अरुणा शर्मा, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. गंगाधर पण्डा, डॉ. कामदेव झा, डॉ. राधेश्याम शर्मा, डॉ. ज्योति, डॉ. राजपाल कौशल, डॉ. जयसिंह, डॉ. सी.डी.एस. कौशल, डॉ. डी.डी. जैन, डॉ. एस.पी. शुक्ल, डॉ. ललित गौड़, डॉ. कृष्णा रंगा आदि परिचर्चा में उपस्थित रहे व अपने मूल्यवान् विचार व्यक्त किए।

उद्‌घाटन समारोह में राज्यसभा सांसद डॉ. रामप्रकाश, सांसद श्री नवीन जिंदल, सांसद चौ. ईश्वर सिंह, शिक्षा मन्त्री श्रीमती गीता भुक्कल, अनेक प्रशासनिक अधिकारी, आचार्यगण, प्राचार्यगण एवं सम्मानित अतिथिजनों सहित २००० लोग उपस्थित रहे।

इस प्रकार संस्कृत जगत् में एक विशेष ऊर्जा एवं उत्साह का संचार करने वाला यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

२६. गोवंश संवर्द्धन हेतु गो-सेवा आयोग को १ करोड़ देने हेतु मुख्यमन्त्री का आभार-जयपुर ११ मई राजस्थान के **मुख्यमन्त्री** द्वारा गोवंश सम्वर्द्धन हेतु गो-सेवा आयोग को एक करोड़ की राशि देने का **सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान व आर्य संस्थाओं** ने स्वागत किया है। समाज सेवी एवं परिषद प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' आर्यसमाज जयपुर दक्षिण के प्रधान डी.के. गुप्ता मानसरोवर के ईश्वर दयाल माथुर आर्यवीर दल के संभागीय मन्त्री अनिल आर्य सहित अनेक आर्यों ने सरकार द्वारा गोवंश संवर्द्धन महत्त्व स्वीकारना स्वागत योग्य बताया।

२७. आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर नगर का **४४ वाँ वार्षिकोत्सव** दिनांक १०, ११ व १२ मई २०१३ को सोल्लास निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। वार्षिकोत्सव के पावन अवसर पर एक शोभा यात्रा भी निकाली गई। जिसमें नगर व देहात की समस्त आर्यसमाजों ने अपना योगदान देकर सफल बनाया।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य पण्डित यज्ञदेव जी (अकबरपुर), आचार्य पण्डित रामप्रसाद जी (कानपुर देहात), पण्डित श्री विमल कुमार आर्य (हरदोई), सुश्री धर्म रक्षिता आर्या भजनोपदेशिका (बेगूसराय, बिहार), श्री राम सेवक आर्य (हमीरपुर), तबलावादक श्री श्रवण कुमार (पतारा, कानपुर) तथा अन्य अनेक विद्वान् एवं यति मण्डल ने भाग लिया।

चुनाव-समाचार

२८. आर्यसमाज आदर्शनगर, आलमबाग, लखनऊ वर्ष २०१३-१४ हेतु नई कार्यकारिणी का गठन हुआ। **प्रधान**-श्री अमरीश कुमार अग्रवाल, **मन्त्री**-श्री सतीश निम्मावन, **कोषाध्यक्ष**-श्री रुद्र स्वरूप।

२९. आर्यसमाज डोहरिया के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए-**संरक्षक एवं ऑडीटर**-कन्हैयालाल साहू, **प्रधान**-लादुराम सैन, **उपप्रधान**-जयकिशन कुमावत, **मन्त्री**-धन्नालाल साहू, **कोषाध्यक्ष**-रामकुमार खारोल।

३०. आर्यसमाज शास्त्री चौक, बालोतरा के कार्यकारिणी हेतु चुनाव हुए जिसमें **प्रधान**-बृजमनोहर पिथाणी, **मन्त्री**-रामस्वरूप आर्य, **कोषाध्यक्ष**-हनुमान पालीवाल को चुना गया।

३१. आर्यसमाज गोयला कलां, झज्जर के सदस्यों का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। **संरक्षक**-विजय आर्य, **प्रधान**-संदीप आर्य, **मन्त्री**-विनोद आर्य, **कोषाध्यक्ष**-संजय आर्य।

३२. जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, अलवर की कार्यकारिणी घोषित की गई। कार्यकारिणी में **जिला प्रधान**-जगदीश प्रसाद आर्य, जखराना, **जिला मन्त्री**-हरिपाल सिंह शास्त्री, **कोषाध्यक्ष**-धर्मसिंह आर्य, राजगढ़, **वेदप्रचार अधिष्ठाता**-विनोदीलाल दीक्षित को चुना गया।

३३. आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. के

चुनाव वर्ष २०१३-१४ के लिए **प्रधान**-आनन्दपाल सिंह आर्य, **मन्त्री**- आर.पी. शर्मा, **कोषाध्यक्ष**-गुलबीर सिंह को चुना गया।

शोक-समाचार

३४. भानु प्रकाश शास्त्री भजनोपदेशक बरेली, उ.प्र. को **भ्रातृशोक**-मेरा भाई **दुष्यन्त कुमार आर्य (डोरी लाल)** का १२.०३.२०१३ को रात्रि में हृदय गति रुक जाने से देहान्त हो गया। वे पहले पूर्ण स्वस्थ थे। उनकी आयु ३० वर्ष की थी, अपने पीछे ४ छोटे-छोटे बच्चे छोड़ गये हैं।

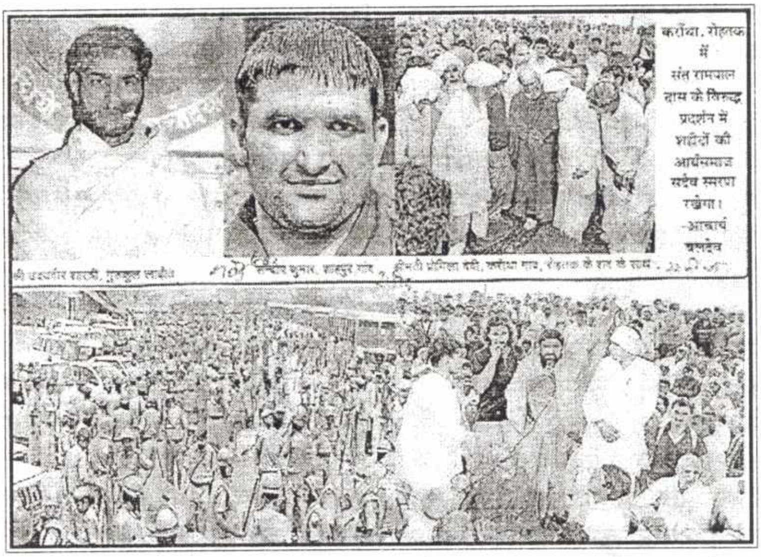

कबीरपंथी रामपाल दास के सतलोक आश्रम पुनः खुलने पर आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन

करौंथा रोहतक २००६ में-कबीपंथी आश्रम के एक भक्त द्वारा रामपाल दास की पोल खोलने वाली पुस्तक "शैतान बना भगवान" लिखी गई। जिसके विरोध में इस तथाकथित सन्त ने उस पूर्व-भक्त पर तथा उसे आश्रय देने वाले आश्रम पर धावा बोलकर आश्रम प्रमुख सहित कई लोगों का घायल किया गया। इसके जवाब में डीघल में २७ खाप के प्रधान श्री जयसिंह की अध्यक्षता में पंचायत कर, करौंथा आश्रम की संदिग्धता और असामाजिक गतिविधियों की सूचना सी.एम. को दी गई।

करौंथा आश्रम की संदिग्ध गतिविधियों को रोकने के लिए ग्रामवासियों ने डीघल में जाम लगाया व धरना शुरु किया। जिसमें वहाँ के आर्यसमाजी भी शामिल थे। धरना देने पर करौंथा आश्रम के अन्दर से गाँववासियों व आर्यसमाजियों पर गोलियाँ चलाई गई। जिससे एक युवक की मौत हो गई और ७०-८० घायल हुए। इसके बाद रामपाल दास सहित २४ लोग गिरफ्तार हुए। पुलिस प्रशासन ने आश्रम अपने कब्जे में लिया।

नवम्बर २००९ में हाईकोर्ट ने रामपाल दास ट्रस्ट को आश्रम सौंपा। जिसके विरोध में प्रदेश सरकार और आर्यप्रतिनिधि सभा ने हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। सुप्रीम कोर्ट ने याचिका खारिज की और आश्रम ट्रस्ट को अप्रैल २०१३ में सौंप दिया। इसके विरोध में सतलोक आश्रम पर पथराव और रोहतक झज्जर हाइवे जाम किया गया। प्रशासन द्वारा ३० अप्रैल २०१३ तक दोबारा कब्जे में लेने के आश्वासन पर जाम खुला। सैकड़ों रामपाल समर्थकों का आश्रम में डेरा। १० मई को कोर्ट ने रामपाल समर्थक को बड़ी राहत देते हुए आश्रम की सुरक्षा के लिए अफसरों को निर्देश दिया। १२ मई को आर्यसमाज के लोगों ने प्रात: हवन के बाद आन्दोलन शुरु किया, पुलिस ने खदेड़ने का प्रयास किया। इससे मामला भड़का। आन्दोलन के नेता आचार्य बलदेव जी व लगभग एक दर्जन सहयोगियों पर पुलिस ने लाठी-चार्ज किया, जिससे पुलिस के साथ हाथापाई हुई। पुलिस ने भीड़ नियन्त्रण के लिए फायरिंग शुरु की जिससे शाहपुर (पानीपत) गाँव के आर्ययुवक सन्दीप गुरुकुल लाढौत के आचार्य उदयवीर शास्त्री की मौत हो गई। आन्दोलन हिंसक हो गया। इस संघर्ष में एक महिला की भी मृत्यु हुई और १०० से अधिक लोग घायल हुए।

प्रशासन ने आश्रम में ताला लगाया आन्दोलन स्थगित किया गया। मुख्यमन्त्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने मामले की मजिस्ट्रेट जाँच के आदेश दिए।

परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में आर्यवीर दल, अजमेर द्वारा आयोजित राज्य-स्तरीय आसन प्रतियोगिता

दिनांक : २०, २१ अप्रैल, २०१३ (ऋषि उद्यान, अजमेर)

श्री महेन्द्र सिंह रलावता का सम्मान करते हुए श्री यतीन्द्र शास्त्री

श्री धर्मेन्द्र गहलोत का सम्मान करते हुए श्री ओममुनि

शहीद उधम सिंह जी के भान्जे खुशीनन्द सिंह का ऋषि उद्यान में आगमन (दिनांक १९.०५.२०१३)

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

(राजस्थान) - ३०५००१

1026– श्री व्यवस्थापक
साप्ताहिक आर्यसंदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि
सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली

आवरण : Mittal 9829797513